जमात

की

राहनुमाई

जमाअत

की

राहनुमाई

बख़्तुल्लाह ख़ान

jamāt kī rāhnumāī

Leadership in the Jamaat

by Bakhtullah Khan
(Urdu—Hindi script)

© 2017 Chashma Media

published and printed by
Good Word, New Delhi

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

लियाक़त कुछ परेशान है। उसे जमात में ख़िदमत करते हुए पाँच माह हो गए हैं। शुरू में काम बहुत अच्छा चलता था। लोग उसके पैग़ामात की क़दर करते थे। उसे घरों में आने की दावत मिलती रही। लगता था कि लोग उसकी ख़िदमत से ख़ुश हैं। और क्यों न होते, उसने बड़ी मेहनत के साथ तीन साल की ट्रेनिंग हासिल की थी। उसके नज़दीक ख़ादिम होना न सिर्फ़ एक पेशा था बल्कि वह समझता था कि अल्लाह ने मुझे इस ख़िदमत के लिए बुलाया है। वह यक़ीन रखता था कि ख़ुदा मुझे मुअस्सर तौर पर इस्तेमाल करना चाहता है।

लियाक़त अच्छे दिल का मालिक था। वह दूसरों पर न रोब डालने की कोशिश करता और न ही पार्टीबाज़ी का शिकार हुआ था। तो भी जमात के हालात अच्छे नहीं थे। जब उसे यह बात मालूम हुई तो वह पैग़ामात की तैयारी और लोगों को विज़िट करने में मज़ीद वक़्त सर्फ़ करने लगा। लेकिन अफ़सोस कि जितनी ज़्यादा वह मेहनत करता था उतने ही हालात बिगड़ते गए। घरों में लोग उसके पीछे फुसफुसाते, बुज़ुर्गों की मीटिंगों में वह ग़ुस्से के साथ एक दूसरे को घूरते। जब वह सुलह की कोशिश करता तो झगड़नेवालों का ग़ज़ब उस पर आन पड़ता। उसे समझ न आई। ट्रेनिंग ने उसे इसके लिए तैयार नहीं किया था।

अज़ीज़ क़ारी, हर वह आदमी और औरत जिसने जमात में कोई ज़िम्मेदारी उठाई है जल्दी से महसूस करने लगता है कि पाक नविश्तों का वसी इल्म रखना और दिलकश पैग़ामात देना जमात की क़ियादत के लिए काफ़ी नहीं है। अगरचे इस क़िस्म की ख़िदमत हर जमात के लिए अव्वल दर्जा रखती है, लेकिन इन लियाक़तों के साथ साथ जमात की राहनुमाई करने की अहलियत भी बहुत ज़रूरी है। जब जमात की राहनुमाई सेहतमंद उसूलों के तहत नहीं चलती तो दूसरी सारी ख़िदमात मुतअस्सिर होती हैं, आपस में रिफ़ाक़त कमज़ोर हो जाती है और मेंबरान बिखर जाते हैं। ग़रज़ जमात की सहीह राहनुमाई निहायत ज़रूरी है।

क़ियादत के मुताल्लिक़ बेशुमार मनफ़ी मिसालें दी जा सकती हैं, चाहे हम सियासत के मैदान पर ग़ौर करें, चाहे मज़हबी इदारों या जमातों की तरफ़ रुजू करें। इस सिलसिले में हर एक अपनी राम कहानी सुना सकता है, हर एक किसी राहनुमा की ग़लत क़ियादत के बारे में बता सकेगा।

क़ियादत करना रिश्वत खाने के बराबर बन गया है और बहुत बार राहनुमा का एक ही मक़सद होता है कि अपनी जेब भरे और अपना असरो-रसूख़ बढ़ाए। लिहाज़ा हम आम तौर पर ऐसे लोगों को शक की निगाह से देखते हैं।

क्या इसका मतलब यह है कि हम राहनुमाई के मज़मून से कतराएँ या राहनुमाओं से दूर रहें? बेशक क़ारी का यह ख़याल नहीं होगा वरना वह यह किताब न पढ़ते। बल्कि हम सब मानते हैं कि किसी की ग़लत राहनुमाई उस राहनुमाई को मनसूख़ नहीं करती जो सेहतमंद उसूलों के तहत की जाती है। और हम सब यह ख़्वाहिश रखते हैं कि जमात की सहीह राहनुमाई की जाए। ख़ैर, दुनियावी क़ियादत की बात तो छोड़ दें, इसे हम नहीं बदल सकते। लेकिन ईमानदारों की जमात की राहनुमाई फ़रक़ है। इसे तरक़्क़ी दी जा सकती है। और हम सब यह बात तसलीम करते हैं कि जब जमात की राहनुमाई अल्लाह के मनसूबे के मुताबिक़ चले तो यह पूरी जमात की नशो-नुमा का बाइस बनती है। जब सहीह राहनुमाई होती है तो ख़िदमत के सारे शोबे तरक़्क़ी करने लगते हैं।

यों हम कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी में जमात का शायद सबसे बड़ा चैलेंज यह है कि इसके राहनुमा जमात का बंदोबस्त सेहतमंद उसूलों के मुताबिक़ चलाएँ।

जमात की राहनुमाई का क्या मतलब है? हमें जमात को किस तरह चलाना चाहिए? यही इस किताब का मज़मून है।

कलामे-पाक राहनुमाई के सिलसिले में कम से कम सात अहम नमूने पेश करता है। इनकी तफ़सील अगले सफ़हात में दर्ज है।

1

किसान

खेतीबाड़ी : लानत और बरकत का बाइस

सबसे पहला पेशा जिसका ज़िक्र कलाम में हुआ है किसान का पेशा है। सबसे पहला किसान आदम था। जब उसे हव्वा समेत बाग़े-अदन से ख़ारिज कर दिया गया तो ख़ुदा ने फ़रमाया,

> तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे ख़ुराक हासिल करने के लिए तुझे उम्र भर मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़ेगी। तेरे लिए वह ख़ारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी ख़ुराक भी हासिल करेगा। पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू ख़ाक है और दुबारा ख़ाक में मिल जाएगा। (पैदाइश 3:17-19)

बाग़े-अदन में आदम और हव्वा बग़ैर मेहनत-मशक़्क़त के ज़मीन के हर फल से खा सकते थे। लेकिन गुनाह के नतीजे में आदम का काम मुश्किल हो गया। उस वक़्त से ज़मीन इनसान को ख़ुद बख़ुद ख़ुराक मुहैया नहीं करती बल्कि इनसान को बहुत कुछ सोचना और करना पड़ता है ताकि उसे काफ़ी मिक़दार में ज़मीन की पैदावार हासिल हो जाए। ज़मीन को तैयार करना पड़ता है, फ़सलें बोने के बाद उन्हें फ़ितरी दुश्मनों यानी

ख़राब मौसम, जानवरों, कीड़ों और बीमारियों से महफ़ूज़ रखना पड़ता है वग़ैरा। लेकिन दूसरी तरफ़ यह अल्लाह की मरज़ी है कि जो मेहनत करे उसे ख़ुदा से बरकत मिलती है। जो मेहनत-मशक़्क़त से इनकार करता है उसे अल्लाह की बरकत नहीं मिल सकती। ख़ुदा के इस फ़रमान में यह उसूल भी पाया जाता है कि जितनी ज़्यादा हम मेहनत करें उतनी ही हमें अल्लाह की बरकत हासिल होती है और हम तरक़्क़ी पाते हैं।

हमारी मज़बूती की इलाही बुनियाद

पौलुस रसूल जमात की ख़िदमत बयान करने के लिए खेतीबाड़ी का नमूना पेश करता है,

> अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से आप ईमान लाए। और हम में से हर एक ने वही ख़िदमत अंजाम दी जो ख़ुदावंद ने उसके सपुर्द की। मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। लिहाज़ा पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि ख़ुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने-फूलने देता है। पौदा लगाने और पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता हर एक को उसकी मेहनत के मुताबिक़ मज़दूरी मिलेगी। क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप अल्लाह का खेत और उसकी इमारत हैं। (1 कुरिंथियों 3:5-9)

कुरिंथुस की जमात में पार्टीबाज़ी ने सर उठा लिया था। कई मेंबरान कह रहे थे कि हम अपुल्लोस के लोग हैं, और दूसरे यह कि हम पौलुस रसूल के हैं। इस पार्टीबाज़ी में ख़ुद अपुल्लोस या पौलुस का कोई हाथ नहीं था। बाज़ एक मेंबरान ख़ुद ही अपनी पार्टीबाज़ी के लिए इन दोनों को इस्तेमाल कर रहे थे।

शायद अगर हमारी जमातों में हमारे बारे में ऐसी बातें कही जातीं तो हम ख़ुश होकर इनकी हौसलाअफ़ज़ाई करते या कम से कम ऐसी बातें न रोकते। आख़िर कौन ख़ुश न होता अगर कोई यह कहता कि मैं उसका शागिर्द हूँ या वह मेरा लीडर है! इससे हमारी इज़्ज़त बढ़ती है और ज़ाहिरन किसी का नुक़सान नहीं होता। इस क़िस्म की बातें शायद इब्तिदा में नुक़सानदेह न लगतीं, लेकिन अगर इनसे मना न किया जाए तो आहिस्ता आहिस्ता हम चौधरी बनने लगते हैं। अंजाम यह होता है कि हम रफ़्ता रफ़्ता उसी पार्टीबाज़ी में शामिल हो जाते हैं जिसे हम ख़ुद पसंद नहीं करते।

पौलुस का जवाब ज़बरदस्त है। वह फ़ौरन इस नुक़सानदेह पौदे को जड़ से निकाल देता है। वह फ़रमाता है, "मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा" यानी हम दोनों ने टीम की सूरत में काम किया है। अपुल्लोस का काम फ़रक़ और मेरा काम फ़रक़ था। उसकी और मेरी नेमतें फ़रक़ हैं, लेकिन हमारा मक़सद एक ही था कि जमात की नशो-नुमा हो जाए। और यह भी पेशे-नज़र रखना चाहिए कि अगरचे उन दोनों की ख़िदमत अच्छी और मुअस्सर थी, तो भी उनका तमाम काम अल्लाह की बरकत पर मुनहसिर था। पौलुस फ़रमाता है, "लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया।"

यहाँ पौलुस रसूल का किरदार निहायत मज़बूत नज़र आता है। वह दूसरों की कामयाबियों से दुख या हसद महसूस नहीं करता बल्कि पूरी आज़ादी के साथ कह सकता है कि हम तमाम मददगारों को एक दूसरे की ज़रूरत है। हम एक टीम हैं और हमारा एक ही मक़सद है, कि ईमानदार तरक़्क़ी करके फल लाएँ। शायद कोई मझसे बेहतर पैग़ाम सुना सके। ताहम मैं ख़ुश हूँगा, क्योंकि मेरी क़दर इस पर मुनहसिर नहीं कि मैं हर शोबे में दूसरों से आगे हूँ। बल्कि मेरी क़दर ख़ुदा के उस नजातबख़्श काम पर मबनी है जो उसने मेरे और दूसरे की ख़ातिर किया है। ख़िदमत के लिहाज़ से हमारे शोबे और नेमतें मुख़्तलिफ़ हैं, लेकिन हमारा मक़सद एक ही है कि जमात की तरक़्क़ी हो। आख़िर सिर्फ़ एक ही हस्ती है जो पौदों को बढ़ा सकती है और वह है अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़।

इस इनक़लाबी तसव्वुर ने इब्तिदाई जमात को वह ताक़त दी जिसने उसे दुनिया के कोने कोने तक पहुँचने में बहुत मदद की। जब हम इसी तरह अपनी ख़िदमत सरंजाम देंगे तो हम भी पूरी आज़ादी के साथ ख़िदमत कर सकेंगे। हम दूसरे मददगारों को ख़तरे का बाइस नहीं समझेंगे, न उनके बारे में हसद महसूस करेंगे। इसलिए कि हमारी मज़बूती और इतमीनान हमारी अपनी कामयाबियों पर मुनहसिर नहीं बल्कि अल्लाह के पहले से हमारे लिए किए गए काम पर।

किसान का क्या काम है जो जमात की राहनुमाई से मुताबिक़त रखता है?

ज़िम्मेदारियाँ दूसरों को सौंपना

अगर किसान के पास सिर्फ़ थोड़ी-सी ज़मीन है तो वह सब कुछ ख़ुद सँभाल सकता है। लेकिन जितनी उसकी ज़मीन बढ़ेगी उतनी ही वह कोशिश करेगा कि मुख़्तलिफ़

ज़िम्मेदारियाँ दूसरों को सौंपे। जिस ज़िम्मेदार शख़्स ने कभी किसी को कोई ज़िम्मेदारी दी है वह जानता है कि अकसर औक़ात यह काम आसान नहीं। लेकिन बहुत बार किसान को यह करना पड़ता है। तब वह अपनी ज़रूरियात के मुताबिक़ लोगों को चुनता, उनको तरबियत देता और उनको कंट्रोल करता है। मसलन जब गंदुम की कटाई का वक़्त आया तो वह मज़दूरों को ढूँडने में देर नहीं करता, वरना बड़ा इमकान है कि फ़सल ज़ाया हो जाए।

लेकिन हम यहाँ सिर्फ़ मज़दूरों की बात नहीं कर रहे। बड़ा ज़मीनदार न सिर्फ़ मज़दूर लगाता है बल्कि ज़िम्मेदार लोग भी, जो मज़दूरों को सँभाल सकते हैं। चूँकि ज़मीनदार एक ही वक़्त हर जगह मौजूद नहीं हो सकता, इसलिए लाज़िम है कि वह ऐसे लोग चुने जिन पर उसका पूरा एतमाद हो और जो उसकी ग़ैरमौजूदगी में भी खेतीबाड़ी का सारा काम सँभाल सकें, जो मज़दूरों को सहीह वक़्त और सहीह जगह पर लगा सकें, जो ज़मीनदार की पूरी मनसूबाबंदी को जानते हों और इसके मुताबिक़ काम चला सकें। ग़रज़ ऐसे लोग जो ज़िम्मेदार और ख़ुदमुख़्तार होते हुए ज़मीनदार की मरज़ी पूरी करें।

अकसर ऐसे लोगों को पहले अपने साथ रखने की ज़रूरत होती है ताकि उन्हें जाँचा जा सके, उन्हें ट्रेनिंग दी जा सके और उन्हें छोटी छोटी ज़िम्मेदारियाँ दी जाएँ ताकि पता चले कि वह कितने क़ाबिल हैं। अगर वह इन ज़िम्मेदारियों को सँभालने में कामयाब हों तो फिर रफ़्ता रफ़्ता उनकी ज़िम्मेदारियाँ बढ़ा दी जाती हैं। कामयाब किसान की पूरी कोशिश यह होगी कि ऐसा शख़्स अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूछे बग़ैर उठाए और सिर्फ़ उस वक़्त मशवरा ले जब बड़े बड़े फ़ैसले करने हों।

हमारी जमातों की राहनुमाई किसान के इस नमूने से कितनी दूर हो गई है! कम ख़ादिम इस उसूल की कमी को महसूस करते हैं बल्कि जितनी ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ उनके अपने कंधों पर डाली जाती हैं उतना ही वह ख़ुश होते हैं। इसके बावुजूद अल्लाह का शुक्र है कि उन ख़ादिमों की तादाद बढ़ती जा रही है जो तमाम ज़िम्मेदारियों को तक़सीम करना और दूसरों के साथ मिलकर काम करना अपनी ख़िदमत का एक अहम हिस्सा समझते हैं। और जब हम ऐसी जमातों पर ग़ौर करते हैं तो फ़ौरन पता चलता है कि यह दूसरों की निसबत आगे हैं।

मनसूबाबंदी

आजकल यह कहना ग़लत नहीं होगा कि कामयाब किसान एक तरह का सायंसदान होता है। उसे बहुत-सारी चीज़ों के बारे में इल्म रखने की ज़रूरत होती है। मसलन कौन-सी फ़सल किस मौसम में काश्त करनी है, कितना बीज डालना है, कौन-से पौदे किस ज़मीन में ख़ूब उगते हैं। मुख़्तलिफ़ ज़मीनों को मुख़्तलिफ़ खादों की ज़रूरत होती है। फिर ज़मीनों के हालात साल बसाल बदलते रहते हैं। मौसम हर साल फ़रक़ होता है। फ़सलों की ज़रूरियात हर साल मुख़्तलिफ़ होती हैं। कीड़ों-मकोड़ों और बीमारियों के ख़तरात बदलते जाते हैं। ख़ुद ज़मीन की हालत बदलती जाती है। एक साल उसे एक क़िस्म की खाद की ज़रूरत होती है तो दूसरे साल किसी और की। अगर हमेशा सिर्फ़ एक ही फ़सल उगाई जाए तो ज़मीन जल्दी से बंजर हो जाती है। इसलिए जो किसान अपने खेतों से ज़्यादा फ़ायदा उठाना चाहता है वह लगातार अपनी फ़सलों और ज़मीनों पर नज़र रखता, दूसरों से मशवरे लेता और अपना इल्म बढ़ाने के लिए रेडियो, टीवी और रिसालों से मदद लेता है।

कई पौदों, फ़सलों या फलदार दरख़्तों पर दवाई छिड़कने की ज़रूरत भी होती है। लेकिन दानिशमंद किसान बेसोचे-समझे दवाई नहीं छिड़कता, क्योंकि उसे इल्म होता है कि दवाई महँगी है, बल्कि इसका ग़लत इस्तेमाल नुक़सानदेह भी है। लिहाज़ा वह बड़ी सोच-बिचार के बाद ही दवाई छिड़केगा।

उसे हिसाब-किताब करने की ज़रूरत भी होती है। बीज बोने से पहले वह अंदाज़ा लगाता है कि क्या इस फ़सल से मनाफ़े होगा कि नहीं। कई बार वह हिसाब-किताब के बाद अंदाज़ा लगाता है कि इस साल इस फ़सल से मेरा ख़र्चा पूरा नहीं होगा। यों वह कोई और बीज बोएगा। बेशक किसान का मक़सद यह होता है कि वह पैदावार बढ़ाए, लेकिन साथ ही वह जानता है कि मेरे पास पैसे महदूद हैं, इसलिए लाज़िम है कि उन्हें अक़्ल के साथ ख़र्च करूँ।

जमात की ख़िदमत में भी मनसूबाबंदी की अशद्द ज़रूरत होती है। जमात का दानिशमंद राहनुमा मनसूबाबंदी के लिए वक़्त निकालेगा, चाहे उसके पास वक़्त हो या न हो। मनसूबाबंदी बहुत ज़रूरी है, और इस में सुस्ती पूरी जमात के लिए ख़तरे का बाइस बनती है। लिहाज़ा राहनुमा रोज़ाना ख़ुदा के सामने घुटने टेककर उससे मिन्नत करेगा कि क़ियादत में मेरी मदद कर। मुझ पर आगे का रास्ता ज़ाहिर कर।

मनसूबाबंदी का यह पहलू पौलुस रसूल की ख़िदमत में ख़ूब नज़र आता है। वह रूहुल-क़ुद्स की हिदायत के तहत बड़ी समझ के साथ अपनी ख़िदमत सरंजाम देता था। मसलन वह हर शहर में पहले यहूदियों के इबादतख़ानों में जाया करता और इसके बाद ही ग़ैरयहूदियों को ख़ुशख़बरी सुनाता था। और एक शहर में पहुँचते ही वह अगले शहर तक ख़ुशख़बरी पहुँचाने के मनसूबे बनाने लगता।

जो जमात में खेतीबाड़ी का काम करता है, उसे अपनी और पूरी जमात की ताक़त का अंदाज़ा लगाना पड़ता है। वह इस ताक़त को बेसोचे-समझे ज़ाया नहीं करेगा, बल्कि अंदाज़ा लगाएगा कि हम यह ताक़त किस तरह ज़्यादा मुअस्सर तरीक़े से अल्लाह का जलाल बढ़ाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। और यह एक तसलसुल है जो कभी भी ख़त्म नहीं होता। जिस तरह ज़मीनों, मौसमों और फ़सलों के हालात बदलते रहते हैं उसी तरह जमात के हालात भी बदलते रहते हैं। जो मनसूबाबंदी कल के हालात के लिए मौज़ूँ रही वह आज के लिए नुक़सानदेह हो सकती है।

ज़मीन की तैयारी

कई बार ज़मीन को पत्थरों, झाड़ियों या सीम से साफ़ करना पड़ता है, ख़ासकर अगर उसे पहली बार इस्तेमाल करना है। फिर उस में हल चलाना ज़रूरी है।

जमात में भी ज़मीन की तैयारी बहुत ज़रूरी है। किसी नई जगह पर अंधा-धुंद तबलीग़ी काम करना उतना मुअस्सर नहीं जितना कि वह काम जहाँ पहले ज़मीन तैयार कर ली गई हो।

तबलीग़ी काम का एक रुझान यह है कि तबलीग़ करनेवाले दौरा करके दूर-दराज़ इलाक़ों में तबलीग़ी पैग़ाम सुनाते हैं। अगरचे यह तरीक़ा ग़लत नहीं तो भी यह अकसर औक़ात जमातों की तामीर का बाइस नहीं बनता। क्यों? एक साल या कई माह के बाद चंद एक पैग़ाम सुनाने से क्या हो सकता है। लोगों पर असर उस वक़्त होता है जब हम उनके दरमियान रहते, मुतवातिर उन में ख़िदमत करते और उनके लिए अच्छा नमूना बनते हैं। शागिरदियत का यही मतलब है।

इन दिनों में तैयारी की एक मिसाल सामने आई है। दो ख़ादिमों में एक ऐसे इलाक़े के लिए बोझ पैदा हुआ जहाँ बहुत आबादी होने के बावुजूद जहालत का राज है। रोज़ा रखने और दुआ करने के बाद उन्हें महसूस हुआ कि ख़ुदा उन्हें उस इलाक़े में ख़ुशख़बरी

का पैग़ाम सुनाने के लिए बुला रहा है। उन्होंने क्या किया? उन्होंने कुछ देर के लिए पूरे इलाक़े का सर्वे किया। जगह बजगह जाकर उन्होंने लोगों से दोस्ती पैदा करके हर गाँव के बारे में मालूमात हासिल कीं। आख़िरकार उन्होंने हिसाब लगाकर महसूस किया कि एक जगह काम के आग़ाज़ के लिए ज़्यादा मौज़ूँ है। क्योंकि वह हमसे ज़्यादा दूर नहीं है, वहाँ आसानी से बस के ज़रीए पहुँचा जा सकता है और लोग भी हमारी ख़िदमत से मुतअस्सिर हो रहे हैं।

लोगों को मज़ीद विज़िट करने के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि फ़िलहाल हम बड़ों के लिए इबादत शुरू नहीं करेंगे बल्कि बच्चों के लिए। लाज़िम नहीं कि नया काम बच्चों ही से शुरू हो जाए, लेकिन इसका यह फ़ायदा हुआ कि रफ़्ता रफ़्ता बच्चों में से कुछ मददगार तैयार हुए जो ख़ुद ख़िदमत में हिस्सा लेने लगे। अब यह बच्चे बड़े होकर ख़ुद बड़ों की इबादत की राहनुमाई कर सकते हैं। यों आहिस्ता आहिस्ता कलाम का असर उस नई जगह पर होने लगा।

बीज बोना

ज़मीन की तैयारी बहुत ज़रूरी है, लेकिन अगर उस में बीज ही न बोया जाए तो सारी मेहनत बेफ़ायदा है। ईसा अल-मसीह ने मत्ती 13 में बीज बोने की अहमियत पर ज़ोर दिया। यह बीज अल्लाह का कलाम है। बीज बोनेवाले का पहला फ़र्ज़ यह है कि वह पूरी ज़मीन में बीज बोए। बीज उगाने का अमल अल्लाह का काम है। इसलिए हमारी बुनियादी फ़िकर यह होनी चाहिए कि कलाम लोगों के दिलों में ईमान पैदा करे और उसे बढ़ाए।

अल्लाह का कलाम ही लोगों को बदल सकता है। इससे वह बेदार हो जाते और ख़ुद फल लाने लगते हैं। फिर यह अमल नई जमात की तामीर का बाइस बन जाता है। नई जमात सिर्फ़ उस वक़्त ख़ुदमुख़तार बन सकती है जब उस में लोग कलाम से मुतअस्सिर होकर नए सिरे से पैदा होकर अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ चलने लगते हैं।

आबपाशी

हर किसान पानी की अहमियत को जानता है। जहाँ पानी नहीं होता वहाँ ज़िंदगी नामुमकिन है। पिछले सालों में कई इलाक़ों में पानी की क़िल्लत रही। चाहे कितने ही मनसूबे क्यों न बनाए जाएँ, अगर पानी न हो तो यह तमाम मनसूबे फ़ुज़ूल हैं। ख़ुदा अपनी मरज़ी के मुताबिक़ पानी देता है। बेशक हम उसे जमा करके खेत की तरफ़ ले जा सकते हैं, लेकिन हम उसे ख़ुद पैदा नहीं कर सकते। यों हमें महसूस होता है कि हर जमात की कामयाबी अल्लाह के फ़ज़ल पर मबनी होती है। इस में हमारा हिस्सा थोड़ा ही है, अगरचे अल्लाह बहुत ख़ुशी महसूस करता है जब हम काम में हिस्सा लेते हैं।

हम किस तरह ख़ुदा का पानी तैयारशुदा खेत तक पहुँचा सकते हैं? मुख़्तलिफ़ प्रोग्रामों मसलन बड़ों और बच्चों के लिए इबादतों और विज़िट करने से।

सूबा पंजाब इस नाते से हमें बहुत कुछ सिखा सकता है। अगर उस में आबपाशी के लिए नहरें और ट्यूबवेल न होते तो बहुत-सारे इलाक़ों में खेतीबाड़ी नामुमकिन होती। आबपाशी का बेहतर इंतज़ाम ही हमारी तेज़ी से बढ़ती हुई आबादी को ख़ुराक मुहैया कर सकता है।

इसी तरह हम भी कोशिश करें कि आबपाशी का ऐसा बंदोबस्त हो जाए जिससे हमारी जमातें फलती-फूलती रहें। बच्चों में ख़िदमत की जो मिसाल पेश की जा चुकी है एक ऐसी नहर बन गई है जिससे उस जगह की आबपाशी हो रही है।

सेहतमंद नशो-नुमा की फ़िकर

पौदों के फूट निकलने के बाद भी किसान को फ़सल पर लगातार ध्यान रखने की ज़रूरत है। जब कीड़े-मकोड़े पौदों पर टूट पड़ें तो उन्हें मुअस्सर दवाई से ख़त्म करना पड़ेगा। जड़ी-बूटियों को भी निकालना है।

इसी तरह जमात का किसान भी जमात के काम पर ध्यान रखता है। वह ऐसे ख़तरात के लिए हस्सास रहता है जिनसे मेंबरान को नुक़सान पहुँच सके। जब ग़लत ख़यालात उभरने लगते हैं तो वह उन्हें उखाड़ने की कोशिश करता है। कई बार नई जमात के अफ़राद ग़लत हरकात का शिकार हो जाते हैं। राहनुमा को इसके लिए ख़बरदार रहना

पड़ता है। अगर किसी से कोई संगीन और ज़ाहिरी गुनाह सरज़द हो जाए तो लाज़िम है कि राहनुमा उसे तंबीह की दवाई दे।

कुछ जमातों का नज़मो-ज़ब्त कमज़ोर है। लोगों को तंबीह नहीं की जाती। यह बहुत ज़रूरी है कि मेंबरान के गुनाहों को न दबाया जाए। अगर लोगों को उनके गुनाहों के बारे में आगाह न किया जाए तो उन्हें किस तरह माफ़ी मिल सकेगी? फिर उनका दूसरों और अल्लाह के साथ ताल्लुक़ किस तरह बहाल हो सकेगा? फिर वह किस तरह रूहानी तरक़्क़ी कर सकेंगे? दूसरी तरफ़ ऐसे लोग दूसरों के लिए ग़लत नमूना साबित होते हैं और ख़तरा है कि यह बीमारी पूरी जमात में फैल जाए। लिहाज़ा राहनुमा जुरअत करे और ऐसी हरकात को जड़ से निकाल दे ताकि यह बीमारी वबा की तरह न फैले।

फ़सल की कटाई

फिर फ़सल काटने का वक़्त आता है। फ़सल पकने के बाद ही इसे काटा जाता है। कौन फ़सल को पकने से पहले काटेगा? इसी तरह रूहानी किसान उस वक़्त के इंतज़ार में रहता है जब वह फ़सल काट सकेगा। सिर्फ़ वह राहनुमा जो हस्सास और बेदार है रूहानी फ़सल के पकने को पहचान लेता है। यानी एक वक़्त आता है जब वह देखता है कि लोग तौबा करने के लिए तैयार हैं या कि वह जमात क़ायम करने के लिए तैयार हैं या कि वह ख़ुद ज़िम्मेदारियाँ उठाने के लिए तैयार हैं या कि वह ख़ुद दूसरी जगहों पर ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए तैयार हैं। ऐसे मौक़ों पर बेदार ख़ादिम लोगों को अगले मरहले तक पहुँचने के लिए उभारेगा। इस मक़सद के लिए वह कोई इजतमा या सेमिनार करा सकता है। उसे घर घर जाकर लोगों को उभारने की भी ज़रूरत है।

फ़सल काटने से हम एक और पहलू भी निकाल सकते हैं जिसका ज़िक्र पौलुस रसूल करता है,

> कौन अंगूर का बाग़ लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा नहीं पाता?
> (1 कुरिंथियों 9:7)

मतलब है कि ख़ादिम की माली ज़रूरियात को पूरा करना जमात की ज़िम्मेदारी होती है। यहाँ वह फ़ुलटाइम ख़ादिम की बात कर रहा है जिसके पास इतना वक़्त नहीं कि वह ख़िदमत के अलावा किसी और काम से पैसे कमाए। अगरचे पौलुस रसूल ने कुरिंथियों से कुछ वसूल नहीं किया था तो भी वह हक़दार था कि उसकी ज़रूरियात पूरी की जातीं।

कभी कभी जमातें फ़ुलटाइम ख़ादिमों को बहुत कम पैसे देती हैं। अगर ख़ुदा के ख़ादिम तंगदस्ती से ज़िंदगी गुज़ारें तो क्या अजब कि उनका मह्यार घटता जा रहा है। क्या ऐसे लोग ख़ादिम हैं जो दूसरे शोबों में फ़ेल हो गए हैं? या ऐसे लोग ख़ादिम हैं जो अल्लाह की बादशाही की वुसअत के लिए हर क़िस्म की क़ुरबानी देने के लिए तैयार हैं? सुनने में आया है कि जब कोई किसी और काम में कामयाब नहीं हो सकता तो वह स्कूल टीचर बन जाता है। अगर वह इस में भी नाकाम रहे तो वह ख़ादिम बन जाता है। बेशक इस बात का इतलाक़ सब ख़ादिमों पर नहीं होता। ऐसे ख़ादिम भी हैं जो क़ाबिल भी हैं और जो जाँफ़िशानी से ख़िदमत भी सरंजाम देते हैं। तो भी इस में शक नहीं कि हमारे सबसे लायक़ नौजवान अकसर ख़िदमत के काम में दाख़िल नहीं होना चाहते।

फ़सल काटने का एक तीसरा पहलू भी है। किसान पूरी फ़सल नहीं खाएगा बल्कि जितना हो सके उसे बचाकर दूसरे कामों के लिए इस्तेमाल करेगा जिनसे उसकी दौलत बढ़ सके। एक हिस्सा वह अगले साल के बीज के तौर पर महफ़ूज़ रखेगा और एक हिस्सा अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए बेचेगा। लेकिन उसकी पूरी कोशिश यह होगी कि वह न सिर्फ़ अपनी ज़रूरियात पूरी करे बल्कि जितना हो सके पैसे बचाए रखे ताकि मज़ीद ज़मीन या खेतीबाड़ी की मशीनें ख़रीद सके।

कई ख़ादिमों ने यह फ़न सीख लिया है। उन्होंने अपने पैसे, अपना वक़्त और अपनी ताक़त सहीह जगह और सहीह लोगों पर लगाई। नतीजे में उनकी जमात फल-फूल रही है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इतने समझदार हैं कि वह अपनी जमात की ताक़त दूसरी जगहों पर नई जमात क़ायम करने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। अफ़सोस कि ऐसे बेशुमार ख़िदमतगुज़ार भी होते हैं जो अपनी ताक़त और अपना वक़्त एक ही जगह पर सर्फ़ करते हैं। यों न उनकी अपनी ज़रूरियात पूरी होती हैं और न वह जमात की ताक़त को दूसरे इलाक़े जीतने के लिए ही इस्तेमाल कर सकते हैं।

मुतजस्सिस और सीखनेवाली रूह

जो किसान कामयाब रहना चाहता है वह नई बातें सीखने से कभी नहीं कतराता। बेशक उसने बहुत-से तजरिबात हासिल किए हैं, ताहम वह नई बातें सीखने के लिए तैयार रहता है।

उसे यह इल्म रखने की ज़रूरत है कि फ़िलहाल कौन-सी पैदावार से ज़्यादा नफ़ा मिलेगा। खेतीबाड़ी के कौन-से तरीक़े ज़्यादा मुअस्सर हैं? कौन-सी मशीनें उसका बोझ हलका कर सकती हैं, कौन-सी खाद मुअस्सर है, कौन-सी दवाइयाँ ज़्यादा मुअस्सर और कम नुक़सानदेह होती हैं। बहुत साल पहले डीडीटी की दवाई बहुत इस्तेमाल की जाती थी लेकिन फिर पता चला कि यह दवाई इनसान के आसाबी निज़ाम को बहुत नुक़सान पहुँचा सकती है। एक जाननेवाली की उँगलियाँ इस दवाई से बेहिस हो गई हैं। आजकल यह दवाई एहतियात से इस्तेमाल होती है। होशियार किसान इस पर ध्यान रखता है कि कौन-सी दवाई उसकी अपनी ज़मीन और इनसान के लिए कम से कम नुक़सानदेह है।

थोड़ा अरसा पहले अख़बार में दवाइयों के बारे में एक मज़मून छपा, जिस में लिखा था कि कई किसान अपनी सब्ज़ी को मंडी भेजने से पहले दवाई लगाते हैं ताकि वह जल्दी से ख़राब न हो जाए। हो सकता है कि क़ारी यह बात पढ़ते हुए कोई ऐसी ही सब्ज़ी खा रहा हो। हो सकता है कि जो सब्ज़ी या फल ख़ूबसूरत और दिलकश लगे अंदर से ख़राब हो। और मुमकिन है कि जिस सब्ज़ी या फल पर कीड़ों या ओलों के निशान हों सेहत के लिए बेहतरीन हो।

जो किसान सीखने के लिए तैयार नहीं रहता वह ऐसी बातों से वाक़िफ़ नहीं होगा या उन्हें नज़रंदाज़ करेगा। लेकिन यह न सिर्फ़ दूसरों के लिए बल्कि ख़ुद उसके लिए भी नुक़सान का बाइस बन सकता है। कहा जाता है कि कोई किसान किसी फ़ैक्टरी का गंदा पानी अपने खेत के लिए इस्तेमाल करने लगा। पहले साल उसकी सब्ज़ी बहुत अच्छी थी। लेकिन अगले साल कुछ भी न उगा, क्योंकि ज़मीन बंजर हो चुकी थी। उस किसान को पहले पता करना चाहिए था कि इस पानी में क्या है।

इसी तरह कई बार जमात की हालत बैरूनी तौर पर बहुत ख़ूबसूरत लगती है जबकि ज़हर अंदर ही अंदर उसकी ज़िंदगी को ख़त्म कर रहा होता है।

2

ठेकेदार

किसान के साथ साथ पौलुस रसूल एक और तस्वीर भी इस्तेमाल करता है यानी ठेके ठेकेदार की,

> हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप अल्लाह का खेत और उसकी इमारत हैं। अल्लाह के उस फ़ज़ल के मुताबिक़ जो मुझे बख़्शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की तरह बुनियाद रखी। इसके बाद कोई और उस पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस तरह बना रहा है। क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी मज़ीद कोई बुनियाद नहीं रख सकता। जो भी इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख़्तलिफ़ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है, मसलन सोना, चाँदी, क़ीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या भूसा, लेकिन आख़िर में हर एक का काम ज़ाहिर हो जाएगा। क़ियामत के दिन कुछ पोशीदा नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी। वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम किया है। अगर उसका तामीरी काम न जला जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज्र मिलेगा। अगर उसका काम जल गया तो उसे नुक़सान पहुँचेगा। ख़ुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।

> क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह का घर हैं, और आप में अल्लाह का रूह सुकूनत करता है? अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि अल्लाह का घर मख़सूसो-मुक़द्दस है और यह घर आप ही हैं। (1 कुरिंथियों 3:9-17)

ठेकेदार यहाँ क्या काम करता है? वह न सिर्फ़ इमारत का नक़्शा बनाता है बल्कि पूरी बिलडिंग की ज़िम्मेदारी उसी की है। वह लागत का अंदाज़ा लगाकर ईंटें, सीमेंट, रेत, बजरी, सरिया और तमाम मटीरियल बाज़ार से मँगवाता है। वह मज़दूर लगाता है। तामीर का सारा काम ठेकेदार के हाथ में है, इसलिए अच्छा ठेकेदार मज़दूरों के काम की निगरानी करता है। वह चैक करता है कि क्या उन्होंने मसाले में रेत और सीमेंट सहीह मिक़दार में डाला है, क्या वह इमारत को ऐन नक़्शे के मुताबिक़ बना रहे हैं और क्या वह मिलकर और पूरे जोश से काम करते हुए मुक़र्ररा वक़्त तक इमारत को तकमील तक पहुँचा सकेंगे कि नहीं। ग़रज़ वह इसका ज़िम्मेदार है कि इमारत मालिके-मकान की ख़्वाहिश के मुताबिक़ हो और मह्यार के लिहाज़ से पायदार और क़ाबिले-एतबार हो।

अगर ठेकेदार मह्यारी काम न करे तो यह इमारत मालिके-मकान की ज़िंदगी के लिए नुक़सान का बाइस हो सकती है। फिर चाहे इस पर कितने ही पैसे क्यों न लगाएँ, बिलडिंग पर भरोसा नहीं किया जा सकता। बीसवीं सदी के आग़ाज़ में एक बहरी जहाज़ बनाया गया जिसकी पूरी दुनिया ने बहुत तारीफ़ की। यह टाइटैनिक के नाम से मशहूर हो गया। इस जहाज़ में हर क़िस्म की सहूलत थी। तो भी वह अपने पहले ही सफ़र के दौरान बर्फ़ के बड़े तोदे से टकराकर थोड़े लमहों के अंदर अंदर ग़रक़ हो गया। अगरचे इस तबाही में सबसे बड़ी ग़लती कप्तान की थी, लेकिन यह भी कहा जाता है कि इसका हिफ़ाज़ती इंतज़ाम बहुत नाक़िस था। अव्वल, जहाज़ को इस तरह बनाया जाना चाहिए था कि वह इतनी जल्दी से न डूब जाए। दुवुम, लाइफ़बोटों की क़िल्लत थी वरना तमाम मुसाफ़िर बच सकते थे। इस तरह कई इमारतें होती हैं जो तामीर के दौरान ही गिर जाती हैं। क्यों? इसलिए कि या तो नक़्शा नाक़िस होता है या नाक़िस मटीरियल इस्तेमाल किया जाता है।

इसका ज़िक्र हो चुका है कि पौलुस रसूल 1 कुरिंथियों 3 में ऐसे लोगों को तंबीह करता है जो पार्टीबाज़ी का शिकार हैं। यहाँ वह बिलडिंग की तामीर की मिसाल पेश करके फ़रमाता है कि मैंने नक़्शा तैयार करके बुनियाद डाली यानी ईसा अल-मसीह का नजातबख़्श कलाम सुनाया जिससे जमात क़ायम हुई। लेकिन अपुल्लोस ने इस बुनियाद

पर लोगों को मज़ीद तालीम दी जो उसकी तरक़्क़ी का बाइस बनी। ताहम सिर्फ़ वह चीज़ क़ायम रहेगी जो अल्लाह के कलाम के मुताबिक़ है।

अभी तक पौलुस रसूल ने किसी ख़ास इमारत का ज़िक्र नहीं किया, लेकिन अब वह जमात का बैतुल-मुक़द्दस के साथ मुवाज़ना करता है।

> क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह का घर हैं, और आप में अल्लाह का रूह सुकूनत करता है? अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि अल्लाह का घर मख़सूसो-मुक़द्दस है और यह घर आप ही हैं। कोई अपने आपको फ़रेब न दे। अगर आप में से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में दानिशमंद है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुक़ूफ़ बने ताकि वाक़ई दानिशमंद हो जाए।
> (1 कुरिंथियों 3:16-18)

इन आयात के पीछे क्या सोच है? यह कि जमात बाज़ार की आम-सी दुकान नहीं है जिस में हर क़िस्म के लोग आते-जाते हैं, बल्कि यह अल्लाह के लिए मख़सूस इमारत है। इस में रूहुल-क़ुद्स क़ियाम करता है, इसलिए यह मक़दिस है। लिहाज़ा इसकी तामीर भी आम मकानों की तामीर से फ़रक़ है। अगरचे आम मकान का ठेकेदार भी उसकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मेदार होता है, लेकिन अल्लाह के घर की तामीर के लिए ज़िम्मेदार लोगों को और भी ख़बरदार रहने की ज़रूरत है। इसलिए कि यह मकान मुक़द्दस है, इसके इबादतगुज़ार मुक़द्दस हैं और अगर उन्हें रूहानी तौर पर ख़सारा पहुँचे तो ठेकेदारों को भी ख़सारा पहुँचेगा।

तामीर का यह काम किस तरह अदा करना चाहिए? यह समझने के लिए आइए हम कुछ वक़्त के लिए इस पर ग़ौर करें कि तौरेत के ज़माने में अल्लाह के घर की तामीर किस तरह हुई थी।

मुलाक़ात का ख़ैमा : पूरी जमात का शाहकार

क्या आपने कभी बज़लियेल और उहलियाब के बारे में सुना है? बज़लियेल और उहलियाब पहले बैतुल-मुक़द्दस की तामीर के ठेकेदार थे। यह बैतुल-मुक़द्दस यरूशलम में नहीं था बल्कि रेगिस्तान में। और चूँकि इसराईली सफ़र कर रहे थे इसलिए यह बैतुल-मुक़द्दस एक तंबू था। उसे मुलाक़ात का ख़ैमा कहा गया, और वह उस वक़्त बन गया

जब इसराईली मिसर से निकलकर बयाबान में से मुल्के-फ़लस्तीन की तरफ़ बढ़ रहे थे।

> फिर रब ने मूसा से कहा, "मैंने यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे। मैंने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। वह नक़्शे बनाकर उनके मुताबिक़ सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। वह जवाहर को काटकर जड़ने की क़ाबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख़्तलिफ़ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत-सारे और कामों में भी महारत रखता है।
>
> साथ ही मैंने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर काम में उसकी मदद करे। इसके अलावा मैंने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बना सकें जो मैंने तुझे दी हैं। यानी मुलाक़ात का ख़ैमा, कफ़्फ़ारे के ढकने समेत अहद का संदूक़ और ख़ैमे का सारा दूसरा सामान, मेज़ और उसका सामान, ख़ालिस सोने का शमादान और उसका सामान, बख़ूर जलाने की क़ुरबानगाह, जानवरों को चढ़ाने की क़ुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, वह लिबास जो हारून और उसके बेटे मक़दिस में ख़िदमत करने के लिए पहनते हैं, मसह का तेल और मक़दिस के लिए ख़ुशबूदार बख़ूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैंने तुझे हुक्म दिया है।" (ख़ुरूज 31:1-11)

इस मुक़द्दस ख़ैमे की लासानी नौईयत थी। क्यों? इसलिए कि मुलाक़ात के ख़ैमे से इसराईलियों की क़ुद्दूस ख़ुदा के साथ मुलाक़ात का रास्ता क़ायम हुआ। इस से पहले मूसा का कोहे-सीना पर अल्लाह के साथ राबता क़ायम हुआ था। फिर मूसा इसराईलियों को इस पहाड़ के पास ले गया ताकि उनका भी उस क़ुद्दूस ख़ुदा के साथ राबता क़ायम हो जाए। इसराईलियों ने कोहे-सीना पर ख़ुदा की क़ुद्दूसियत का तजरिबा किया। उन्होंने देखा कि हम इस क़ुद्दूसियत के हुज़ूर नहीं आ सकते। अल्लाह की शोलाज़न पाकीज़गी एक भड़कती हुई आग है जिसके सामने कोई इनसान ज़िंदा नहीं रह सकता।

बाद में यसायाह नबी ख़ुदा की इसी क़ुद्दूसियत को देखकर पुकार उठा,

> मुझ पर अफ़सोस, मैं बरबाद हो गया हूँ! क्योंकि गो मेरे होंट नापाक हैं, और जिस क़ौम के दरमियान रहता हूँ उसके होंट भी नजिस हैं तो भी मैंने अपनी आँखों से बादशाह रब्बुल-अफ़वाज को देखा है। (यसायाह 6:5)

नबी हद से ज़्यादा घबरा गया जब उसकी मुलाक़ात अल्लाह की जलाली क़ुद्दूसियत के साथ हुई। ध्यान दें कि उसने न सिर्फ़ अल्लाह की शान और जलाल को देखा बल्कि ख़ासकर उसकी भड़कती क़ुद्दूसियत को भी। उसे पता चला कि इस क़ुद्दूसियत के सामने नाक़िस और नजिस इनसान क़ायम नहीं रह सकता।

यही क़ुद्दूस ख़ुदा अब मुलाक़ात के ख़ैमे के वसीले से उनके साथ राबता रखने पर राज़ी हो गया था। अल्लाह ने फ़रमाया था कि इसराईली मुलाक़ात का ख़ैमा बनाएँ, ऐसी इबादतगाह जो उनके साथ मौऊदा मुल्क तक चलेगी। यह ख़ैमा न सिर्फ़ मोबाइल फ़ोन की मानिंद था जिसके ज़रीए हर जगह से अल्लाह को फ़ोन किया जा सके बल्कि यह उनके साथ चलनेवाला कोहे-सीना था। अब से कोहे-सीना यानी अल्लाह की हुज़ूरी उनके दरमियान रहता और उनके साथ चलता था (बमुक़ाबला ख़ुरूज 33:16-17)।

ग़ारज़ बज़लियेल और उहलियाब इसी मुक़द्दस घर के ठेकेदार हैं। इनसे हम रूहानी ठेकेदार होने के बारे में क्या सीख सकते हैं?

बुलाहट की ज़रूरत

अल्लाह मूसा से फ़रमाता है,

> मैंने यहूदाह के क़बीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हूर को चुन लिया है ताकि वह मुक़द्दस ख़ैमे की तामीर में राहनुमाई करे ... साथ ही मैंने दान के क़बीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को मुक़र्रर किया है ताकि वह हर काम में उसकी मदद करे। (ख़ुरूज 31:1-2,6)

रूहानी ठेकेदार की बुलाहट की अशद्द ज़रूरत होती है। शायद आप जमात की ख़िदमत में हिस्सा लेना चाहें या ले रहे हों। क्या आपने कभी महसूस किया कि अल्लाह ने आपको बुलाया है? हो सकता है आप बहुत लायक़ हों, तो भी आपको बुलाहट की ज़रूरत है। मुमकिन है आपका किरदार अच्छा हो, तो भी आपको बुलाहट की ज़रूरत है। मुमकिन है आपको बुज़ुर्गों या दीगर ख़िदमतगुज़ारों से बुलाहट मिली हो, तो भी आपको अल्लाह

की बुलाहट की ज़रूरत है। मूसा को पहले अल्लाह से बुलाया गया (ख़ुरूज 3 बाब), तब ही इसकी तसदीक़ इसराईलियों से हुई। यह भी मुमकिन है कि ख़ुदा ने आपको बुलाया हो, लेकिन जमात के राहनुमाओं ने आपको रद्द कर दिया हो। अगर यह बुलाहट हक़ीक़ी हो तो अल्लाह आपको इसके बावुजूद बरकत देगा और आपकी ख़िदमत को मुअस्सर बनाएगा। लेकिन ख़बरदार! अगर दूसरे आपकी ख़िदमत के ख़िलाफ़ हैं तो अपने आपको जाँच लें। शायद ख़ुदा की बुलाहट के बारे में आपका यक़ीन ग़लत साबित हो। शायद आपके ग़ुरूर ने यह वहम पैदा कर दिया कि अल्लाह ने आपको बुलाया है। आम तौर पर दाल में कुछ काला है अगर ख़िदमतगुज़ार किसी की ख़िदमत से ख़ुश न हों जबकि वह ख़ुद अपनी बुलाहट पर यक़ीन रखे। बुलाहट की बहुत ज़रूरत है। क्या आप अपनी ख़िदमत को पेशा समझते हैं? क्या ख़िदमत आपके लिए पैसे कमाने का ज़रीअ है? क्या ख़िदमत आपके दूसरों पर रोब डालने का वसीला बन गई है? क्या आप ख़िदमत से अपनी हुक्मरानी जताना चाहते हैं? क्या ख़िदमत आपके लिए इज़्ज़त बढ़ाने का ज़रीअ है? फिर अपने आपको परखें, ऐसा न हो कि आपकी बुलाहट झूटी निकले।

रूहुल-क़ुद्स से मामूर होने की ज़रूरत

अल्लाह बज़लियेल के बारे में फ़रमाता है

> मैंने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। (ख़ुरूज 31:3)

इलाही रूह से मुराद अल्लाह का पाक रूह है। हर ख़िदमतगुज़ार को रूहुल-क़ुद्स की मामूरी की ज़रूरत है। मामूरी का मतलब भर जाना है। जब गलास पूरे तौर पर पानी से भर जाए तो पानी उससे छलकने लगता है। जब जमात का ख़िदमतगुज़ार रूहुल-क़ुद्स से मामूर है तो वह उसकी ज़िंदगी से छलकते हुए उसके हर काम से नज़र आता है। जमात का ठेकेदार जब रूहुल-क़ुद्स से मामूर है तो बा-इख़्तियार और मुअस्सर ख़िदमत सरंजाम दे सकता है।

क्या आपको रूह की मामूरी हासिल है? इसके लिए लाज़िम है कि आपने अपनी गुनाहआलूदा हालत महसूस की हो, अपनी बुरी हरकतों पर पछताए हों, अल्लाह के

सामने अपने गुनाहों का इक़रार किया हो और ईसा अल-मसीह से मिन्नत की हो कि वह आपको नजात दे। फिर ही आप नए सिरे से पैदा होकर रूहुल-क़ुद्स से मामूर होंगे।

रूह की मामूरी यहाँ किस तरह ज़ाहिर होती है? इस में कि बज़लियेल और उसके साथी को अपनी ख़िदमत के लिए "हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म" दिया गया। जो भी काम उन्हें मुलाक़ात के ख़ैमे की तामीर के सिलसिले में करना है उस में रूहुल-क़ुद्स उन्हें हर तरह की महारत बख़्शेगा ताकि यह काम अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ पूरा हो। जो अक़्ल और लियाक़तें ख़ुदा ने उन्हें फ़ितरी तौर पर दी हैं रूहुल-क़ुद्स उन्हें यों उभारेगा और रौशन करेगा कि वह पूरा काम करेंगी। शायद उन में ऐसी लियाक़तें भी थीं जो अभी तक छुपी हुई थीं लेकिन अब रूहुल-क़ुद्स की मदद से उभर आईं। यह ख़िदमत का एक ख़ुशकुन पहलू है। कई बार ख़िदमतगुज़ार की छुपी हुई लियाक़तें ख़िदमत करते वक़्त उभर आती हैं। यों उसकी और जमात की तरक़्क़ी होती है।

क्या आप अपनी ख़िदमत में रूहानी ख़ला महसूस करते हैं? इसे रूह की मामूरी से पुर करें न कि किसी दुनियावी चीज़ से। रूह की मामूरी का मतलब यह नहीं कि हम पैग़ाम सुनाते वक़्त शेर-बबर की तरह गरजें या सियासी तरीक़ों से दूसरों पर अपनी हुकूमत जताएँ। रूहुल-क़ुद्स को इसकी ज़रूरत नहीं होती कि वह शोर मचाए या बड़े इजतमाओं से ज़ाहिर हो बल्कि वह जमात के उन "आम" मेंबरान की ज़्यादा क़दर करता है जो चुपके से और कई बार पिस्ते हुए अपनी अपनी जमात में वह काम करते हैं जिनकी तारीफ़ कोई नहीं करता—वह लोग जो बिला मुआवज़ा इबादतख़ाने की सफ़ाई करते, बच्चों के प्रोग्राम करवाते, लोगों को कलाम की तिलावत के लिए जमा करते, पड़ोसियों को ख़ुशख़बरी सुनाते, काम की जगह पर गवाही देते या अपने बच्चों को रूहानी तरबियत देते हैं। अफ़सोस कि बहुत बार इनसान ऐसी लियाक़तों को ढाँपने की कोशिश करता है। लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि रूहुल-क़ुद्स ऐसी हरकतों के बावुजूद अपने लोगों को चुनकर उन्हें मामूर करता है।

तामीरी काम की मुक़द्दस हालत

बज़लियेल और उहलियाब की बुलाहट और रूह से मामूरी इतनी अहम क्यों थी? इसलिए कि मुलाक़ात का ख़ैमा क़ुद्दूस ख़ुदा की हुज़ूरी की जगह था, लिहाज़ा वह मुक़द्दस

था। इसलिए लाज़िम था कि मुलाक़ात के ख़ैमे को बनानेवाले अल्लाह के रूह से मुक़र्रर किए गए हों ताकि वह पाक-साफ़ हों। जमात के ठेकेदार का तामीरी काम मुक़द्दस है, क्योंकि जिस तामीरी काम में वह मदद करता है वह मुक़द्दस है। इसलिए ख़िदमत थरथराते हुए और बड़ी एहतियात के साथ सरंजाम देने की ज़रूरत है। अगर हम इसे नुक़सान पहुँचाएँगे तो यह हमारे अपने नुक़सान का बाइस बनेगी।

क्या हमारे अंदर ऐसा पाक जज़बा है जब हम ख़िदमत करते हैं? क्या हमें इसका एहसास है कि हम एक ऐसी इमारत पर काम कर रहे हैं जो पाकतरीन है? क्या हम महसूस करते हैं कि हम पर ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल होगा अगर हम उसके पाक इरादे के मुताबिक़ ख़िदमत न करें?

आराम के औक़ात की ज़रूरत

इसराईलियों को मुलाक़ात के ख़ैमे के बारे में अल्लाह की हिदायात सुनाने से पहले मूसा उन्हें सबत मनाने यानी हफ़्ते के दिन आराम करने का हुक्म देता है (ख़ुरूज 35:1-3)। इसी तरह अल्लाह भी बज़लियेल और उहलियाब के बारे में बात करने के ऐन बाद सबत मनाने का हुक्म पेश करता है (31:12-18)। इसकी वजह क्या थी?

> रब ने छः दिन के दौरान आसमानो-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उसने आराम किया और ताज़ादम हो गया। (ख़ुरूज 31:17)

चूँकि ख़ुदा ने हफ़्ते को आराम किया इसलिए उसके फ़रज़ंद भी उसी दिन आराम करें। एक तरह से ईसा अल-मसीह के नजातबख़्श काम के बाद यह हुक्म हम पर लागू नहीं होता, लिहाज़ा अकसर ईमानदार जहाँ तक मुमकिन हो सातवें दिन नहीं बल्कि मसीह के जी उठने की याद में पहले दिन यानी इतवार को आराम करते हैं। नीज़, हम यह दिन यहूदी हिदायात के मुताबिक़ नहीं मनाते। ताहम इस हिदायत का ख़िदमतगुज़ार के लिए बहुत फ़ायदा है। अगरचे लाज़िम नहीं कि हम आराम का दिन मुक़र्रर करें तो भी हमें आराम के औक़ात की ज़रूरत है। अगर अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ सातवें दिन आराम करके ताज़ादम हुआ तो हम कौन हैं जो हफ़्ते में एक दिन आराम करने से इनकार करें?

ख़ासकर फ़ुलटाइम ख़ादिम को यह बात याद रखने की ज़रूरत है। अकसर उसे उन औक़ात में ख़िदमत करनी पड़ती है जब दूसरे आराम करते हैं। अगर वह मेहनती हो तो

इबादत के लिए मुक़र्ररा दिन सबसे मसरूफ़ होगा। इसलिए बहुत ज़रूरी है कि वह हफ़्ते का कोई और दिन आराम करने के लिए मुक़र्रर करे। बेशक अकसर औक़ात जमात के मेंबरान यह बात नहीं समझेंगे, लेकिन अगर ख़ादिम बाक़ी वक़्त मेहनती और कामयाब नज़र आए तो वह आख़िरकार यह क़बूल कर लेंगे। ताहम तमाम ख़िदमतगुज़ार इस कशमकश में फँसे रहते हैं कि हफ़्ते में कब आराम के लिए वक़्त निकालें, क्योंकि लोग तवक़्क़ो करते हैं कि ख़ादिम हफ़्ते में सात दिन ड्यूटी करे।

हफ़्ते में एक दिन का आराम उस वक़्त बरकत का बाइस होगा जब ख़ादिम बाक़ी छः दिन पूरे जोश के साथ ख़िदमत करेगा। ख़ुदा ने छः दिन में पूरी दुनिया बनाई, फिर ही उसने आराम किया। अगर इस फ़रमान पर सहीह तौर पर अमल किया जाए तो ख़ादिम को न सिर्फ़ बेहतर आराम मिलेगा बल्कि उसका काम भी मज़ीद मुअस्सर होगा।

आम तौर पर फ़ुलटाइम ख़ादिम को आराम पाने के लिए जिद्दो-जहद की ज़रूरत होगी। अगरचे यह हर वक़्त मुमकिन नहीं होगा ताहम कभी-कभार जमात की गिरिफ़्त से निकलने और ताज़ादम होने के लिए अच्छा होगा कि ख़ादिम सफ़र करे। वह सुसराल, माँ-बाप या किसी रिश्तेदार के पास जा सकता है जो किसी और इलाक़े में रह रहे हों। यों वह इस कशाकश में नहीं रहेगा कि जमात में किसी को मेरी ज़रूरत है। बहर हाल ख़िदमत और आराम का तवाज़ुन हर फ़ुलटाइम ख़ादिम के लिए एक बुनियादी मसला है।

आराम करने का एक और पहलू भी है। आम ईमानदार के लिए आराम के औक़ात का एक मक़सद यह है कि वह अल्लाह के कलाम का मुतालआ करके रूहानी हक़ीक़तें सीख सके और ख़ुदा की परस्तिश करने का मौक़ा मिल सके। इसके मुक़ाबले में ख़ादिम उस वक़्त ख़िदमत करता है जब दूसरे सीखते और अल्लाह से रूहानी आरामो-इतमीनान हासिल करते हैं। सवाल उभरता है कि वह ख़ुद कब अपने लिए ख़ुदा के कलाम से सीख सकता है? इसका जवाब हर ख़ादिम के लिए फ़रक़ होगा, लेकिन लाज़िम है कि वह रोज़ाना अल्लाह के कलाम से सीखने और दुआ करने में वक़्त सर्फ़ करे। अगर वह रोज़ाना ख़ुदा के तख़्त के सामने आराम करके ताज़ादम न हो जाए तो वह किस तरह दूसरों को रूहानी ख़ुराक मुहैया कर सकेगा! बेशुमार पैग़ामात इसलिए फीके होते हैं कि सुनानेवाले ने ख़ुदा के सामने आराम नहीं किया। सिर्फ़ वह ख़ादिम रूहानी ख़ुराक दे सकता है जिसे ख़ुद ख़ुराक मिली हो।

दिली ख़ुशी से हदिये देना

मुलाक़ात के ख़ैमे की तामीर के लिए बहुत-सारे सामान की ज़रूरत थी। अब ग़ौर कीजिए कि मूसा किस तरह हदिये के लिए अपील करता है। वह फ़रमाता है,

> जो भी दिली ख़ुशी से देना चाहे वह ... कुछ दे। (ख़ुरूज 35:5)

इसराईली अभी अभी मिसर की ग़ुलामी से बच निकले थे और अल्लाह नहीं चाहता था कि वह किसी नई ग़ुलामी में फँस जाएँ। उसकी मरज़ी थी कि मुलाक़ात का ख़ैमा उसके आज़ाद परस्तारों के ख़ुशी से दिए हुए हदियों से बनाया जाए।

जमात का जवाब क़ाबिले-ग़ौर है,

> जो जो दिली ख़ुशी से देना चाहता था वह मुलाक़ात के ख़ैमे, उसके सामान या इमामों के कपड़ों के लिए कोई हदिया लेकर वापस आया। (ख़ुरूज 35:21)

हर किसी ने वह चीज़ दी जो वह दिली ख़ुशी से देना चाहता था। यहाँ न सिर्फ़ अमीर दे रहे हैं और न सिर्फ़ ग़रीब बल्कि सब दे रहे हैं। पूरी जमात ख़ुदा के इस तामीरी काम में लग गई है। शुक्रगुज़ारी और ख़ुशी से लोग आज़ादाना तौर पर हदिये देते हैं। और सब एक ही क़िस्म की चीज़ नहीं देते बल्कि मुख़्तलिफ़ अशया। एक सोना देता है, दूसरा कपड़ा, तीसरा खालें वग़ैरा। जमात का हर फ़रद हदिये में वह देता है जो अल्लाह ने उसे दी है।

हमारी जमातों के लिए यह कितना अच्छा नमूना है! कितनी ख़ुशी होती अगर हमारे तमाम मेंबरान यों तामीरी काम में हिस्सा लेते जिस तरह इसराईली लेते थे। अगर हर कोई अपनी अपनी नेमत यों पेश करता तो पूरी जमात कितनी तरक़्क़ी करती!

ऐसी ख़ुशी ग़ैरमामूली होती है। इस क़िस्म की ख़ुशी सिर्फ़ उस वक़्त पाई जाती है जब ख़ुदा का रूह लोगों को तहरीक दे, जब उसके जलाल और फ़ज़ल का एहसास उनके दिलों में हो। नतीजे में लोग ज़्यादा देते हैं। जब कारीगरों को यह पता चलता है तो वह क्या करते हैं? क्या वह फ़ालतू चीज़ें "हज़म" कर जाते हैं, क्या वह यह चीज़ें चुपके से कहीं ले जाते हैं? आख़िर उन्हें अपने काम के लिए मुआवज़ा नहीं मिल रहा। हरगिज़ नहीं! वह फ़ौरन मूसा के पास आकर कहते हैं,

> लोग हद से ज़्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक्म रब ने दिया है उसके लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है। (ख़ुरूज 36:5)

नीज़, मूसा के रद्दे-अमल पर तवज्जुह दें। क्या वह यह सोचकर कि मुझे भी कुछ मिलने का हक़ है उन्हें मज़ीद ले आने का हुक्म देता है? हरगिज़ नहीं! वह जानता है कि यह चीज़ें मुक़द्दस हैं, उन्हें तामीरी काम के लिए मख़सूस किया गया है। नतीजे में वह लोगों को और चीज़ें लाने से रोकता है।

मूसा और कारीगरों का यह नमूना बहुत ख़ूबसूरत है। क्या हम ख़ुशी से तामीरी काम के लिए नहीं देंगे अगर जमात के राहनुमा हदिये के बारे में ऐसा ख़याल रखें, अगर वह हमें देने से रोकें जब ज़रूरत से ज़्यादा मिल गया हो? अफ़सोस कि इस तरह का नमूना कम ही मिलता है। कितनी जमातों के मेंबरान को इल्म है कि हफ़तावार चंदा कितना जमा हुआ है और कि वह किस किस काम के लिए इस्तेमाल हुआ है? इस नाते से कितने मेंबरान जमात के राहनुमाओं पर पूरा भरोसा रखते हैं? अगर वह जमात के पैसे को तसल्लीबख़्श तरीक़े से नहीं सँभाल सकते तो फिर उनकी बाक़ी ख़िदमत किस तरह तसल्लीबख़्श और बाइसे-बरकत हो सकती है? जमात किस तरह रूहानी तरक़्क़ी कर सकती है? यक़ीन करें कि जो उसकी ख़िदमत के लिए मख़सूस की गई चीज़ों का ग़लत इस्तेमाल करते हैं उन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा।

अपनी नेमतों से अल्लाह की ख़िदमत करना

बज़लियेल और उहलियाब तो तामीरी काम के ठेकेदार हैं, लेकिन इनके अलावा और कारीगरों का ज़िक्र भी आता है,

> लाज़िम है कि बज़लियेल, उहलियाब और बाक़ी कारीगर जिनको रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ बनाएँ जो रब ने दी हैं।
>
> मूसा ने बज़लियेल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उसने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और महारत दी थी और जो ख़ुशी से आना और यह काम करना चाहता था। (ख़ुरूज 36:1-2)

इन दूसरे कारीगरों को भी वही फ़हम और हिकमत हासिल है जो बज़लियेल और उहलियाब को मिली थी। बेशक बज़लियेल और उहलियाब मरकज़ी हैसियत रखते हैं। लेकिन उनके साथ ऐसे कारीगर हैं जो मिलकर काम को सरंजाम दे रहे हैं। यहाँ टीम मिलकर काम करते हुए नज़र आती है।

यह किस तरह के लोग हैं? यह मुख़्तलिफ़ लियाक़तों के हामिल हैं। हर कोई अपने अपने शोबे में माहिर है। ख़ुदा ने उन्हें महारत और यह काम मुकम्मल करने की तहरीक दी है (आयत 6)। उन्होंने अपने आपको इस काम के लिए मख़सूस किया है। वह शुक्रगुज़ार हैं कि इस काम में हिस्सा ले सकते हैं। उन में से हर कोई जानता है कि अगरचे क़ादिरे-मुतलक़ यह काम मेरे बग़ैर भी करवा सकता था, लेकिन उसने यह अज़ीम काम करने के लिए मुझे पसंद किया है। यह सोचकर सब इस काम में हिस्सा लेने को एज़ाज़ समझते हुए पूरे जोश और महारत के साथ काम में लग गए। न सिर्फ़ आदमी बल्कि ख़वातीन भी इस में शामिल थीं,

> जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थी और दिली ख़ुशी से मक़दिस के लिए काम करना चाहती थी वह यह कातकर ले आई। (ख़ुरूज 35:26)

क्या हमारे तामीरी काम में इस क़िस्म के लायक़ कारीगर मौजूद हैं जो मुख़्तलिफ़ शोबों में अपनी अपनी महारत दिखाते हुए रूहुल-क़ुद्स और जमात के राहनुमाओं की हिदायात के तहत मिलकर ख़िदमत करते हैं? मुमकिन है क़ारी की जमात में ऐसा न हो। ताहम हिम्मत हारकर न बैठ जाएँ। हम सब यह रोया रख सकते और ख़ुदा से मिन्नत कर सकते हैं कि वह हमें राहनुमाओं और कारीगरों का ऐसा गुरोह बख़्शे जिससे मक़ामी जमात का तामीरी काम बढ़े और अल्लाह के मनसूबे के तहत चले। चूँकि जमात ख़ुदा का मक़दिस है इसलिए वह इस लायक़ है कि हमारे सबसे लायक़ और मेहनती मेंबरान उसके तामीरी काम में मिलकर हिस्सा लें।

ख़िदमतगुज़ारों की नेमतों को फ़रोग़ देना

कौन-से लोग ख़ैमे को बनाने में लग गए? लिखा है कि काम करनेवाले कारीगर वही हैं जिनका ज़िक्र हो चुका है,

> जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे को बनाया। उन्होंने बारीक कतान और नीले, अरग़वानी और क़िरमिज़ी धागे से दस परदे बनाए। (ख़ुरूज 36:8)

लेकिन बाद में कई जगहों पर "बज़लियेल ने" लिखा गया है, मसलन आयत 13 में। यों सवाल उभरता है कि काम करनेवाले कौन हैं? क्या कारीगरों ने सिर्फ़ परदे बनाए और बस? यह बात नामुमकिन है। यह बात सिर्फ़ यों समझी जा सकती है कि ज़्यादा काम कारीगर ही कर रहे हैं, लेकिन बज़लियेल और उहलियाब ठेकेदार की हैसियत से उन्हें हिदायात देते हुए उनसे यह काम करवा रहे हैं। यों एक और बार ज़ाहिर होता है कि लोग यह काम मिलकर कर रहे थे।

ख़ादिम का किरदार बज़लियेल और उहलियाब पर ध्यान देने से उभर आता है। वह ख़िदमत में दूसरों से ज़्यादा तजरिबाकार और समझदार होता है इसलिए वह दूसरे कारीगरों को ख़िदमत करने में हिदायात देता है ताकि उनकी ख़िदमत मुअस्सर और अल्लाह को पसंद हो। वह जमात के काम के लिए उनकी मुफ़ीद लियाक़तें जाँच लेता है और उनको तरक़्क़ी देता है। वह अकेला ख़िदमत करना ही नहीं चाहता बल्कि शुरू से दूसरों के साथ मिलकर ख़िदमत करने की ख़्वाहिश रखता है।

नीज़, वह जानता है कि सिर्फ़ उनके साथ चलने और उन्हें काम पर लगाने से हम मज़बूत और बाइसे-बरकत हो जाएँगे, चाहे मैं ख़ुद कितना ही माहिर क्यों न हूँ। यों वह दानिशमंद ठेकेदार की हैसियत से हर मददगार को अपनी अपनी जगह पर लगा देता है।

रब के मह्यार पर पूरा उतरना

फिर लिखा है,

> सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थीं। मूसा ने तमाम चीज़ों का मुआयना किया और मालूम किया कि उन्होंने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक़ बनाया था। तब उसने उन्हें बरकत दी। (ख़ुरूज 39:42-43)

कारीगरों ने तमाम काम रब के हुक्म के मुताबिक़ मुकम्मल किया था। एक बात में भी वह फ़ेल नहीं हुए थे। हमारी जमात के तामीरी काम का मह्वार भी यही होना चाहिए। मुमकिन है कोई कहे, "लेकिन भई, यह किस तरह हो सकता है, हम कमज़ोर इनसान हैं, हमसे ग़लतियाँ होती रही हैं और होती रहेंगी!" बेशक हमसे ग़लतियाँ होती रहेंगी, लेकिन इस जुमले ने कितनी बार रूहुल-क़ुद्स के काम को ढाँप लिया होगा। हमने यह जुमला अपने अपने ज़हन में नक़्श करके इससे एक ऐसा बहाना तैयार कर रखा है जिससे जमात के काम की हर कमज़ोरी ताज़ादम रहती है। लेकिन क़ादिरे-मुतलक़ की मरज़ी यह है कि हम उसके मह्वार पर पूरे उतरें न कि इनसान के मह्वार पर।

दूसरी तरफ़ हम सब स्कूल में या अपने पेशे में तरक़्क़ी करने की सिर-तोड़ कोशिश करते हैं। फिर ही अगर कुछ वक़्त या ताक़त बच गई हो तो हम जमात की ख़िदमत में हिस्सा लेते हैं। दुनिया के फ़रायज़ अदा करने के बाद ही हम थोड़ा-बहुत अपने मज़हबी फ़रायज़ अदा करने के लिए तैयार होते हैं।

क्या हम जमात की ख़िदमत में ख़ुदा के मह्वार पर पूरे उतरते हैं?

ख़िदमतगुज़ारों को बरकत देना

जब काम मुकम्मल हो गया तो मूसा ने कारीगरों को बरकत दी। ख़ुदा की बरकत उन ख़िदमतगुज़ारों को मिलती है जो उसकी मरज़ी पूरी करते हैं। ख़िदमत में बरकत देने की मरकज़ी हैसियत होनी चाहिए। क्या हम बार बार अपने ख़िदमतगुज़ारों को बरकत देते हैं? यानी न सिर्फ़ उनसे काम करवाते हैं बल्कि मुतवातिर उनके लिए ख़ुदा से बरकत माँगते हैं। बरकत देने से यह ज़ाहिर होता है कि जमात के राहनुमा हर काम में हिस्सा लेते हैं, कि वह न सिर्फ़ ख़िदमतगुज़ारों के काम में दिलचस्पी लेते हैं बल्कि उनकी हिफ़ाज़त, बहबूदी और तरक़्क़ी के लिए भी फ़िकरमंद रहते हैं। जब हम एक दूसरे को बरकत देनेवाली जमात बन जाएँगे तब ही हम तरक़्क़ी करेंगे। फिर हम एक दूसरे की कमियों की निसबत एक दूसरे की ख़ूबियों पर ज़्यादा तवज्जुह देंगे। हौसलाशिकनी की बजाए हम एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करेंगे। फिर हमारी मुहब्बत बढ़ेगी और हम दूसरों की मुख़ालफ़त को अल्लाह के हाथ में छोड़ सकेंगे। हम गालियाँ देने और तू-तू मैं-मैं करने के बजाए बरकत देना सीखेंगे।

ख़ुलासा

हमने देख लिया है कि मुलाक़ात के ख़ैमे की तामीर तामीरी काम का बेहतरीन नमूना है। इस में ख़िदमतगुज़ार ख़ुदा की बुलाहट क़बूल करके ख़ुशी से अपने माल, वक़्त और ताक़त की क़ुरबानी देते हैं। इस क़िस्म के समझदार लोग अपने मददगारों की हिदायत करके उनके काम को ख़तरा महसूस नहीं करते बल्कि हर बात में उनकी हौसलाअफ़ज़ाई करते और उनकी तरक़्क़ी और बहबूदी की फ़िकर में रहते हैं। यह राहनुमा ठेकेदार की हैसियत से जमात के मेंबरान की नेमतों का खोज लगाकर उन्हें उनकी अहलियत के मुताबिक़ ख़िदमत में लगा देते हैं। यों कारीगरों को रूहानी तरक़्क़ी हासिल होती है और उनकी ख़िदमत तामीरी काम के लिए बाइसे-बरकत बन जाती है। चूँकि तमाम ख़िदमतगुज़ार ख़ुलूसदिली और जोश के साथ मिलकर राहनुमाओं और रूहुल-क़ुद्स की हिदायत के तहत काम मुकम्मल करते हैं इसलिए वह रब के मह्यार पर पूरे उतरकर बरकत पाते हैं।

पहला बैतुल-मुक़द्दस : बादशाह का शाहकार

फ़लस्तीन में पहुँचने के बाद पहला बैतुल-मुक़द्दस यरूशलम में सुलेमान बादशाह के तहत बनवाया गया। जब हम मुलाक़ात के ख़ैमे का बैतुल-मुक़द्दस से मुवाज़ना करते हैं तो कई बातों में नुमायाँ फ़रक़ नज़र आता है।

पहली बात, पूरा काम एक ही के हाथ में था (देखिए 1 सलातीन 2:7 ओ-माबाद)। चूँकि सुलेमान बादशाह था इसलिए शाही इंतज़ाम का असर बैतुल-मुक़द्दस की तामीर पर भी पड़ गया।

दूसरे, हम पढ़ते हैं,

> सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम करने के लिए इसराईल में से 30,000 आदमियों की बेगार पर भरती की। उसने अदूनीराम को उन पर मुक़र्रर किया। हर माह वह बारी बारी 10,000 अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यों हर मज़दूर एक माह लुबनान में और दो माह घर में रहता। (1 सलातीन 5:13-14)

बेगारी का क्या मतलब था? इन लोगों को काम पर मजबूरन लगाया गया। उन्हें रूहुल-क़ुद्स की तहरीक नहीं मिली थी बल्कि बादशाह का हुक्म। उनके ऊपर एक सख़्त

आदमी मुक़र्रर किया गया जो लोगों को इतना ना-पसंद था कि उसे बाद में संगसार किया गया (1 सलातीन 12:18)।

सिर्फ़ 1 तवारीख़ 29:1-7 में मुलाक़ात के ख़ैमे के ज़माने की रूह की झलक नज़र आती है, जहाँ दाऊद और इसराईल के तमाम क़बायल दिल की ख़ुशी से सुलेमान को बैतुल-मुक़द्दस बनाने के लिए मटीरियल मुहैया करते हैं। बैतुल-मुक़द्दस बनाने की इब्तिदा में ख़ुशी थी, लेकिन यह ख़ुशी बोझ तले दब गई। नतीजे में सुलेमान की मौत के बाद तमाम इसराईल ने उसके बेटे के पास आकर कहा,

> जो जुआ आपके बाप ने हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की ख़िदमत में सर्फ़ करने थे वह नाक़ाबिले-बरदाश्त थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम ख़ुशी से आपकी ख़िदमत करेंगे। (2 तवारीख़ 10:4)

ग़रज़ बैतुल-मुक़द्दस के तामीरी काम की नौईयत अच्छी नहीं लगती। इस में टीम की रूह कम पाई जाती है बल्कि यह काम मिसर की ग़ुलामी से मुताबिक़त रखता है, यानी उस ग़ुलामी से जिससे इसराईली नफ़रत करते थे और जिससे बचने के लिए वह मिसर से निकले थे।

सलेमान ने बैतुल-मुक़द्दस की पूरी मनसूबाबंदी ख़ुद की, अगरचे नक़्शा बनाने में दाऊद का हाथ भी था (1 तवारीख़ 28:11-19)। हर एक तफ़सील बेऐब थी, यहाँ तक कि इमारत के लिए पत्थर कान में ही तैयार किए गए, इसलिए

> जब उन्हें ज़ेरे-तामीर इमारत के पास लाकर जोड़ा गया तो न हथोड़ों, न छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई दी।
> (1 सलातीन 6:7)

सुलेमान बादशाह की मनसूबाबंदी बेऐब तो थी, लेकिन तामीरी काम की रूह मुलाक़ात के ख़ैमे के काम से फ़रक़ थी। फ़रक़ बादशाही और बिरादरी के इंतज़ामात का है जिसके बारे में समुएल नबी ने इसराईलियों को आगाह किया था। उसने फ़रमाया था कि शाही इंतज़ाम तुम्हारा बोझ भारी कर देगा बल्कि तुम्हारे लिए नुक़सान का बाइस बनेगा (1 समुएल 8 बाब)। असल बादशाह हमारा ख़ुदा है, और हम सब आपस में बहन-भाई हैं। अदना-आला का कोई चक्कर नहीं बल्कि हम सब बराबर हैं।

जमात के तामीरी काम के लिए हम क्या नतीजा निकाल सकते हैं? एक तो यह है कि हम बादशाहों के चक्कर में न आएँ। हमें जमात के काम में बादशाहों की ज़रूरत नहीं बल्कि बहन-भाइयों और रूहानी माँ-बापों की। ऐसे लोगों से बचें जो दूसरों को ग़ुलामी में रखने की कोशिश करते हैं या दूसरों पर अपना रोब डालना चाहते हैं। और ऐसे राहनुमाओं के साथ मिलकर काम करें जो दूसरों के बराबर और उनके साथ मिलकर ख़िदमत करते हैं।

दूसरा बैतुल-मुक़द्दस : जमात का शाहकार

सुलेमान का बैतुल-मुक़द्दस 582 क़.म. में बरबाद हुआ। जब 70 साल के बाद नए सिरे से उसकी तामीर हुई तो वह देखने में पहली इमारत की निसबत बहुत नाक़िस लगी। लिखा है,

> लेकिन बहुत-से इमाम, लावी और ख़ानदानी सरपरस्त हाज़िर थे जिन्होंने रब का पहला घर देखा हुआ था। जब उनके देखते देखते रब के नए घर की बुनियाद रखी गई तो वह बुलंद आवाज़ से रोने लगे जबकि बाक़ी बहुत-सारे लोग ख़ुशी के नारे लगा रहे थे। इतना शोर था कि ख़ुशी के नारों और रोने की आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया जा सका। शोर दूर दूर तक सुनाई दिया। (अज़रा 3:12-13)

बूढ़े लोग रो पड़े, क्योंकि उन्हें सुलेमान से बनी हुई इमारत की शान याद आई जिसके मुक़ाबले में यह इमारत कुछ भी नहीं थी। इसके बावुजूद मौजूदा इमारत की तामीर के कई पहलू हैं जो सुलेमानी इमारत की निसबत बेहतर हैं। यहाँ एक नया रूहानी जोश नज़र आता है जो जिलावतनी के तजरिबे से पाक-साफ़ किया गया है। ऐसे ख़िदमतगुज़ार नज़र आते हैं जो पड़ोसी ममालिक की दुश्मनी, अपने लोगों की ग़ुरबत और सुस्ती, और ब्यूरोक्रेसी की रुकावटों का सामना करने से बिखर नहीं जाते बल्कि रूहुल-क़ुद्स की क़ियादत के तहत और टीम की सूरत में इमारत की तामीर का काम सरंजाम देते हैं।

अज़रा और नहमियाह जैसे लोगों को जिलावतनी से वापस आकर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की रुकावटों का सामना करना पड़ा। इसराईल में दुबारा अपने पाँव पर खड़े हो जाने की ज़रूरत थी, कारोबार का नया सिलसिला क़ायम करने की ज़रूरत थी। नए सिरे से अपने अपने घर बनाने की ज़रूरत थी। नीज़, पड़ोसी ममालिक उनके ख़िलाफ़ उठे (अज़रा 4)।

इसके बावुजूद यहूदियों ने बड़ी दिलेरी से शहर की फ़सील और बैतुल-मुक़द्दस की तामीर शुरू कर दी। हालात ठीक नहीं थे, फिर भी उन्होंने हिम्मत न हारी बल्कि अपना पाक मिशन जारी रखा। हमारी ख़िदमत कितनी बार रुक जाती है जब हालात ख़राब हो जाते हैं! हम बड़ी जल्दी से दूसरों या हालात की मुख़ालफ़त के सामने जमात की ख़िदमत छोड़ देते हैं, हालाँकि अकसर औक़ात हमारे मसायल उन यहूदियों के मसायल की निसबत न होने के बराबर होते हैं।

दूसरे बैतुल-मुक़द्दस का तामीरी काम मुलाक़ात के ख़ैमे के काम से ज़्यादा मुताबिक़त रखता है। अज़रा, नहमियाह, हज्जी और ज़करियाह के नविश्ते इसकी गवाही देते हैं कि तामीर में हिस्सा लेनेवाले मूसा के ज़माने की बिरादराना रूह के हामिल थे। इसकी शहादत इस में मिलती है कि सरदार इमाम बनाम यशुअ और सरकारी इंतज़ाम चलानेवाला बनाम ज़रुब्बाबल अपने भाइयों के साथ मिलकर क़ुरबानगाह बनाते हैं (अज़रा 3:2-3)। साथ साथ कम से कम दो नबियों यानी हज्जी और ज़करियाह ने बैतुल-मुक़द्दस बनाने में यहूदियों की हौसलाअफ़्ज़ाई की। नीज़, अज़रा की किताब में एक दिलचस्प बात पाई जाती है,

> ज़ैल के लोग मिलकर रब का घर बनानेवालों की निगरानी करते थे : यशुअ अपने बेटों और भाइयों समेत, क़दमियेल और उसके बेटे जो हूदावियाह की औलाद थे और हनदाद के ख़ानदान के लावी। (अज़रा 3:9)

यहाँ यशुअ, क़दमियेल और हनदाद के ख़ानदान कारीगरों की राहनुमाई करते हुए दिखाई दे रहे हैं। यानी यहाँ भी तमाम लोग एक दूसरे से मशवरा लेकर और मिलकर काम कर रहे हैं। और यहाँ ठेकेदारों का पूरा गुरोह कारीगरों की राहनुमाई कर रहा है।

ग़रज़ जब हम शानो-शौकत के लिहाज़ से पहले और दूसरे बैतुल-मुक़द्दस का मुवाज़ना करते हैं तो बेशक सुलेमान की इमारत बेहतर है, लेकिन जब हम दोनों की तामीर के सिलसिले का मुवाज़ना करते हैं तो दूसरी इमारत ज़्यादा बेहतर है।

ख़बरदार! किसी जमात की महज़ ज़ाहिरी शक्ल से मुतअस्सिर न हो जाएँ। लाज़िम है कि हम उसके अंदरूनी ढाँचे पर ग़ौर करें, क्योंकि जमात की बैरूनी शक्ल जाती रहेगी जबकि उसकी अंदरूनी शक्ल क़ायम रहेगी। जिन ख़ादिमों की जमातें छोटी हैं उन्हें इससे हौसला पाना चाहिए। मुमकिन है कि उनका काम कई बड़ी जमातों से ज़्यादा मुअस्सर साबित हो और ज़करियाह नबी की बात उन पर सादिक़ आए,

> गो तामीर के आग़ाज़ में बहुत कम नज़र आता है तो भी उस पर हिक़ारत की निगाह न डालो। क्योंकि लोग ख़ुशी मनाएँगे जब ज़रुब्बाबल के हाथ में साहूल देखेंगे। (ज़करियाह 4:10)

साहूल से मेमार दीवार की सीध का पता चलाते हैं। इमारत यहाँ तक तैयार हो जाएगा कि ज़रुब्बाबल साहूल लेकर दीवारों की सीध मालूम करेगा। मतलब यह है कि जिन लोगों ने शुरू में तामीरी काम की तहक़ीर की थी वह आख़िरकार शर्मसार हो जाएँगे जब तैयारशुदा इमारत नज़र आएगा।

3

मैनेजर

> ग़रज़ लोग हमें मसीह के ख़ादिम समझें, ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की ज़िम्मेदारी दी गई है। अब निगरानों का फ़र्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया जा सके। (1 कुरिंथियों 4:1-2)

पौलुस रसूल अपनी ख़िदमत की नौईयत पर न सिर्फ़ किसान और ठेकेदार की मिसाल से रौशनी डालता है बल्कि मैनेजर के नमूने से भी। मैनेजर का मतलब क्या है? जो किसी काम का मैनेजर है उसे किसी की तरफ़ से उस काम के लिए इख़्तियार दिया गया है। जिसकी मिलकियत का मुख़तार वह है, वह उसकी नहीं बल्कि उसकी है जिसने उसे उसका मुख़तार बना दिया है। लेकिन मैनेजर को मालिक की तरफ़ से पूरा इख़्तियार दिया जाता है कि वह यह मिलकियत सँभाले। वह मिलकियत का पूरा इंतज़ाम चलाने के लिए ज़िम्मेदार है। तमाम मुलाज़िम उसके मातहत हैं। वह उनकी नज़र में मालिक जैसा है, क्योंकि वह मालिक की जगह इंतज़ाम चलाता है।

अच्छे मैनेजर का सबसे बड़ा निशान उसकी दियानतदारी और वफ़ादारी है (1 कुरिंथियों 4:2)। चूँकि वह मालिक की जगह इंतज़ाम चलाता है इसलिए मिलकियत उसकी नहीं बल्कि मालिक की है। जो भी इख़्तियार उसे हासिल है वह मालिक से मिला है। बाज़ औक़ात वह मालिक की ग़ैरमौजूदगी में काम करवाता है। तब उसे मालिक की जगह फ़ैसला करना पड़ता है। इसकी अशद्द ज़रूरत है कि वह हर काम मालिक के फ़ायदे

के लिए करे और यों वफ़ादार निकले। अगर वह वफ़ादार नहीं तो फिर सारा इंतज़ाम नाक़िस और खोखला है।

हमारे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह ने एक तमसील सुनाकर ऐसे मैनेजर की नौईयत पर रौशनी डाली (मत्ती 25:14-30)। इस तमसील में मालिक अपने तीन नौकरों को अपनी मिलकियत पर मुख़तार मुक़र्रर करता है। वह पहले को 5000, दूसरे को 2000 और तीसरे को 1000 सके देकर कुछ वक़्त के लिए रवाना होता है। अब ग़ौर कीजिए कि पहले और दूसरे नौकर को अच्छा और दियानतदार नौकर क्यों कहा जाता है। इसलिए नहीं कि उन्होंने मालिक की ग़ैरमौजूदगी में उसके लिए पैसे महफ़ूज़ रखे बल्कि इसलिए कि उन्होंने मालिक की रक़म बढ़ा दी। इसके उलट तीसरे नौकर को सुस्त और शरीर इसलिए कहा जाता है कि उसने पैसे सिर्फ़ ज़मीन में दबाकर महफ़ूज़ रखे। मालिक के बारे में इस आदमी की सोच भी क़ाबिले-ग़ौर है,

> जनाब, मैं जानता था कि आप सख़्त आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं बोया उसकी फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ आपने नहीं लगाया उसकी पैदावार जमा करते हैं। इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस ले सकते हैं। (मत्ती 25:24-25)

वफ़ादार नौकरों का अपने मालिक के बारे में ख़याल अच्छा है, इसलिए वह उसकी दौलत बढ़ाने की पूरी कोशिश करते हैं। इसके मुक़ाबले में शरीर और सुस्त नौकर का अपने मालिक के बारे में तसव्वुर अच्छा नहीं है, इसलिए वह उसकी दौलत बढ़ाने में दिलचस्पी नहीं रखता।

जमात का राहनुमा भी अल्लाह का मैनेजर और मुख़तार है। उसे ख़ुदा की तरफ़ से इख़्तियार दिया गया है ताकि वह कुछ फले-फूले जो उसके सपुर्द किया गया हो। क्या ख़ुदा हमारे बारे में कहेगा, “शाबाश, अच्छे और दियानतदार नौकर”?

मिसर का मैनेजर यूसुफ़

मैनेजर की एक सुनहरी मिसाल यूसुफ़ है। बार बार उसने दिखाया कि अच्छा मैनेजर क्या है। क्योंकि पहले उसे फ़ूतीफ़ार के घर का मैनेजर मुक़र्रर किया गया, फिर क़ैदख़ाने का और आख़िरकार पूरे मुल्के-मिसर का।

मालिक की जगह पूरा इंतज़ाम चलाना

जब यूसुफ़ मिसर पहुँचा तो फ़ूतीफ़ार ने "उसे अपने घराने के इंतज़ाम पर मुक़र्रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सपुर्द कर दी" (पैदाइश 39:4)। इस जगह पर हम इस ग़लतफ़हमी का शिकार न हो जाएँ कि वह सिर्फ़ किसी आम घर में काम करता था। फ़ूतीफ़ार एक बहुत बड़ा अफ़सर था और यूसुफ़ उसकी तमाम मिलकियत बशमूल उसकी ज़मीनों पर मैनेजर था (पैदाइश 39:5)। उसे पूरी मिलकियत का इंतज़ाम सँभालने का इख़्तियार हासिल था। यों यूसुफ़ यह कहने में हक़-बजानिब है कि

> मेरे मालिक को मेरे सबब से किसी मामले की फ़िकर नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सपुर्द कर दिया है। घर के इंतज़ाम पर उनका इख़्तियार मेरे इख़्तियार से ज़्यादा नहीं है। (पैदाइश 39:8-9)

इसी तरह जब यूसुफ़ को जेल में डाला गया तो उसे वहाँ भी इंतज़ाम सँभालने की तरबियत हासिल हुई। दारोग़ा ने तमाम क़ैदियों और पूरे जेल का इंतज़ाम उसके सपुर्द किया, यहाँ तक कि वह तमाम काम के नाते से बेफ़िकर रहा (पैदाइश 39:21-23)।

फिर यूसुफ़ को रिहाई मिली। और उसे फ़िरऔन की पूरी मिलकियत यानी उसके घर और उसकी बादशाही का मैनेजर बनाया गया। फ़िरऔन फ़रमाता है,

> मैं तुझे अपने महल पर मुक़र्रर करता हूँ। मेरी तमाम रिआया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख़्तियार सिर्फ़ मेरे इख़्तियार से कम होगा। (पैदाइश 41:40)

यूसुफ़ को मुल्के-मिसर का हाकिम मुक़र्रर किया गया (41:41) बल्कि फ़िरऔन फ़रमाता है कि "मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँव नहीं हिलाएगा" (पैदाइश 41:44)। यानी जो इख़्तियार सिर्फ़ फ़िरऔन को हासिल था वह यूसुफ़ को दिया गया।

रब की बरकत का हुसूल

यूसुफ़ की कामयाबी की सबसे बड़ी वजह यह थी कि उसे अल्लाह की बरकत हासिल थी। जब वह फ़ूतीफ़ार के घर में काम करता था तो लिखा है कि "रब यूसुफ़ के साथ

था। जो भी काम वह करता उस में कामयाब रहता।" (पैदाइश 39:2)। इसी तरह जब वह क़ैदख़ाने में रहा तो लिखा है कि ख़ुदावंद उसके साथ था (पैदाइश 39:21-23)।

हो सकता है कि हमारी नीयत अच्छी हो, हमारी मनसूबाबंदियाँ और कोशिशें अच्छी हों। लेकिन अगर ख़ुदावंद हमारे साथ नहीं तो हम कभी भी कामयाब नहीं हो सकते।

> अगर रब घर को तामीर न करे तो उस पर काम करनेवालों की मेहनत अबस है। (ज़बूर 127:1)

हर तरह से क़ाबिले-एतबार

फ़ूतीफ़ार सब कुछ यूसुफ़ के सपुर्द कर सका। उसे किसी चीज़ की फ़िकर नहीं थी। उसे यूसुफ़ पर पूरा भरोसा था कि वह मेरा माल यों सँभाल रहा है जैसे कि मैं ख़ुद सँभालता अगर वह न होता। यहाँ तक कि उसे अपनी मिलकियत के बारे में इल्म भी नहीं था।

> फ़ूतीफ़ार को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की फ़िकर नहीं थी। (पैदाइश 39:6)

यूसुफ़ की वफ़ादारी इस में भी नज़र आती है कि वह फ़ूतीफ़ार की बीवी के साथ हमबिसतर न हुआ (39:7-8)। उसका अव्वल उसूल यह था कि मैं वह इख़्तियार जो मेरे मालिक ने मुझे दिया है ग़लत इस्तेमाल नहीं करूँगा। उसके इनकार के पीछे यही उसूल कारफ़रमा है।

फिर जब उसे क़ैदख़ाने में डाला गया तो यही वफ़ादारी दिखाई देती है। दारोग़े को उस पर इतना भरोसा था कि उसने क़ैदख़ाने का पूरा इंतज़ाम बशमूल क़ैदियों को उसके सपुर्द किया। तमाम ख़ूनी, चोर, डाकू और तमाम सियासी क़ैदी उसके मातहत थे।

जमात के राहनुमा की कामयाबी इस पर मुनहसिर है कि लोग उस पर पूरा भरोसा रख सकें, कि उन्हें पूरा यक़ीन हो कि राहनुमा झूट नहीं बोलता, पैसे नहीं खाता और उनके ख़िलाफ़ काम नहीं करता बल्कि उनकी भलाई के लिए ख़िदमत करता, उनकी क़दर और इज़्ज़त करता और उनके साथ सीधी-सादी बातें करता है। क्या लोग आँखें बंद करके हम पर एतबार कर सकते हैं? अफ़सोस कि इख़्तियार के इस पहले उसूल में बहुत-से ख़ादिम फ़ेल हैं। लेकिन अगर वह फ़ेल हैं तो किस तरह बरकत की तवक़्क़ो कर सकते हैं?

बाहमी ताल्लुक़ात की राहनुमाई

ख़ुदा ने यूसुफ़ को दारोग़े की नज़र में मक़बूल बनाया (39:21)। यानी अल्लाह ने उसे यह लियाक़त बख़्शी कि वह लोगों को अपनी तरफ़ मायल कर सके। उसे दूसरों के साथ ताल्लुक़ात क़ायम रखने में बड़ी महारत थी।

उसके बचपन में यह अहलियत कम नज़र आती है बल्कि उसने अपने रवैये और बातों से अपने भाइयों की नफ़रत और हसद को भड़काया। लेकिन फ़ूतीफ़ार के घर और क़ैदख़ाने में उसे इस नेमत को फ़रोग़ देने के बहुत मवाक़े मिले। यह नहीं कि उसने लोगों पर ग़लत क़िस्म का क़ाबू पाने की कोशिश की। उसने यह नेमत अपने मालिक के फ़ायदे के लिए इस्तेमाल की (देखिए फ़ूतीफ़ार की अहलिया से इनकार)। जब उसके भाई मिसर आए तो उसकी महारत मुलाहज़ा कीजिए। उसने यों उनकी राहनुमाई की कि उसका पूरा मक़सद हासिल हुआ, यानी यह कि उसके भाई उसे ग़ुलामी में बेचने के गुनाह से पछताएँ, छोटे भाई बिनयमीन और बाप याक़ूब को मिसर ले आएँ और काल से बचने के लिए मिसर में रहें। और यह सब कुछ यों हुआ कि आख़िर तक भाइयों को शक तक न हुआ कि यह हमारा भाई यूसुफ़ है जो सब कुछ करवा रहा है।

यूसुफ़ की ज़िंदगी से हम यह सीखते हैं कि मैनेजर को लोगों के आपस में ताल्लुक़ात के बारे में इल्म रखना चाहिए। वह न सिर्फ़ दूसरों के साथ अपने ताल्लुक़ात और उनके आपस में ताल्लुक़ात पर ग़ौर करेगा बल्कि इस में उनकी राहनुमाई भी करेगा। जमात में किसी कारोबार की निसबत ताल्लुक़ात के बिगड़ने का ज़्यादा इमकान होता है, क्योंकि कारोबार में तो मुलाज़िमों को निकाला जा सकता है, लेकिन जमात में हम लोगों को इतनी जल्दी से निकाल नहीं सकते। फिर जमात में फ़रक़ फ़रक़ क़िस्म के लोग होते हैं—बूढ़े और बच्चे, बिज़नसमैन और किसान, सौदागर और मज़दूर, उस्ताद और तालिब-इल्म, सिपाही और ड्राइवर वग़ैरा। ख़ादिम को मुतवातिर लोगों के साथ अपने और दूसरों के आपस के ताल्लुक़ात को जाँचने की ज़रूरत है ताकि वह ग़लतफ़हमियाँ ख़त्म कर सके, मसायल हल कर सके, झगड़े शुरू शुरू में ही ख़त्म करा सके, सुलह करा सके और लोगों के दिल अपनी तरफ़ मायल कर सके। जब हालात बिगड़ जाते और लोग ग़ुस्से में आ जाते हैं तो उसे बहुत हिकमत की ज़रूरत होती है ताकि वह ताल्लुक़ात को बहाल करने में लोगों की मदद कर सके।

लेकिन इस में उसकी कोशिश यह नहीं होगी कि वह दूसरों को मजबूर करे बल्कि यह कि लोग ख़ुशी और आज़ादी से उसकी बात मान लें और इस में अपना फ़ायदा देख सकें। जमात का मैनेजर ताल्लुक़ात की राहनुमाई की यह नेमत ग़लत भी इस्तेमाल कर सकता है, लेकिन ऐसी कोशिशों से बरकत हासिल नहीं होगी। सच्चा मैनेजर लोगों की राहनुमाई इस वजह से नहीं करता कि उसकी हुक्मरानी फैल जाए और जमात के मेंबरान उसकी अनापरस्ती का शिकार बन जाएँ बल्कि वह उनकी राहनुमाई यों करता है कि उनके आपस में और उसके साथ ताल्लुक़ात बहाल हो जाएँ और वह मिलकर ख़ुशी से अपनी नेमतें जमात की ख़िदमत के लिए सर्फ़ करें। इसलिए कि वह महसूस करते हैं कि हमारा राहनुमा हमारा भाई है, वह हमारे बराबर है और हमारे और पूरी जमात के फ़ायदे के लिए हमारी राहनुमाई कर रहा है।

जमात के लिए अल्लाह की मरज़ी दरियाफ़्त करना

यूसुफ़ ख़्वाबों की ताबीर करने की लियाक़त रखता है। वह ज़िंदगी के हर मरहले पर ख़्वाबों की सहीह ताबीर करता है—बचपन में (पैदाइश 37:1-11), क़ैदख़ाने में (40 बाब) और फ़िरऔन की ख़िदमत के दौरान (41:25-32)। फ़िरऔन इसकी वजह बताता है। वह फ़रमाता है कि उस में ख़ुदा की रूह है, कि अल्लाह ने ख़ुद उसे यह सब कुछ समझा दिया है। इसलिए उसकी मानिंद दानिशवर और अक़्लमंद कोई नहीं (41:38-39)।

यूसुफ़ न सिर्फ़ ख़्वाबों की ताबीर करता है बल्कि इस ताबीर से मिसर के लिए ख़ुदा की मरज़ी भी निकालता है। वह फ़िरऔन को काल के सात सालों के दौरान बचने का सहीह तरीक़ा बताता है।

जमात के मैनेजर को भी जमात के लिए अल्लाह की मरज़ी जानने की अशद्द ज़रूरत है। ज़रूरी नहीं कि हमें ख़्वाब की सूरत में ख़ुदा की हिदायत मिले। लेकिन लाज़िम है कि हम अल्लाह के साथ चलें, वफ़ादार ख़ादिम ठहरें और उसकी मरज़ी जानने के लिए प्यासे रहें। हमारा सबसे बड़ा मसला शायद यह है कि हम पूरे दिल से उसकी मरज़ी को जानना नहीं चाहते। मुमकिन है हम मौजूदा हालात के बारे में मुतमइन हों और ख़ुदा की मरज़ी दरियाफ़्त करने से डरते हों। हो सकता है उसकी मरज़ी यह हो कि हम जमात के बिगड़े हुए ताल्लुक़ात बहाल करें या किसी दूसरी जगह पर नई जमात क़ायम करें।

इसलिए हम अपनी आँखें बंद करके फिरते हैं ताकि हमें अल्लाह के इरादे का पता न चले।

लेकिन कामयाब जमात के मैनेजर ऐसा नहीं करता। वह हालात से मुतमइन नहीं होता चाहे वह कितने ही पुरसुकून क्यों न लगें। वह हाल के लिए ख़ुदा की मरज़ी जानने का मुश्ताक़ रहता है, ऐसा न हो कि उसकी बेपरवाई से पूरी जमात को नुक़सान उठाना पड़े या वह उतनी बरकत हासिल न कर सके जितनी कि अल्लाह की मरज़ी थी।

जमात का मैनेजर ख़ुदा की मरज़ी न सिर्फ़ हाल के लिए जान लेता है बल्कि यूसुफ़ की तरह आगे भी सोचता है, क्योंकि जो काम हम आज करते हैं इसका असर अगले सालों पर पड़ेगा। यूसुफ़ के मशवरे से पहले सात साल मिसर की पैदावार जमा करने से काल का असर कम पड़ा। हमें सोचना चाहिए कि हाल के लिए रब की मरज़ी क्या है ताकि हमारी जमात को अगले पाँच-दस सालों में भी उसकी बरकत हासिल हो। जमात के वह राहनुमा अच्छा करते हैं जो बाक़ायदगी से मिलकर अगले सालों के लिए ख़ुदा की मरज़ी जानने की कोशिश करके रूहुल-क़ुद्स की हिदायत से मनसूबे बनाते रहते हैं।

इजतमाई मिलकियत में इज़ाफ़े की फ़िकर

जब यूसुफ़ फ़ूतीफ़ार के घर में था तो रब ने उसे कामयाबी बख़्शी और मालिक की मिलकियत में इज़ाफ़ा हुआ (पैदाइश 39:2-3,5)। इसी तरह जब वह क़ैदख़ाने का मुख़तार था तो ख़ुदा ने उसे कामयाबी बख़्शी।

यूसुफ़ को उस वक़्त भी कामयाबी हासिल हुई जब उसने मुल्के-मिसर को काल के असर से बचाने के लिए एक ईमर्जन्सी पलान तैयार की जिसके मुताबिक़ उसने पहले सात सालों के दौरान जब मुल्क में अच्छी-ख़ासी फ़सलें उगीं पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा लेकर जमा किया। बाद में जब काल आया तो यह जमाशुदा ग़ल्ला सोना बन गया, क्योंकि लोग न सिर्फ़ मिसर से बल्कि दूसरे ममालिक से भी ग़ल्ला ख़रीदने आए। और जब मिसरियों के पैसे ख़त्म हो गए तो उन्होंने अपनी ज़मीन और अपने आपको फ़िरऔन के हाथों बेच दिया। यों यूसुफ़ ने अपने मनसूबे से अपने मालिक यानी मिसर के बादशाह की मिलकियत बहुत ज़्यादा बढ़ा दी (47:13-26)।

हर जमात के मैनेजर को जमात की मिलकियत में इज़ाफ़ा करने को उव्वलियत देनी चाहिए। जमात की मिलकियत क्या है? उसका सबसे बड़ा ख़ज़ाना उसके मेंबरान हैं। जमात इमारत के बग़ैर गुज़ारा कर सकती है, लेकिन मेंबरान के बग़ैर जमात का वुजूद ही ख़त्म हो जाता है। और जमात का इज़ाफ़ा न सिर्फ़ तादाद के लिहाज़ से होता है बल्कि मह्यार के लिहाज़ से भी। चुनाँचे ख़ादिम को मुतवातिर इस पर ग़ौर करने की ज़रूरत है कि वह किस तरह जमात की तादाद और उसका मह्यार बढ़ा सके।

जब हम जमातों पर ग़ौर करते हैं तो बाज़ एक ऐसे ख़ादिम नज़र आते हैं जो इंतज़ाम चलाने और तादाद बढ़ाने की यह नेमत रखते हैं। उनके असर से मिट्टी सोने में बदल जाती है। जहाँ पहले कम मददगार थे वहाँ टीम की सूरत में उनकी बड़ी तादाद दिखाई देती है। जहाँ लोग ग़फ़लत की हालत में थे वहाँ बेदारी आ जाती है। जहाँ तालीम न होने के बराबर थी वहाँ लोग कलाम का मुतालआ करने लगते हैं। जमात न सिर्फ़ फलने-फूलने लगती है बल्कि उसके इर्दगिर्द नई जमातें क़ायम हो जाती हैं।

दो मैनेजर जो फ़ेल हुए

क्या आपने कभी शिब्नाह और इलियाक़ीम के बारे में सुना? हम इन दो मैनेजरों की ग़लतियों से मैनेजर के किरदार के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं।

शिब्नाह : ग़लत भरोसा रखनेवाला मैनेजर

यसायाह नबी शिब्नाह के बारे में नबुव्वत करता है,

> क़ादिरे-मुतलक़ रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, उस निगरान शिब्नाह के पास चल जो महल का इंचार्ज है। उसे पैग़ाम पहुँचा दे, 'तू यहाँ क्या कर रहा है? किसने तुझे यहाँ अपने लिए मक़बरा तराशने की इजाज़त दी? तू कौन है कि बुलंदी पर अपने लिए मज़ार बनवाए, चटान में आरामगाह खुदवाए? ऐ मर्द, ख़बरदार! रब तुझे ज़ोर से दूर दूर तक फेंकनेवाला है। वह तुझे पकड़ लेगा और मरोड़ मरोड़कर गेंद की तरह एक वसी मुल्क में फेंक देगा। वहीं तू मरेगा, वहीं तेरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्योंकि तू अपने मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना है। मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती अपने ओहदे और मंसब से फ़ारिग़ कर दिया जाएगा। (यसायाह 22:15-19)

शिब्नाह कौन था? यूसुफ़ की तरह वह ऐडमिनिस्ट्रेटर यानी मैनेजर था। उसकी मरकज़ी हैसियत थी, क्योंकि जो बादशाह के घर पर मुख़तार था, वह कम से कम बादशाह की ज़मीनों और पूरे माल का मैनेजर था। चुनाँचे उस पर बादशाह का ख़ास भरोसा था। ग़ालिबन उसका बादशाह के सिवा सबसे ऊँचा मंसब था।

जब यसायाह नबी ने ये बात फ़रमाई तो शिब्नाह चटान में अपनी शानदार क़ब्र खुदवा रहा था। सिर्फ़ निहायत अमीर लोग अपनी क़ब्र चटान में तराश सकते थे। यसायाह उसे तंज़िया अंदाज़ में शिब्नाह का घर क़रार देता है (आयत 16)। शिब्नाह का अंजाम मुक़र्रर हो चुका है। अल्लाह उसे अपने मंसब से बरतरफ़ करके दूर-दराज़ मुल्क में क्रिकेट बाल की तरह फेंक देगा। वहाँ वह मर जाएगा (आयात 17-19)।

ख़ुदा का ग़ज़ब क्यों शिब्नाह पर नाज़िल हुआ? उसका क्या गुनाह था? ज़ाहिर है वह अल्लाह की निगाह में अच्छा मैनेजर नहीं था, और यह बात क़ब्र के काम से ज़ाहिर होती है। इस में उसकी हक़ीक़ी सोच और रवैया नज़र आता है। चटान में अपनी क़ब्र बनवाना बहुत मुश्किल काम है, ऐसा काम जो सिर्फ़ अमीर करवा सकते थे। लिहाज़ा यह ऐशपसंदी और दौलत का इज़हार था। इससे लोग अपने आपको एक तरह से लाफ़ानी बनाना चाहते थे, क्योंकि इस तरह वह मौत के बाद भी दूसरों को याद रहेंगे। इस सोच की सबसे आला मिसाल मिसर के अहराम (पिरामिड) हैं।

लेकिन शिब्नाह का गुनाह इससे सख़्त था। यरूशलम असूरियों के हमले की तवक़्क़ो कर रहा था। चुनाँचे पूरे शहर में ख़ूब तैयारियाँ हो रही थीं। लगता था कि न कोई इनसान न ख़ुदा उन्हें उस ज़ालिम और ताक़तवर दुश्मन से बचा सकता है। यसायाह उनकी तैयारियों की फ़हरिस्त पेश करता है,

> तुमने उन मुतअद्दिद दराड़ों का जायज़ा लिया जो दाऊद के शहर की फ़सील में पड़ गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए तुमने यरूशलम के मकानों को गिनकर उन में से कुछ गिरा दिए। साथ साथ तुमने निचले तालाब का पानी जमा किया। ऊपर के पुराने तालाब से निकलनेवाला पानी जमा करने के लिए तुमने अंदरूनी और बैरूनी फ़सील के दरमियान एक और तालाब बना लिया। (यसायाह 22:9-11)

शहर की फ़सील को ख़ूब मज़बूत किया गया है और असूरियों का मुहासरा बरदाश्त करने के लिए पानी जमा करने का इंतज़ाम भी बेहतर किया गया है। क्या अपना दिफ़ा करना गुनाह था? हरगिज़ नहीं। उनका गुनाह बयान किया गया है,

> लेकिन अफ़सोस, तुम उसकी परवा नहीं करते जो यह सारा सिलसिला अमल में लाया। उस पर तुम तवज्जुह ही नहीं देते जिसने बड़ी देर पहले इसे तशकील दिया था। (यसायाह 22:11)

उनका गुनाह यह था कि उन्होंने अपने ख़ुदा पर एतबार न किया जिसने उन्हें अब तक महफ़ूज़ रखा और सब कुछ मुहैया किया था। ख़ुदा ने दुश्मन इसलिए खड़ा किया था ताकि वह रोएँ, मातम करें, अपने सर मुँडवाएँ, टाट से अपनी कमर बाँधें और यों तौबा करके दुबारा अल्लाह के सच्चे परस्तार बन जाएँ (आयत 17)। लेकिन अफ़सोस, उन्होंने अपने ख़ुदा के साथ बिगड़े हुए ताल्लुक़ात पर दुख का इज़हार न किया बल्कि बेदीनों का रवैया इख़्तियार कर लिया,

> तमाम लोग शादियाना बजाकर ख़ुशी मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और भेड़-बकरियों को ज़बह किया जा रहा है। सब गोश्त और मै से लुत्फ़अंदोज़ होकर कह रहे हैं, “आओ, हम खाएँ पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।” (यसायाह 22:13)

यरूशलम के बाशिंदों को ईमानदार की ख़ुशी और इतमीनान हासिल नहीं। उन्हें उस आदमी की तसल्ली और सुकून हासिल नहीं जो जानता है कि अल्लाह मेरे साथ है। इसके बरअक्स लोगों की उम्मीद जाती रही है। उनके नज़दीक न इनसान उनको नजात दिला सकता है न ख़ुदा, इसलिए बेहतर है कि मरने से पहले आख़िरी बार अपने माल से लुत्फ़ उठा लें। यह सोच पूरी की पूरी दुनियावी है, क्योंकि यह अल्लाह पर भरोसे से ख़ाली है।

शिब्नाह की क़ब्र इस रवैये का उरूज है। इस में यरूशलम के शहरियों का रवैया बहुत नुमायाँ तौर पर ज़ाहिर होता है। यानी ऐसा रवैया जो ख़ुदा की इसराईल पर अदालत के लिए अंधा हो गया है और जिसकी निगाह ग़ैरसेहतमंद अंदाज़ में पूरी तरह दुनियावी चीज़ों पर मरकूज़ हो गई है। यह ऐसा रवैया है जो शानदार गोर की सूरत में अपने लिए शोहरत और ला-फ़ानियत हासिल करने की सिर-तोड़ कोशिश कर रहा है जबकि उसे क़ादिरे-मुतलक़ के ग़ज़ब को पहचानकर टाट से मुलब्बस होना चाहिए।

ग़रज़ शिब्नाह वफ़ादार मैनेजर नहीं है। वह मैनेजर की मनफ़ी मिसाल है। उसे अपने ख़ानदान और क़ौम की ग़ैरईमानदार हालत के लिए फ़िकर होनी चाहिए थी। उसने शहर के दिफ़ा का बंदोबस्त तो मुकम्मल कर लिया, लेकिन वह शहर के हक़ीक़ी मुहाफ़िज़

ख़ुदा के लिए अंधा था। उसने पानी जमा करने का इंतज़ाम तो कर लिया, लेकिन शुरू से पानी मुहैया करनेवाले ख़ुदा के बारे में सोचा तक नहीं। उसका भरोसा अल्लाह पर नहीं था, इसलिए उसने एक दिन अपने दिफ़ा के काम पर तकते हुए सोचा, "शायद हम इससे महफ़ूज़ रहें।" दूसरे दिन वह रोया, "आओ खाएँ और पिएँ, क्योंकि कल तो हम मरेंगे।" और तीसरे दिन उसने हिसाब लगाया, "कम से कम मेरे ख़ानदान के नाम को शानदार और मशहूर महल जैसी क़ब्र से शोहरत और ला-फ़ानियत मिले, चाहे शहर बरबाद भी हो जाए।"

शिब्नाह की मिसाल हमारे सामने रहनी चाहिए। क्या आप इस मरकज़ी बात में वफ़ादार मैनेजर हैं? या क्या आप ग़लत भरोसा रखनेवाले हैं? शायद आप एहतजाज करें, "नहीं, कभी भी नहीं! मैं अल्लाह पर पूरा भरोसा रखता हूँ।" लेकिन ग़ौर से अपने दिल को परखें। जब इस दुनिया के दुश्मन यानी मौत, बीमारी, माली मसायल वग़ैरा आपको घेर लेते हैं तो क्या आप वाक़ई ख़ुदा की तरफ़ देखते हैं? या आप मुहासरे के दौरान अपने दिफ़ा के लिए अपने तैयारकरदा इंतज़ामात पर एतमाद रखते हैं? क्या आप हर हालत में अपने और जमात के मेंबरान के अल्लाह के साथ ताल्लुक़ात को बहाल रखने की कोशिश करते हैं? या आपने अपने लिए शानदार क़ब्र बनाई है जिसकी असल में कोई रूहानी क़दर नहीं है? मुमकिन है क़ब्र की सूरत फ़रक़ हो। शायद वह जमात की इबादतख़ाना, कोई इदारा या जमात की कोई प्रोजैक्ट हो जो आपने अपनी शोहरत बढ़ाने के लिए क़ायम किया हो। अगर आपका भरोसा ख़ुदा पर नहीं तो यह सब कुछ अबस होगा बल्कि अल्लाह के ग़ज़ब का बाइस बन सकता है।

इलियाक़ीम : रिश्तों के तहत दबनेवाला मैनेजर

फिर यसायाह नबुव्वत करता है कि शिब्नाह की जगह इलियाक़ीम को मुक़र्रर किया जाएगा,

> उस दिन मैं अपने ख़ादिम इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा। मैं उसे तेरा ही सरकारी लिबास और कमरबंद पहनाकर तेरा इख़्तियार उसे दे दूँगा। उस वक़्त वह यहूदाह के घराने और यरूशलम के तमाम बाशिंदों का बाप बनेगा। मैं उसके कंधे पर दाऊद के घराने की चाबी रख दूँगा। जो दरवाज़ा वह खोलेगा उसे कोई बंद नहीं कर सकेगा, और जो दरवाज़ा वह बंद करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। (यसायाह 22:20-22)

शिब्नाह का सरकारी लिबास और कमरबंद उसकी वरदी था। यह उसके इख़्तियार के निशान थे। चुनाँचे जब यह चीज़ें इलियाक़ीम को दी जाती हैं तो इस अमल से उस पर शिब्नाह का इख़्तियार मुंतक़िल हो जाता है।

यह दिलचस्पी से ख़ाली नहीं कि शिब्नाह और इलियाक़ीम का ज़िक्र 1 सलातीन 18:18 और यसायाह 36:3 में भी मिलता है। वहाँ इलियाक़ीम शिब्नाह की जगह पर यानी महल का इंचार्ज मुक़र्रर किया जा चुका है और शिब्नाह का दर्जा कम है यानी वह मीरमुंशी है। मतलब है कि उस वक़्त यसायाह की नबुव्वत का पहला हिस्सा पूरा हो चुका था जबकि अब तक दूसरा हिस्सा पूरा नहीं हुआ था कि उसे गेंद की तरह इसराईल से बाहर फेंक दिया जाएगा।

बाप का इख़्तियार हासिल

ख़ुदा इलियाक़ीम को "अपना ख़ादिम" कहता है। वह अल्लाह का वफ़ादार मैनेजर होगा। ख़ुदा उसके काम से ख़ुश होगा। वह न सिर्फ़ हुकूमत करेगा बल्कि यरूशलम के शहरियों के लिए बाप की हैसियत रखेगा। इस लफ़्ज़ "बाप" में वह सब कुछ पिनहाँ है जो शिब्नाह को हासिल नहीं है। हम देख चुके हैं कि शिब्नाह रब पर भरोसा नहीं रखता था। वह अपने और रिआया के ख़ुदा के साथ ताल्लुक़ात के लिए फ़िकरमंद नहीं था बल्कि उसने सिर्फ़ दुनियावी चीज़ों को अपनी तवज्जुह का मरकज़ बनाया। इसके बरअक्स इलियाक़ीम अपने मुल्क के बाशिंदों का बाप होगा। न सिर्फ़ यह कि वह ख़ुद अल्लाह पर भरोसा रखेगा बल्कि वह इसकी फ़िकर रखेगा कि शहरियों के ख़ुदा के साथ और एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात बहाल हो जाएँ। यह तो सच्चे बाप का निशान है कि वह अपने बच्चों के लिए फ़िकरमंद रहता है। वह चाहता है कि वह बढ़ें, तरक़्क़ी करें, किरदार के लिहाज़ से पुख़्ता हो जाएँ, अल्लाह के सच्चे और वफ़ादार परस्तार बन जाएँ, एक दूसरे के साथ सुलहो-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारें।

दाऊद के घर पर इख़्तियार हासिल

इलियाक़ीम को दाऊद के घर की कुंजी मिलेगी। यह छोटी-सी चाबी नहीं है जो जेब में डाली जा सकती है बल्कि इतनी बड़ी है कि उसके कंधों पर रखी जाती है। कुंजी देने से क्या मुराद है? दाऊद का घर बादशाह का घर है। जिसके पास उसकी चाबी है वह घर

को बंद कर सकता और उसे खोल सकता है। ऐसी चाबी सिर्फ़ उसको दी जाती है जिसे घर पर पूरा इख़्तियार हो, यानी ख़ुद घर के मालिक को या उस मुलाज़िम को जो उसकी जगह घर सँभालता है। चुनाँचे कुंजी को इलियाक़ीम के सपुर्द करने का मतलब यह है कि उसे बादशाह के घर और नतीजे में पूरे मुल्क पर इख़्तियार हासिल है। यह उसका अपना इख़्तियार नहीं है बल्कि बादशाह का। उसे यह काम बादशाह की जगह सँभालने के लिए दिया गया है। वह सिर्फ़ और सिर्फ़ बादशाह की मरज़ी पूरी करने से बादशाह का वफ़ादार मुख़तार साबित होगा।

रिश्तों का ख़तरा

फिर हम आगे पढ़ते हैं,

> वह खूँटी की मानिंद होगा जिसको मैं ज़ोर से ठोंककर मज़बूत दीवार में लगा दूँगा। उससे उसके बाप के घराने को शराफ़त का ऊँचा मक़ाम हासिल होगा।
>
> लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा वज़न उसके साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार, तमाम छोटे बरतन प्यालों से लेकर मरतबानों तक उसके साथ लटक जाएँगे। रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि उस वक़्त मज़बूत दीवार में लगी यह खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर जाएगी, और उसके साथ लटका सारा सामान टूट जाएगा।
> (यसायाह 22:23-25)

इलियाक़ीम को खूँटी कहा जाता है यानी वह एक आला क़िस्म का कील होगा जिसे यों दीवार में ठोंका जाएगा कि बहुत वज़नी चीज़ें उसके साथ लटकाई जा सकें। यह भी कामयाब मैनेजर की एक अलामत है : वह बहुत कुछ बरदाश्त कर सकता है। इसके बावुजूद एक वक़्त आएगा जब लोग उस पर यों टूट पड़ेंगे कि वह उनके बोझ तले कराहने लगेगा। काफ़ी देर तक वह दूसरों का बोझ उठा सकेगा और इससे उसके सारे रिश्तेदारों को भी इज़्ज़त और सुकून हासिल होगा। लेकिन रफ़्ता रफ़्ता रिश्तेदारों का बोझ इतना बढ़ जाएगा कि एक दिन वह दीवार से निकलकर गिर पड़ेगा। चुनाँचे आख़िरकार इलियाक़ीम भी फ़ेल हो जाएगा और साथ ही उसके रिश्तेदार भी।

ग़ौर करें कि इलियाक़ीम का अपना किरदार मज़बूत है, लेकिन उसकी बिरादरी उसे यों मजबूर करेगी कि आख़िरकार वह नाकाम हो जाएगा। ऐ जमात के राहनुमा, इससे

सबक़ सीखें। कितने ख़ादिम और राहनुमा शुरू शुरू में बहुत अच्छी ख़िदमत सरंजाम देते हैं, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता वह ख़ानदान के बोझ तले दब जाते हैं। उनके ख़ानदानी हालात बिगड़ जाते हैं, आपस में ताल्लुक़ात ख़राब हो जाते हैं या ख़ानदान का कोई फ़रद नशे का शिकार हो जाता है या रिश्तेदारी का दबाव जमात के इंतज़ाम पर आन पड़ता है।

वह ख़ादिम ख़ुदा का शुक्र करे जिसके रिश्तेदार जमात और उसके लिए बरकत का बाइस हैं। लेकिन जमात के हर मैनेजर का यह फ़र्ज़ है कि वह हमेशा रिश्तेदारों के जमात पर बुरे असर के लिए हस्सास रहे। हो सकता है कि ज़रा-सी सुस्ती से किसी रिश्तेदार के फ़ेल से उसकी ख़िदमत पर बुरा असर पड़ जाए।

फ़र्ज़ करें आपके वालिद या बड़े भाई आपको कोई ऐसा हुक्म दें जो अल्लाह की मरज़ी और जमात की बहबूदी के ख़िलाफ़ हो। क्या आप इनकार कर सकेंगे? सिर्फ़ वह ख़ादिम कामयाब रहेगा जो ख़ुदा की मरज़ी को अपने तमाम रिश्तेदारों पर तरजीह देता है।

जमात का इख़्तियार : आसमान की बादशाही की कुंजियाँ

एक बार ईसा मसीह पतरस से फ़रमाता है,

> मैं तुझे आसमान की बादशाही की कुंजियाँ दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी बँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह आसमान पर भी खुलेगा। (मत्ती 16:19)

कुछ यह आयत यों समझते हैं कि सिर्फ़ पतरस रसूल को यह इख़्तियारे-आला हासिल हुआ और कि उस वक़्त से यह इख़्तियार सिर्फ़ रोम के पोप को हासिल है। लेकिन यही बात एक और जगह अल-मसीह की पूरी जमात के बारे में कही गई है,

> मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम ज़मीन पर बाँधोगे आसमान पर भी बँधेगा, और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा। (मत्ती 18:18)

आसमान की बादशाही की कुंजी क्या है? यसायाह 22 की रौशनी में ज़ाहिर है कि यहाँ भी मैनेजर की तरफ़ इशारा है यानी जमात आसमानी बादशाह की ज़मीन पर

मुख़तार या मैनेजर है। चूँकि इसे यह इख़्तियार हासिल है, इसलिए इसे बादशाही की कुंजियाँ दी गई हैं। और यों हम पौलुस रसूल की तरफ़ वापस आ गए हैं जिसने अपने आपको अल्लाह के भेदों का मुख़तार समझा। यह जमात और जमात के राहनुमाओं का अपना इख़्तियार नहीं बल्कि आसमानी बादशाह का इख़्तियार है। लिहाज़ा ख़ादिम का इख़्तियार इस पर मुनहसिर है कि वह वफ़ादार मैनेजर साबित हो और अपने मालिक की हिदायात के मुताबिक़ काम करे। जो वफ़ादार न निकले उसे शिब्नाह की तरह अपने ओहदे से बरतरफ़ कर दिया जाएगा। चुनाँचे मग़रूर होने का कोई इमकान नहीं बल्कि हर ख़ादिम को काँपते हुए अपनी ख़िदमत अंजाम देनी चाहिए, यह जानते हुए कि अगर मैं ख़ुदा तआला की मरज़ी पूरी न करूँ तो यह एज़ाज़ मझसे छिन जाएगा।

ग़रज़ जमात के राहनुमा सिर्फ़ कलाम की हिदायात के मुताबिक़ मैनेजर के फ़रायज़ अदा कर सकते हैं। जिस क़दर वह इसके मुताबिक़ ख़िदमत करेंगे और जमात का पूरा इंतज़ाम चलाएँगे उसी क़दर वह कामयाब और दियानतदार ठहरेंगे। हमारी कुंजी ख़ुदा का कलाम है। इसे छोड़ेंगे तो अपना पूरा इख़्तियार खो बैठेंगे। यहाँ पतरस की मिसाल इबरतनाक है। मसीह को पतरस की तारीफ़ करने के फ़ौरन बाद उसे डाँटना पड़ा,

> शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की। (मत्ती 16:23)

क्या जमात के राहनुमा और ख़िदमतगुज़ार यह इल्म रखते हैं कि उनकी ख़िदमत ख़तरे से ख़ाली नहीं है? कि एक तरह से उन्हें आलातरीन एज़ाज़ हासिल हुआ है लेकिन दूसरी तरफ़ अगर वह दियानतदार न ठहरें तो उसका ग़ज़ब उन पर नाज़िल होगा।

4

चरवाहा

> चुनाँचे ख़बरदार रहकर अपना और उस पूरे गल्ले का ख़याल रखना जिस पर रूहुल-क़ुद्स ने आपको मुक़र्रर किया है। निगरानों और चरवाहों की हैसियत से अल्लाह की जमात की ख़िदमत करें, उस जमात की जिसे उसने अपने ही फ़रज़ंद के ख़ून से हासिल किया है। (आमाल 20:28)

जब पौलुस रसूल ने यह कुछ कहा तो वह अपने तीसरे और आख़िरी तबलीग़ी दौरे के तक़रीबन इख़्तिताम पर था। वह जहाज़ के ज़रीए मीलेतुस शहर की बंदरगाह तक पहुँच गया था जो इफ़िसुस शहर के क़रीब था। वहाँ से उसने इफ़िसुस शहर के बुज़ुर्गों को बुलाया (आमाल 20:12-17)।

हम इफ़िसुस में पौलुस रसूल की ख़िदमत के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। उसने निसबतन ज़्यादा वक़्त यहीं गुज़ारा, क्योंकि वह तक़रीबन अढ़ाई साल इफ़िसुस में रहा।[1] इस दौरान यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के कुछ शागिर्दों को पौलुस के ज़रीए रूहुल-क़ुद्स का बपतिस्मा मिला (19:1.7) और कई एक यहूदी ईमान लाए (19:8-9)। ग़ैरयहूदियों पर भी बड़ा असर पड़ा। बहुतेरों को शफ़ा और बदरूहों से आज़ादी मिली (19:11-20)। लोग बुतपरस्ती छोड़ने लगे। यह देखकर बुत बनानेवाले सुनारों ने दीगर शहरियों के साथ पौलुस और उसके साथियों के ख़िलाफ़ जुलूस निकाला जिससे वह बाल बाल बचे (19:23–20:1)।

[1] आमाल 19:10; 20:31 में यहूदी हिसाब के मुताबिक़ मजमुई तौर पर तीन साल कहा गया है।

ग़रज़ पौलुस इफ़िसुस शहर से ख़ूब वाक़िफ़ था और उसके हाथ से बहुत कुछ हुआ था। जब उसने इफ़िसुस के बुज़ुर्गों को बुलाया तो उसे इल्म था कि वह इसके बाद कभी उनसे नहीं मिलेगा। इसलिए वह उन्हें बुज़ुर्ग बाप की हैसियत से अपनी वसियत पेश करना चाहता था। वह जमात का इंतज़ाम चलाने के मशवरे देना चाहता था ताकि जमातें क़ायम और पुख़्ता रहें।

जिस आयत का ज़िक्र हुआ है वह पौलुस के इस वसियतनामे में मरकज़ी हैसियत रखती है। इससे पता चलता है कि जमात के राहनुमा पौलुस के नज़दीक चरवाहों की हैसियत रखते हैं। इसकी क्या वजह है?

तौरेत के ज़माने में चरवाहे का काम इसराईलियों के ख़ून में रचा हुआ था। इसराईलियों के आबाओ-अजदाद चरवाहे थे, और उनकी दौलत उनके गल्लों की बहबूदी पर मुनहसिर थी। लिहाज़ा उनकी पूरी ज़िंदगी भेड़-बकरियों के गिर्द घूमती थी। उनकी सबसे बड़ी फ़िकर चारा और पानी था, और इसे हासिल करने के लिए कई झगड़े पैदा हुए (मसलन पैदाइश 13; 26:20-26)। यही वजह है कि याक़ूब बिस्तरे-मर्ग पर ख़ुदा को वह लक़ब देता है जो उसके नज़दीक सबसे आला हैसियत रखता है यानी चरवाहे का लक़ब,

> अल्लाह जिसके हुज़ूर मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक़ चलते रहे और जो शुरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे। (पैदाइश 48:15)

मूसा की ज़िंदगी में भी गल्लाबानी का काम ख़ास अहमियत का हामिल है। जब वह चालीस साल की उम्र में मिसर से फ़रार होकर मुल्के-मिदियान को गया तो उधर वह चालीस साल तक गल्लाबान रहा (ख़ुरूज 7:7 बमुक़ाबला आमाल 7:23-24)। पहले उसने मिसर में शहज़ादे की हैसियत से मिसरी उलूमो-फ़ुनून सीखे थे, लेकिन अब उसे गल्लाबानी का फ़न सीखना पड़ा। इस में बेशक रब की मरज़ी थी कि वह अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने से पहले गल्लाबानी का काम सीखे।

दाऊद बादशाह भी बचपन में गल्लाबान था। लगता है कि यों ख़ुदा ने उसे इसराईलियों की सहीह गल्लाबानी करने के लिए तैयार किया। दाऊद पर इस काम का असर इस में ज़ाहिर होता है कि उसने अल्लाह का चरवाहे के साथ मुक़ाबला ख़ूबसूरत ज़बूर 23 में किया, “रब मेरा चरवाहा है।” क्या अजब कि नातन नबी ने दाऊद को समझाते वक़्त अमीर और ग़रीब गल्लाबानों की तमसील पेश की (2 समुएल 12:1-6)। बाद के नबी यरमियाह और हिज़क़ियेल भी समझते थे कि राहनुमा चरवाहे की हैसियत रखते हैं (मसलन यरमियाह 23:1-8; हिज़क़ियेल 34)।

इंजील में भी यही लक़ब इस्तेमाल हुआ है। ईसा अल-मसीह अपने बारे में फ़रमाता है, "अच्छा चरवाहा मैं हूँ" (यूहन्ना 10:11)। और पतरस रसूल फ़रमाता है कि जमात के बुज़ुर्ग गल्लाबानी का काम करते हैं जबकि उनका सरदार गल्लाबान ईसा मसीह है (1 पतरस 1:5 ओ-माबाद)।

ग़रज़ कलाम के मुताबिक़ जमात के राहनुमा चरवाहे हैं। लेकिन जमात के चरवाहे का काम है क्या? आइए हम दुबारा पौलुस की उन बातों पर ग़ौर करें, जो उसने इफ़िसुस के बुज़ुर्गों को बताईं।

सरदार गल्लाबान से लिपटा रहना

पौलुस रसूल को इस वजह से इतमीनान है कि उसकी ज़िंदगी अच्छे चरवाहे ईसा अल-मसीह के हाथ में है। वह जानता है कि थोड़े दिनों के बाद उसे क़ैद और मुख़्तलिफ़ मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि रूहुल-क़ुद्स ने उसे यह ख़बर बार बार मुख़्तलिफ़ लोगों के ज़रीए पहुँचाई है (आमाल 20:22-23)। ताहम उसे यक़ीन है कि उसे यरूशलम और दुख की तरफ़ क़दम उठाना है, क्योंकि वह अपने आपको "रूहुल-क़ुद्स से बँधा हुआ" समझता है। सो एक तरह से उसे मुसीबतों से आगाह किया गया है, और उसके पास इन मुसीबतों से बच निकलने की पूरी आज़ादी है। दूसरी तरफ़ वह अपने सरदार गल्लाबान की बादशाही फैलाने में मदद करना चाहता है और जानता है कि मुसीबतों में फँस जाने से यह मक़सद बेहतर तौर पर पूरा हो जाएगा।

फ़ज़्ल के तहत ख़िदमत

पौलुस की इस जिद्दो-जहद के पीछे क्या ख़याल है? क्या वह अज्र पाना चाहता है? क्या वह यह यक़ीन रखता है कि इस अमल से तमाम गुनाहों की माफ़ी हासिल होगी? कि शायद उसके इस काम से उसकी नजात और फ़िरदौस में फ़ौरन दाख़िला यक़ीनी हो जाएगा? हमें इसका जवाब आयत 24 में मिलता है। वहाँ वह फ़रमाता है कि मेरी

> ज़िम्मेदारी यह है कि मैं लोगों को गवाही देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उनके लिए क्या कुछ किया है।

फ़ज़ल की ख़ुशख़बरी उसके अपने ईमान की बुनियाद है। यह उसका अपना तजरिबा था। ईमान लाने से पहले जब वह मसीह के पैरोकारों को ईज़ा पहुँचा रहा था तो मसीह ने ख़ुद उसे अपनी गिरिफ़्त में लेकर अपनी तरफ़ खींच लिया। इससे पहले पौलुस रसूल शरीअत पर अमल करने पर फ़ख़्र करता था। वह समझता था कि मैं बेगुनाह और अपने नेक कामों की बिना पर अल्लाह को मंज़ूर हूँ। लेकिन उस दिन जब उसे दमिश्क़ के नज़दीक मसीह का सामना हुआ तो उसको पता चला कि मेरी अपनी कोशिशें सिफ़र हैं बल्कि मैं अपनी कोशिश से ख़ुदा के सच्चे परस्तारों को दुख पहुँचा रहा था यह समझते हुए कि मैं नेक काम कर रहा हूँ। ईसा अल-मसीह मेरा अज़ीम चरवाहा है। उसका सलीब पर काम मेरा सब कुछ है। मैं अपनी नजात अपनी कोशिशों से हासिल नहीं कर सकता, न इसकी ज़रूरत ही है, क्योंकि मेरे आक़ा ने मेरे लिए सलीब पर सब कुछ कर दिया है।

जब हमारी ख़िदमत की बुनियाद अल्लाह का फ़ज़ल है तब ही हमें इतमीनान और सुकून हासिल होता है। जब मुझे इल्म है कि मुझे अपनी ख़िदमत से सवाब पाने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि मसीह ने पहले से सब कुछ कर दिया है तब ही मेरी ख़िदमत पुख़्ता है। मेरी ख़िदमत असल में सरदार गल्लाबान के सपुर्द है। सब कुछ उसी के हाथ में है। फिर परेशानी दूर हो जाती है। पौलुस ख़ुद इस फ़ज़ल के तहत रहता है और उसकी ख़िदमत का मरकज़ी हिस्सा यह है कि दूसरे फ़ज़ल की यह ख़ुशख़बरी समझ पाएँ। ख़ासकर बुज़ुर्गों को यह समझना चाहिए ताकि ख़ुदा का फ़ज़ल उनकी ज़िंदगियों, कामों और बातों की बुनियाद बन जाए।

पौलुस को पूरा भरोसा है कि यह फ़ज़ल सबसे सख़्तदिल को भी नरम कर सकता है, लिहाज़ा वह फ़रमाता है,

> अब मैं आपको अल्लाह और उसके फ़ज़ल के कलाम के सपुर्द करता हूँ। यही कलाम आपकी तामीर करके आपको वह मीरास मुहैया करने के क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस किए गए लोगों को देता है। (आमाल 20:32)

कितने ज़रूरी है कि हम अपने आपको और दूसरों को इस फ़ज़ल के सपुर्द करें! हमारी जमातें और तनज़ीमें जाती रहेंगी, दुनियावी हालात बिगड़ते जाएँगे, लेकिन उसका फ़ज़ल कभी नहीं बदलेगा। वह अबद तक क़ायम रहेगा। वह अपने लिए जगह बना लेगा और जीतेगा। क्यों? इसलिए कि हमारे सरदार चरवाहे को पूरा इख़्तियार हासिल

है। चुनाँचे दूसरों की मुख़ालफ़त और नफ़रत से न घबराएँ। दुनिया और जहन्नुम की तमाम ताक़तें अल्लाह के फ़ज़ल के कलाम पर फ़तह नहीं पा सकतीं।

फ़ज़ल से क्या मुराद है? पहले यह कि हम ख़ुद इस फ़ज़ल का तजरिबा हासिल करें। जब हमें ख़ुदा का फ़ज़ल हासिल हुआ हो, तब ही हम फ़ज़ल की ख़िदमत कर सकते हैं। इसके लिए लाज़िम है कि हम सरदार गल्लाबान की राहनुमाई में चलने के लिए तैयार रहें। अगर मेरा उसके साथ ताल्लुक़ सहीह हो तो वह मुझे तरबियत देता रहेगा और बार बार मेरे अंदर हैरानी का एहसास पैदा करेगा कि उसने मुझ जैसे नाक़िस और अंधे इनसान को क़बूल किया, कि वह मुझे गल्लाबानी की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल करना चाहता है। जब मेरे अंदर हमेशा अपने नालायक़ होने का एहसास होगा और मैं सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने सरदार गल्लाबान और उसके फ़ज़ल से चिमटा रहूँगा तब ही मेरी ख़िदमत मुअस्सर होगी।

अपनी ख़िदमत पर ग़ौर कीजिए। जब जमात में कोई मेम्बर किसी संगीन गुनाह में गिर जाता है तो क्या आपका उसके साथ सुलूक फ़ज़ल के तहत होता है? हमारे सरदार गल्लाबान का फ़ज़ल तक़ाज़ा करता है कि हम ऐसे आदमी से न कतराएँ और न ही उसके गुनाह को नज़रंदाज़ करें बल्कि मुहब्बत से उसे वापस लाने की पूरी कोशिश करें। सरदार गल्लाबान 99 भेड़ों को छोड़कर भटकती भेड़ को ग़लत रास्ते से ढूँड निकालता है। लिहाज़ा हम कौन हैं कि फ़रक़ अंदाज़ अपनाएँ?

टीम की सूरत में ख़िदमत करना

पौलुस रसूल अकेला ख़िदमत नहीं करता था। उसके कई साथियों का ज़िक्र है, मसलन सोपतरुस बेरिया शहर से, अरिस्तरख़ुस और सिकुंदुस शिमाली यूनान के शहर थिस्सलुनीके से थे। गयुस और तीमुथियुस हाल के तुरकी के अंदरूनी इलाक़े गलतिया से, तुख़िकुस और त्रुफ़िमुस मौजूदा तुरकी के मग़रिबी साहिल इफ़िसुस से थे (आमाल 20:4-5)। इनके अलावा “हम” का ज़िक्र है (20:5 ओ-माबाद)। ग़ालिबन इससे लूक़ा और उसके चंद साथियों की तरफ़ इशारा है। बहर हाल पौलुस के बहुत-से ख़िदमतगुज़ार साथी थे।

यह बात नोट करना इसलिए अहम है कि हम अकसर औक़ात पौलुस और दूसरे रसूलों को रूहानी सूरमे तसव्वुर करते हैं जिन्हें किसी और की मदद की ज़रूरत नहीं थी। लेकिन

आमाल की पूरी किताब में यह हक़ीक़त नज़र आती है कि रसूल और ख़ासकर पौलुस दूसरे बहुत-से लोगों के साथ मिलकर ख़िदमत करते थे (13:1-2; 16:1-4 वग़ैरा)।

इसकी शायद सबसे बड़ी वजह अल-मसीह का नमूना है। अपनी ख़िदमत की इब्तिदा में उसने बारह साथी चुन लिए जो उससे सीखते और उसकी मदद करते थे और जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसकी तालीम फैलाई।

टीम से ख़िदमत का ज़्यादा असर

पौलुस जानता था कि जो अकेला है वह कमज़ोर है। अल्लाह की मरज़ी यह है कि हम भाइयों और बहनों की हैसियत से मिलकर ख़िदमत करें। यह उसूल जमातों में नज़र आता है। जहाँ जहाँ जमात के ख़िदमतगुज़ार मिलकर ख़िदमत करते हैं वहाँ ख़िदमत ज़्यादा मुअस्सर है और जमात की ज़िंदगी ज़्यादा तरक़्क़ीयाफ़्ता और तरो-ताज़ा है।

टीम से मज़ीद राहनुमाओं की तैयारी

पौलुस रसूल की ख़िदमत का यह पहलू बहुत अहम था। हम देख चुके हैं कि उसके साथी हाल के तुरकी और यूनान से थे यानी उन इलाक़ों से जहाँ उसने ख़िदमत की थी। यों वह पौलुस के साथ चलते हुए उससे तालीम हासिल करते और साथ साथ उसके नमूने से सीखते रहे। बेशक इस क़िस्म की तरबियत किसी भी इदारे की तालीम से बेहतर थी, क्योंकि यह न सिर्फ़ ख़ाली तालीम थी बल्कि रोज़ाना इसका इतलाक़ भी होता रहा। चुनाँचे उसके शागिर्दों ने उसकी तालीम के हर पहलू की अमली सूरत सीख ली।

साथ साथ पौलुस रसूल हर एक का किरदार जाँच सकता था, उनकी नेमतों को दरियाफ़्त करके उभार सकता था और हर एक को मशवरे और हिदायात दे सकता था। फिर एक वक़्त आया जब यह साथी अपनी अपनी जमातों में वापस चले गए और वहाँ ख़िदमत सरंजाम देने लगे। जो कुछ उन्होंने पौलुस रसूल से सीख लिया था उसे वह दूसरों को सिखाने लगे। और बेशक उनका पहला क़दम भी यह था कि उन्होंने जमातों में से ऐसे लायक़ शागिर्द चुन लिए जो उनके साथ मिलकर ख़िदमत करते और उनसे सीखते थे।

टीम से ग़लतियों से बचाव

जब जमात के राहनुमाओं का गुरोह सलाह-मशवरे के बाद फ़ैसला करता है तो ग़लती का इतना इमकान नहीं रहता। चुनाँचे हम देखते हैं कि जमात के राहनुमा एक दूसरे के साथ मशवरा करके फ़ैसले करते थे (देखिए आमाल 15)। नीज़, जब हम टीम की सूरत में ख़िदमत करते हैं तो एक दूसरे को नसीहत और तंबीह कर सकते हैं। मसलन अगर मझसे कोई ग़लती सरज़द हो तो दूसरे मुझे इससे आगाह कर सकते हैं। यों मैं तरक़्क़ी कर सकता हूँ। इसके मुक़ाबले में जब सिर्फ़ एक ख़ादिम का राज हो तो कोई उसे तंबीह करने की जुरअत नहीं करेगा। चुनाँचे वह तरक़्क़ी नहीं कर सकता।

इब्तिदाई जमात के लोग इस तरह आज़ादी से एक दूसरे को तंबीह करते थे। एक मौक़े पर पौलुस रसूल को खुले तौर पर पतरस रसूल को तंबीह करना पड़ा। वह फ़रमाता है,

> जब पतरस अंताकिया शहर आया तो मैंने रूबरू उसकी मुख़ालफ़त की, क्योंकि वह अपने रवैये के सबब से मुजरिम ठहरा। (गलतियों 2:11)

इससे उनका ताल्लुक़ मुंक़ते न हुआ बल्कि पतरस मान गया।

ग़रज़ टीम की सूरत में मिलकर ख़िदमत करना निहायत अहम है। जो इससे कतराता है वह अपनी और पूरी जमात की रूहानी सेहत को ख़तरे में डालता है। कई एक राहनुमाओं ने तरबियत का यह उसूल अपनाया है। इस क़िस्म के राहनुमा लायक़ लोगों को चुनकर उनके साथ चलते हुए उनको तरबियत देते हैं।

बुज़ुर्गों तक टीम की ज़रूरत

पहली बात जो इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के बारे में नज़र आती है यह है कि एक बुज़ुर्ग नहीं बल्कि बुज़ुर्गों का गुरोह है। पौलुस रसूल ने इफ़िसुस के बुज़ुर्गों का पूरा गुरोह बुलाया (20:17)। यह हक़ीक़त मज़ीद हैरतअंगेज़ है जब हमें मालूम है कि उन्हें पौलुस रसूल की ख़िदमत के अढ़ाई सालों के दौरान मुक़र्रर किया गया था।

इस नुकते पर हमें मौजूदा ज़माने में बहुत तकलीफ़देह सूरते-हाल का सामना है। जो ख़ादिम दानिशमंद हैं वह जल्दी से किसी को बुज़ुर्ग के तौर पर मुक़र्रर नहीं करते। क्यों? इसलिए कि जब किसी को कोई ओहदा हासिल हो तो ख़तरा है कि उसकी ख़िदमत बिगड़ जाए। जल्दी से ख़ादिमाना रूह हाकिमाना रूह में बदल जाती है। हलीमी ग़ुरूर

में, रूहानी सोच सियासी सोच में। अगरचे यह ख़तरा है तो भी पौलुस रसूल की मिसाल हमारी हौसलाअफ़ज़ाई करती है कि हम किसी नई जमात में राहनुमाओं को मुक़र्रर करने में हद से ज़्यादा देर न करें और बाक़ी सब कुछ ख़ुदा के रहमो-करम पर छोड़ दें।

अब बुज़ुर्गों की क्या हैसियत है? पौलुस रसूल ने ख़ासकर उन्हें क्यों बुलाया? उसने "इफ़िसुस के ख़ादिमों" या "इफ़िसुस के पासबान" को क्यों न बुलाया? आइए, हम इब्तिदाई जमात में बुज़ुर्गों की हैसियत पर एक नज़र दौड़ाएँ।

इब्तिदाई जमात में बुज़ुर्गों की हैसियत

पतरस रसूल बुज़ुर्गों को यह हिदायत देता है कि वह जमात की गल्लाबानी करें (1 पतरस 5:1-5)। "बुज़ुर्ग" एक यूनानी लफ़्ज़ का तरजुमा है जिसका लफ़्ज़ी मतलब बूढ़ा है। लेकिन यह हमारे लफ़्ज़ बुज़ुर्ग की तरह इस्तेमाल होता था। पतरस रसूल के नज़दीक हर बुज़ुर्ग गल्लाबान है। यह लफ़्ज़ गल्लाबान ओहदे या मंसब पर ज़ोर नहीं देता बल्कि ख़िदमत, इख़्तियार और ज़िम्मेदारी पर। इस पर ज़ोर देने के लिए पतरस रसूल फ़रमाता है कि ईसा हमारा सरदार गल्लाबान है (5:4)। वह हमारा असली चरवाहा है जिसने अपनी जान हमारे लिए दे दी। हर ख़िदमतगुज़ार की गल्लाबानी सानवी हैसियत रखती है।

पौलुस अपने शागिर्द तीमुथियुस से ख़त लिखकर उसे बताता है कि बुज़ुर्ग कैसा होना चाहिए,

> मैंने आपको क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि आप वह कमियाँ दुरुस्त करें जो अब तक रह गई थीं। यह भी एक मक़सद था कि आप हर शहर की जमात में बुज़ुर्ग मुक़र्रर करें, जिस तरह मैंने आपको कहा था। बुज़ुर्ग बेइलज़ाम हो। उसकी सिर्फ़ एक बीवी हो। उसके बच्चे ईमानदार हों और लोग उन पर ऐयाश या सरकश होने का इलज़ाम न लगा सकें। निगरान को तो अल्लाह का घराना सँभालने की ज़िम्मेदारी दी गई है, इसलिए लाज़िम है कि वह बेइलज़ाम हो। वह ख़ुदसर, ग़ुसीला, शराबी, लड़ाका या लालची न हो। (तितुस 1:5-7)

इस हवाले में एक ही बंदे का ज़िक्र है यानी बुज़ुर्ग का। एक बार इसे बुज़ुर्ग कहा गया है, दूसरी बार निगरान। इस बात की रौशनी में 1 तीमुथियुस 3:1-7 में मज़कूर निगरान और

1 तीमुथियुस 5:17-19 में मज़कूर बुज़ुर्ग एक ही ओहदा बयान करते हैं यानी बुज़ुर्ग का ओहदा।

इसके अलावा एक और ओहदे का बयान 1 तीमुथियुस 3:8-13 में किया गया है और वह है मददगार का ओहदा। दर्जे-बाला हवाले में मददगार बुज़ुर्गों के मातहत होते हैं। यह उन सात मर्दों से मुताबिक़त रखते हैं जिन्हें आमाल 6 में रसूलों की मदद के लिए मुक़र्रर किया गया था।

ख़ुलासे के तौर पर हम यह कह सकते हैं कि रसूलों ने जमात के राहनुमाओं के लिए हर नई जमात में बुज़ुर्गों का एक गुरोह मुक़र्रर किया। इन बुज़ुर्गों को मिलकर जमात की गल्लाबानी करने की ज़िम्मेदारी हासिल थी। इनके तहत मददगारों का गुरोह था।

शायद जमात को फ़ुलटाइम पासबान की ज़रूरत हो। लेकिन हम सबको इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि जो भी फ़ुलटाइम ख़िदमतगुज़ार हो वह ख़िदमत करनेवाली रूह रखे,और कि वह बुज़ुर्गों के सामने जवाबदेह हो। अल्लाह की जमात में पार्टीबाज़ी और लोटाक्रेसी के लिए कोई जगह नहीं, क्योंकि हम सब बहन-भाई हैं, हम सब बराबर हैं और हम सिर्फ़ मिलकर ख़िदमत करने से कामयाबी हासिल कर सकते हैं।

पहले अपना ख़याल रखना

> चुनाँचे ख़बरदार रहकर अपना और उस पूरे गल्ले का ख़याल रखना। (आमाल 20:28)

हम जल्दी से लफ़्ज़ "अपना" नज़रंदाज़ करते हैं। यानी हम पढ़ते हैं, "ख़बरदार रहकर पूरे गल्ले का ख़याल रखना।" और वैसे भी हमारा पूरा ध्यान दूसरों की ख़बरदारी पर मरकूज़ रहता है। हमारी फ़ितरत ऐसी है और हमारी तरबियत यों हुई है कि हम फ़ौरन दूसरों की ग़लतियाँ पकड़ लेते हैं जबकि हम अपनी ग़लतियों के लिए देर तक अंधे रहते हैं। चुनाँचे पौलुस रसूल जान-बूझकर अपना ख़याल रखने का पहले ज़िक्र करता है। हम बड़े ग़ौर से दूसरों की आँख में तिनके को घूरते हैं जबकि हमारी आँख में धँसा हुआ शहतीर जो हमें बड़ी तकलीफ़ देता है हमें नज़र नहीं आता।

जब हम अपना ख़याल रखने पर मज़ीद ग़ौर करते हैं तो यह मज़मून हमें गहराइयों में ले जाता है। इस सिलसिले में इसकी अशद्द ज़रूरत है कि ख़िदमतगुज़ार अपने आपसे पूछे कि मेरी ज़िंदगी की बुनियाद क्या है? कौन-सी चीज़ मुझे मज़बूत बना सकती

है? क्या मैं वाक़ई ख़ुदा के नजातबख़्श काम से पुख़्ता हो गया हूँ? क्योंकि जब तक ख़िदमतगुज़ार रूहानी तौर पर पुख़्ता नहीं है उस वक़्त तक उसकी ख़िदमत भी कमज़ोर रहेगी।

कुछ हलक़ों में एहसासे-कमतरी माँ के दूध के साथ पिलाया गया है, यानी यह एहसास कि मैं कुछ नहीं हूँ, मेरी कोई क़दरो-क़ीमत नहीं है। अगर ख़िदमतगुज़ार इस क़िस्म के एहसास का शिकार हो तो इसका असर उसकी ख़िदमत पर ज़रूर पड़ेगा। फिर वह मसायल का सामना करते वक़्त जल्दी से डाँवाँडोल हो जाएगा। लेकिन जब वह अपने आप में मज़बूत है तो वह हिलने का नहीं चाहे कितने ही शदीद तूफ़ान उस पर क्यों न आन पड़ें।

जो एहसासे-कमतरी का शिकार है उसके लिए इससे पूरे तौर पर आज़ाद हो जाना मुश्किल है। इसके लिए बड़ी और मुतवातिर जिद्दो-जहद की ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पास आलातरीन क़िस्म के हथियार हैं—ख़ुदा का कलाम और रूहुल-क़ुद्स जो पाक कलाम का इतलाक़ मेरी ज़िंदगी पर करता है। अगर ख़िदमतगुज़ार यह हथियार इस्तेमाल करे तो उसे मुतवातिर यह पैग़ाम सुनाया जाएगा,"अल्लाह ने तुझे क़बूल किया है। इसलिए नहीं कि तूने उसके लिए कुछ किया है। इसलिए भी नहीं कि तू लायक़ है या कि तेरे पास बहुत-सी नेमतें हैं, बल्कि इसलिए कि हमारे आक़ा ईसा ने तुझे इतना प्यार किया कि वह तेरे लिए सलीब पर मर गया।" अगर ख़ुदा ने आपकी इतनी क़दर की है तो यह गुनाह है अगर आप इसका इनकार करते हुए कहें कि मेरी कोई क़दर नहीं। चाहे लोग हमें कितना ही नाचीज़ क्यों न समझें अल्लाह हमारी क़दर करता है।

ग़ौर कीजिए कि अपनी क़दर करना ग़ुरूर से फ़रक़ है और हलीमी का तज़ाद नहीं है। कभी कभी ईमानदार इस ग़लती में फँस जाते हैं कि वह हलीम बनने के बाइस अपने आपको हक़ीर जानने लगते हैं। लेकिन यह कलाम के इस हुक्म के ख़िलाफ़ है कि "अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है" (मत्ती 22:39; अहबार 19:18)। हम उसी वक़्त दूसरों से मुहब्बत रख सकते हैं जब हम अपने आपसे मुहब्बत रखते हों। चुनाँचे हमारी ख़िदमत जिसका लुब्बे-लुबाब दूसरों से मुहब्बत करना है, सिर्फ़ उसी वक़्त मुअस्सर और पुख़्ता होगी जब हम अपने आपसे मुहब्बत और अपनी क़दर कर सकेंगे। हक़ीक़ी हलीमी का यही मतलब है। यह नहीं कि हम अपने आपकी तहक़ीर करते हैं बल्कि यह कि हम अल्लाह में अपनी क़दरो-क़ीमत जानते हुए

भाई की हैसियत से दूसरों की ख़िदमत कर सकते हैं। इस में भी पौलुस रसूल एक अच्छा नमूना है जिसने "बड़ी इनकिसारी से" ख़िदमत की (आमाल 20:19)।

हम सिर्फ़ इसी रौशनी में ईसा मसीह का पैरवी के बारे में फ़रमान सहीह तौर पर समझ सकते हैं कि "जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले" (मत्ती 16:24)। इससे मुराद अपनी अना का इनकार नहीं, अगरचे अपनी अनापरस्ती का इनकार ज़रूर इस में शामिल है। बल्कि हमारा आक़ा यह कहना चाहता है कि लाज़िम है कि मसीह का पैरोकार उसके वास्ते अपनी जान देने के लिए तैयार हो। जो मसीह में मज़बूत है और ख़ुदा के नज़दीक अपनी क़दरो-क़ीमत जानता है वह अपने आपका इनकार कर सकता यानी अपनी जान को भी क़ुरबान कर सकता है।

ग़रज़, अल्लाह की नज़र में अपनी क़दरो-क़ीमत जानना ख़िदमत की बुनियाद है जिससे ख़िदमत का हर शोबा पुख़्ता हो जाता है। इस बिना पर ख़ादिम लोगों की लान-तान और गालियों का सामना कर सकता है। जब उसकी नुकताचीनी की जाए तो वह बरदाश्त कर सकता है। जब उसके ख़िलाफ़ अफ़वाहें फैल जाएँ और उसे बदनाम करने की कोशिश की जाए तो वह हलीमी से सब कुछ सह सकता है। लेकिन जब उसे नसीहत या तंबीह की जाए तो वह अपनी पुख़्तगी की बिना पर इसे क़बूल करके तरबियत हासिल कर सकता है।

इसके बरअक्स जो एहसासे-कमतरी का शिकार है वह दूसरों की तंबीह को मुश्किल से क़बूल करता है, क्योंकि वह इससे अपने लिए ख़तरा महसूस करता है और नतीजे में ग़ुस्से हो जाता या तंबीह करनेवालों से कतराता है।

जो ख़िदमतगुज़ार मसीह में अपनी क़दरो-क़ीमत जानता है वह आज़माइशों पर भी फ़तह पा सकता है। वह आज़ादी से घरों में जा सकता है, लेकिन वह इस आज़ादी का ग़लत इस्तेमाल नहीं करेगा। वह ख़ासकर ख़वातीन के सिलसिले में एहतियात बरतेगा। जब कोई ख़ातून घर में अकेली हो तो वह उस घर में दाख़िल नहीं होगा। पैसों के मामले में भी वह बड़ी आज़माइशों से बचेगा। वह कोशिश करेगा कि जमात के पैसे किसी क़ाबिले-एतबार कमेटी के सपुर्द किए जाएँ ताकि उसकी गवाही बेऐब रहे और यह आज़माइश जड़ से उखाड़ी जाए।

गल्ले की हिफ़ाज़त करना

> चुनाँचे ख़बरदार रहकर अपना और उस पूरे गल्ले का ख़याल रखना जिस पर रूहुल-क़ुद्स ने आपको मुक़र्रर किया है। (आमाल 20:28)

सहीह गल्लाबान गल्ले की हिफ़ाज़त के लिए फ़िकरमंद रहते हैं। वह भेड़ों के लिए ख़तरे को वुजूद में आने से पहले जान लेते हैं ताकि गल्ले की हिफ़ाज़त का मुनासिब बंदोबस्त कर सकें। इसलिए पौलुस रसूल चरवाहे की हैसियत से इफ़िसुस के बुज़ुर्गों को मुस्तक़बिल के ख़तरों के बारे में आगाह करता है। वह फ़रमाता है,

> मुझे मालूम है कि मेरे जाने के बाद वहशी भेड़िये आप में घुस आएँगे जो गल्ले को नहीं छोड़ेंगे। (आमाल 20:29)

उन्हें भेड़ों पर तरस नहीं आएगा, क्योंकि वह सिर्फ़ अपनी फ़िकर करते हैं। उन्हें परवा नहीं कि भेड़ों ने नजात पा ली है या नहीं, न वह उनकी तरक़्क़ी और नशो-नुमा में दिलचस्पी रखते हैं। उनका वाहिद मक़सद यह है कि लोगों का इस्तेह्साल करें और उनसे फ़ायदा उठाएँ। नोट कीजिए कि जमात के लिए मुख़ालिफ़ माहौल उतना ख़तरनाक नहीं होता जितने कि उसके अपने ग़लत राहनुमा। इसके अलावा उन में से

> आदमी उठकर सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। (आमाल 20:30)

यह बात कितनी बार देखने में आई है कि किसी ग़लत राहनुमा ने जमात को अपनी तरफ़ खींचने के लिए ग़लत तालीम दी या दूसरे राहनुमाओं पर ग़लत तालीम का इलज़ाम लगा दिया। लेकिन ज़्यादा आम तरीक़ा यह होता है कि ग़लत राहनुमा झूट बोलकर दूसरे राहनुमाओं पर संगीन गुनाहों का इलज़ाम लगाता है। यों वह जमात को अपनी गिरिफ़्त में लेने की कोशिश करता है। इसका क्या हल है? इस हवाले में कोई ख़ास तरीक़ा नहीं बताया गया, लेकिन यह ज़रूर बताया गया है कि “जागते रहें” (20:31) जिस तरह पौलुस ख़ुद जागता रहा। पौलुस उनकी हौसलाअफ़ज़ाई करता है कि मेरे नमूने पर ग़ौर करें,

> यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन साल के दौरान दिन-रात हर एक को समझाने से बाज़ न आया। मेरे आँसुओं को याद रखें जो मैंने आपके लिए बहाए हैं। (आमाल 20:31)

दूसरी जगह पर वह उनसे कहता है,

> आप जानते हैं कि मैं सूबा आसिया में पहला क़दम उठाने से लेकर पूरा वक़्त आपके साथ किस तरह रहा। मैंने बड़ी इनकिसारी से ख़ुदावंद की ख़िदमत की है। मुझे बहुत आँसू बहाने पड़े और यहूदियों की साज़िशों से मुझ पर बहुत आज़माइशें आईं। (आमाल 20:18-19)

हम देख चुके हैं कि इफ़िसुस में पौलुस की ख़िदमत अगरचे बहुत फलदार रही ताहम काफ़ी मुश्किल थी। यहूदियों की मुख़ालफ़त इस वजह से पैदा हुई कि उसकी ख़िदमत से लोग यहूदी इबादतख़ाने को तर्क करने लगे। बुतपरस्तों की मुख़ालफ़त भी पैदा हुई, क्योंकि बुतों की तिजारत पर बहुत बुरा असर पड़ा। लेकिन पौलुस जागता रहा। वह जानता था कि ग़लत तालीम और ग़लत राहनुमा पैदा हो जाएँगे, इसलिए लाज़िम है कि मैं लोगों को सहीह तालीम दूँ ताकि वह बोहरान के वक़्त मज़बूत रह सकें। लिहाज़ा वह

> अलानिया और घर घर जाकर तालीम देता रहा। (आमाल 20:20)

पौलुस रसूल को इल्म था कि वह एक अज़ीम जंग लड़ रहा है जो लोगों के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि उन्हें शैतान की गिरिफ़्त से निकालकर आसमान की बादशाही में दाख़िल करने के लिए लड़ी जा रही है। ज़ाहिर है कि इनसान का सबसे पुराना दुश्मन हर ख़िदमतगुज़ार के ख़िलाफ़ अपने तमाम हथियार इस्तेमाल करेगा। उसका एक पसंददीदा तरीक़ा यह है कि वह जमात में फाड़नेवाले भेड़िये और सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान करनेवाले राहनुमा दाख़िल करे जिनसे भेड़ें मुंतशिर हो जाएँ। क्योंकि वह ख़ूब जानता है कि हर जमात की यगांगत और रिफ़ाक़त उसकी ताक़त है जबकि भेड़ों के बिखर जाने से यह ताक़त जाती रहेगी।

कामयाब गल्लाबान दिन-रात जागता रहता है, क्योंकि उसकी भेड़ों के लिए कोई चारदीवारी नहीं है। वह खुले मैदान में ज़िंदगी गुज़ारती हैं जहाँ वह रोज़ाना जंगली जानवरों, डाकुओं और दूसरे ख़तरात से दोचार रहती हैं। नीज़, गल्ले के अंदर भी ख़तरे

हैं, यानी ग़लत भेड़ें जो दूसरी भेड़ों को अच्छे चरवाहे से दूर ले जाना चाहती हैं। बेदार गल्लाबान इन हालात से आगाह रहते और जागते रहते हैं ताकि जितना हो सके भेड़ों को इन ख़तरात से बचाए रखें। क्या वजह है कि बहुत बार जमात के राहनुमा किसी बोहरान से निपटने में नाकाम रहते हैं, और नतीजे में जमात तक़सीम हो जाती है या यगांगत ख़त्म हो जाती है? बहुत बार वजह यह है कि न गुनाहों का इक़रार हुआ, न इनसाफ़, लिहाज़ा अभी तक पसे-परदा ख़राबी का असर हो रहा है। अकसर औक़ात इसकी बुनियादी वजह यह होगी कि जमात के राहनुमाओं ने आँसू बहा बहाकर और घर घर जाकर लोगों को न सिखाया और न समझाया। जब गुनाहों और ग़लतियों ने अपना ग़लीज़ सर उठाया तो उन्होंने अपनी आँखों को बंद किया, यह उम्मीद रखते हुए कि यह बुरी चीज़ें ख़ुद बख़ुद दूर हो जाएँगी। लेकिन अफ़सोस, यह सरतान की तरह मज़ीद फैलती गईं और आख़िरकार पूरे जिस्म को अपनी लपेट में ले लिया। और यह सब कुछ इस वजह से हुआ कि जमात के गल्लाबान जागते न रहे।

लगता है कि एक चीज़ जमात की राहनुमाई में बहुत मुदाख़लत करती है और वह है इज़्ज़त का एहसास। बेशक हमें हर एक की इज़्ज़त करनी चाहिए। लेकिन जब हम अपनी या किसी दूसरे की इज़्ज़त को क़ायम रखने के लिए गुनाहों को छुपाते हैं तब हम ख़ुद क़ुसूरवार ठहरते हैं, इसलिए कि हम ने उसको जिससे गुनाह सरज़द हुआ है अपने गुनाह का इक़रार करने का मौक़ा नहीं दिया। यों जमात की पाकीज़गी जाती रहती और साथ ही जमात के राहनुमाओं का इख़्तियार जाता रहता है।

गल्ले की बहबूदी की फ़िकर

चरवाहे का अव्वल मक़सद भेड़ों की बहबूदी है। उसकी पूरी कोशिश यह होती है कि भेड़ें तादाद और वज़न के हिसाब से बढ़ें। लिहाज़ा उसकी गल्लाबानी के कई पहलू हैं।

अपनी ख़िदमत को पेशा न समझना

पौलुस रसूल इफ़िसुस के बुज़ुर्गों से फ़रमाता है,

> मैंने किसी के भी सोने, चाँदी या कपड़ों का लालच न किया। आप ख़ुद जानते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से काम करके न सिर्फ़ अपनी बल्कि अपने साथियों की ज़रूरियात भी पूरी कीं। अपने हर काम में मैं आपको दिखाता रहा कि लाज़िम है कि हम इस क़िस्म की मेहनत करके कमज़ोरों की मदद करें। क्योंकि हमारे सामने ख़ुदावंद ईसा के यह अलफ़ाज़ होने चाहिएँ कि देना लेने से मुबारक है। (आमाल 20:33-35)

हम दूसरे हवालाजात से भी जानते हैं कि पौलुस का अपना कारोबार था। उसका पेशा ख़ैमे सिलाई करना था (आमाल 18:3)। पौलुस का यह नमूना बहुत अच्छा है, और बहुत-से लोगों ने यह नमूना अपनाकर अपनी दुनियावी नौकरी के साथ साथ तबलीग़ी काम में हिस्सा लिया है। यों उन्हें किसी जमात से पैसे मिलने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

क्या इसका मतलब है कि अपनी ख़िदमत के लिए पैसे मिलना ग़लत है? हरगिज़ नहीं। पौलुस रसूल को भी कई बार जमातों से पैसे मिले (देखिए ख़ासकर फ़िलिप्पियों 4:10-20)। नीज़, वह इस बात पर ज़ोर देता है कि ख़िदमतगुज़ार जमात की तरफ़ से मुआवज़े का हक़दार है (1 तीमुथियुस 5:17-18; 1 कुरिंथियों 9:4-18)। उसका उसूली तौर पर मुआवज़ा न लेने का मक़सद यह था कि वह किसी के लिए ठोकर का बाइस न बने बल्कि लोगों के लिए नमूना बने, कि उनके ज़हन में यह बात नक़्श की जाए कि ख़ादिम का फ़र्ज़ क्या है—यह कि वह मेहनत करके कमज़ोरों को सँभाले और यह बात याद रखे कि देना लेने से बेहतर है। उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि ख़िदमतगुज़ार बुतपरस्तों के मंदिरों के पुजारियों की तरह हैं जो अपनी ख़िदमत के बदले में पैसे कमाते हैं। बेशक यह जमात का फ़र्ज़ है कि वह फ़ुलटाइम ख़ादिम को उसकी ज़रूरियात के लिए पैसे दे। लेकिन दूसरी तरफ़ ख़ादिम को यह याद रखना है कि उसकी ख़िदमत पेशा नहीं, यानी पैसे कमाने का वसीला नहीं है। बल्कि ख़ादिम का मक़सद ख़िदमत करना ही है जिसका मतलब दूसरों को सबसे आला चीज़ यानी आसमानी ख़ुराक देना है। अगर वह दूसरों से पैसे निकलवाने के चक्कर में पड़ जाए तो उसकी ख़िदमत पर इसका बुरा असर पड़ेगा।

बाहमी ताल्लुक़ात की बहाली पर ज़ोर

पौलुस रसूल अपने मशवरों का इख़्तिताम इफ़िसुस की जमात के लिए दुआ से करता है। उसकी आख़िरी बात इफ़िसुस के लिए दुआ है। तब

> सब ख़ूब रोए और उसको गले लगा लगाकर बोसे दिए। उन्हें ख़ासकर पौलुस की इस बात से तकलीफ़ हुई कि 'आप इसके बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।' (आमाल 15:11-16)

यहाँ ज़ाहिर होता है कि पौलुस और राहनुमाओं के दरमियान गहरा और अच्छा ताल्लुक़ था। इसलिए वह रो पड़े जब उन्हें बताया गया कि यह उसके साथ उनकी आख़िरी मुलाक़ात है। जब अच्छा गल्लाबान पौलुस रसूल की तरह अपने गल्ले के दुख-सुख में शरीक होता है तो भेड़ों के साथ उसके ताल्लुक़ात अच्छे होंगे। यह ताल्लुक़ात का एक पहलू है।

दूसरे, गल्लाबान भेड़ों के सरदार चरवाहे के साथ ताल्लुक़ात के बारे में फ़िकरमंद रहेगा। वह जमात के हर एक फ़रद पर ग़ौर करेगा और उसके लिए दुआ करेगा कि वह नजात पाकर अल्लाह का फ़रज़ंद बने और रूहानी तौर पर तरक़्क़ी करे।

तीसरे, वह भेड़ों के बाहमी ताल्लुक़ात के बारे में फ़िकरमंद रहेगा। दुनियावी गल्लाबान भी ग़ौर करता है कि भेड़ों का आपस में मेल-मिलाप हो। अगर बीच में कोई बकरी हो जो गड़बड़ पैदा करती हो तो उसे कुछ देर के लिए गल्ले से दूर किया जाता है और अगर उसकी हरकतें न सुधरें तो उसे हमेशा के लिए दूर कर दिया जाता है। गल्ले में शायद ही एक या दो ऐसी बकरियाँ या भेड़ें होती हैं। अफ़सोस कि बहुत बार जमात के गल्ले में ताल्लुक़ात बहाल करना बहुत मुश्किल बल्कि नामुमकिन लगता है। लेकिन सब्र और ख़ुदा का फ़ज़्ल जो हमारे पथरीले दिलों को नरम कर सकता है ऐसे ताल्लुक़ात भी ठीक कर सकता है। बहुत-से ख़ादिम जमात के पेचीदा ताल्लुक़ात की वजह से बरबाद हो गए हैं।

रूहानी ख़ुराक मुहैया करना

> मैंने आपके फ़ायदे की कोई भी बात आपसे छुपाए न रखी बल्कि आपको अलानिया और घर घर जाकर तालीम देता रहा। मैंने यहूदियों को यूनानियों समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रुजू करने और हमारे ख़ुदावंद ईसा पर ईमान लाने की ज़रूरत है। (आमाल 20:20-21)

पौलुस रसूल ने उन्हें हर उस बात से आगाह किया था जो फ़ायदामंद था। यानी जो रूहानी ज़िंदगी गुज़ारने और उस में तरक़्क़ी करने के लिए ज़रूरी और मुफ़ीद था।

तौबा करना और ईसा अल-मसीह पर ईमान लाना फ़ायदे की बुनियादी बातें हैं। यह ख़ुशख़बरी का मरकज़ी ख़याल है, और हर ख़ादिम बार बार इनकी तरफ़ रुजू करेगा। जब हम पौलुस रसूल के ख़तों का मुतालआ करते हैं तो देखते हैं कि तमाम बातें इसी बुनियाद पर मबनी हैं कि हमारे आक़ा ने इस दुनिया में आकर मौत की वह सज़ा बरदाश्त की जिसके लायक़ हम थे ताकि हमें नजात मिले। नतीजे में लाज़िम है कि हम अपने गुनाहों का इक़रार करके उसका यह काम क़बूल करें ताकि अल्लाह के फ़रज़ंद और आसमान की बादशाही के शहरी बन जाएँ।

घर घर जाकर सिखाने का तरीक़ा

जदीद दौर में एक अजीबो-ग़रीब सिलसिला शुरू हो गया है। लोग बड़े बड़े इजतमाओं के लिए हज़ारों लोगों को जमा करते हैं। इन में तौबा करने और ईसा अल-मसीह को क़बूल करने पर ज़ोर दिया जाता है। यह अजीब नहीं बल्कि अच्छा है। अजीब बात यह भी नहीं कि अकसर औक़ात सुननेवालों में से बेशुमार लोग तौबा का इज़हार करते हैं। अजीब बात यह है कि बहुत बार तौबा करने से कोई ख़ास फ़रक़ नज़र नहीं आता। लोग अपनी अपनी जमातों में वापस चले जाते हैं और मामूल के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी जारी रखते हैं। इस नाते से पौलुस रसूल का कहना कि उसने न सिर्फ़ अलानिया बल्कि घर घर जाकर सिखाया बहुत अहम है। मुमकिन है लोगों ने उसके इबादतख़ाने या बाज़ार में पैग़ाम के ज़रीए तौबा की हो, ताहम उसने घरों में जाकर उनसे रिफ़ाक़त रखी, उनका ईमान जाँच लिया और सवालो-जवाब के तरीक़े से उन्हें तालीम में मज़बूत किया। वह जानता था कि लोगों के सामने सिर्फ़ पैग़ाम दे देना ही गल्लाबानी के लिए काफ़ी नहीं है। यह भी बहुत ज़रूरी है कि हर एक से बात करते हुए उसे नसीहत करें, तालीम दें और तंबीह करें।

अल्लाह के फ़ज़ल पर ज़ोर

पौलुस रसूल के नज़दीक गल्लाबानी का सबसे बुनियादी मक़सद दूसरों तक ख़ुदा का कलाम पहुँचाना था,

> ख़ैर, मैं अपनी ज़िंदगी को किसी तरह भी अहम नहीं समझता। अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह मिशन और ज़िम्मेदारी पूरी करूँ जो ख़ुदावंद ईसा ने मेरे सपुर्द की है। और वह ज़िम्मेदारी यह है कि मैं लोगों को गवाही देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से उनके लिए क्या कुछ किया है। (आमाल 20:24)

चूँकि ख़ुद अल्लाह ने अपनी जमात को "अपने ही फ़रज़ंद के ख़ून से हासिल किया" (आमाल 20:28) इसलिए कौन है जो जमात की ख़िदमत में बेपरवाई दिखाए! अल्लाह के फ़ज़ल का कलाम हर एक तक पहुँचाना पौलुस रसूल के लिए एक बहुत संजीदा मामला है, लिहाज़ा वह फ़रमाता है,

> इसलिए मैं आज ही आपको बताता हूँ कि अगर आप में से कोई भी हलाक हो जाए तो मैं बेक़ुसूर हूँ, क्योंकि मैं आपको अल्लाह की पूरी मरज़ी बताने से न झिजका। (आमाल 20:26-27)

वह समझता था कि अव्वल मुझे हर एक को नजात का पूरा पैग़ाम सुनाना है। यह मेरा पहला फ़र्ज़ है। अगर किसी को अल्लाह की पूरी मरज़ी का इल्म न मिला तो मैं क़ातिल ठहरूँगा। लेकिन चूँकि मैंने हर एक को इसके बारे में समझाया इसलिए मैं अपने आपको उनके ख़ून से पाक समझता हूँ।

क्या ख़िदमतगुज़ार इतनी संजीदगी से अपने गल्ले की गल्लाबानी करते हैं? वह इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहर सकते कि जमात के हर फ़रद को नई पैदाइश का तजरिबा हासिल हो, क्योंकि यह रूहुल-क़ुद्स की ज़िम्मेदारी है। लेकिन हर एक मेम्बर को ख़ुदा की मरज़ी के बारे में इल्म होना चाहिए। पौलुस रसूल इसके दो तरीक़े बयान करता है—अलानिया पैग़ाम देना और घर घर जाकर सिखाना।

कमज़ोरों का ख़ास ध्यान

> मैं गुमशुदा भेड़-बकरियों का खोज लगाऊँगा और आवारा फिरनेवालों को वापस लाऊँगा। मैं ज़ख़मियों की मरहम-पट्टी करूँगा और कमज़ोरों को तक़वियत दूँगा। (हिज़क़ियेल 34:16)

इनसानी फ़ितरत का रुझान कामयाब और खाते-पीते लोगों की तरफ़ है। अगर कोई असरो-रसूख़वाला इबादत में आए तो लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते हैं। इसके मुक़ाबले में अगर कोई ग़रीब बंदा दाख़िल हो तो कोई उसकी परवा नहीं करता,

> फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ साथ एक ग़रीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अंदर आए। और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर ख़ास ध्यान देकर उससे कहें, "यहाँ इस अच्छी कुरसी पर तशरीफ़ रखें," लेकिन ग़रीब आदमी को कहें, "वहाँ खड़ा हो जा" या "आ, मेरे पाँव के पास फ़र्श पर बैठ जा।" क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना ख़यालातवाले मुंसिफ़ नहीं साबित हुए? क्योंकि आपने लोगों में नारवा फ़रक़ किया है। (याक़ूब 2:2-4)

गल्लाबान को इस रुझान से आगाह होने की ज़रूरत है ताकि वह लगातार इसके ख़िलाफ़ कमरबंद रहे। उसका ध्यान कमज़ोरों पर होना चाहिए जिस तरह हमारा सरदार गल्लाबान भी बीमारों और गुनाहगारों को बुलाने आया (मत्ती 9:12-13)। क्या उसे इस ज़िम्मेदारी की संजीदगी का एहसास है? वरना उसका इख़्तियार खो जाएगा और वह दीगर मज़ाहिब के पेशवाओं की मानिंद बनेगा। हमारा ख़ुदावंद ऐसे शख़्स के बारे में कहेगा,

> लानती लोगो, मझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग में चले जाओ जो इबलीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार है। क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी न पिलाया, मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाज़ी न की, मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम मझसे मिलने न आए। (मत्ती 25:41-43)

मसीह के कहने का मतलब यह है कि ईमानदारों की अव्वल ज़िम्मेदारी यह है कि वह अपने ग़रीब और शिकस्तादिल बहन-भाइयों की फ़िकर करें। इसका रूहानी पहलू यह है कि ख़िदमतगुज़ार की ख़ास तवज्जुह उन लोगों की तरफ़ हो जो किसी वजह से कमज़ोर हैं। मुमकिन है वह गुमशुदा हों यानी सहीह राह से भटक गए हों। कितने ख़ादिम हैं जो ऐसे मेंबरान को सहीह राह पर वापस लाने की पूरी कोशिश करते हैं? इनसानी फ़ितरत कहती है, "उसे जाने दो। वापस आएगा तो मज़ीद तकलीफ़ का बाइस बनेगा।"

एक तबलीग़ करनेवाले का ज़िक्र है जो कई सालों तक किसी दूर-दराज़ मुल्क में ख़िदमत करता रहा। किसी वजह से उसे अपने मुल्क वापस जाना पड़ा जहाँ वह गुनाह में गिर गया। साथ ही वह शराबी भी बन गया। होते होते वह जमात से बहुत दूर हो गया। उसकी छोटी बेटी को किसी और ख़ानदान के सपुर्द किया गया। लेकिन जब वह परवान चढ़ी तो एक दिन उसे अपने बाप के लिए बोझ महसूस हुआ। वह उसके पास गई और बड़े प्यार के साथ उसे समझाया। हैरानी की बात यह है कि उसके उम्ररसीदा और शराब में धुत बाप ने अपनी बदचलनी का इक़रार किया और दुबारा सहीह राह पर आ गया। यह है सरदार गल्लाबान की रूह जो हर गुमशुदा भेड़ की तलाश में रहती है। क्या हम भी इस ज़िम्मेदारी पर पूरे उतरते हैं?

यह भी मुमकिन है कि जमात का कोई मेम्बर ज़हनी तौर पर ज़ख़मी हो। शायद वह किसी वाकिये या ख़ुदा नख़ास्ता जमात के किसी दूसरे मेम्बर से ज़ख़मी हो। अकसर वह ज़ख़म मुश्किल से भरते हैं जो दूसरे बहन-भाइयों से मिले हों। हस्सास गल्लाबान ऐसे मजरूह ताल्लुक़ात को बहाल करने के लिए फ़िकरमंद रहता है। वह जानता है कि इनका पूरी जमात की नशो-नुमा पर बुरा असर पड़ता है। वह महारत के साथ दोनों पार्टियों से बातचीत करेगा, ग़लतफ़हमियाँ दूर करेगा, लोगों को अपने गुनाहों का इक़रार करने की तरफ़ ले जाएगा और यों पूरी जिद्दो-जहद के साथ सुलह कराने और ज़ख़मों को भरने की कोशिश करेगा।

जिसे इस शोबे में तजरिबा है वह जानता है कि अकसर औक़ात यह एक निहायत पेचीदा और मुश्किल काम है। इसलिए जमात के राहनुमा बहुत बार इससे कतराते हैं या कभी कभी ज़ख़मों को और गहरा करके छोड़ आते हैं। लेकिन मुबारक है वह जमात जिस में ज़ख़म बाँधनेवाले हों।

शायद कोई बीमार हो। बीमारी की वजह जिस्मानी या रूहानी हो सकती है, और कई बार जिस्मानी बीमारी की जड़ कोई रूहानी नुक़्स है। उन्नीसवीं सदी में जर्मनी में एक ख़ादिम बनाम ज़ाइत्स था जिसके पास बेशुमार लोग शफ़ा पाने के लिए आते थे। बार बार ख़ादिम का यह तजरिबा हुआ कि बहुत-से लोगों की बीमारियों की जड़ कोई रूहानी नुक़्स थी। उसका बीमारों के साथ सुलूक याक़ूब पर मबनी था जहाँ लिखा है,

> क्या आप में से कोई मुसीबत में फँसा हुआ है? वह दुआ करे। क्या कोई ख़ुश है? वह सताइश के गीत गाए। क्या आप में से कोई बीमार है? वह जमात के बुज़ुर्गों को बुलाए ताकि वह आकर उसके लिए दुआ करें और ख़ुदावंद के नाम में उस पर तेल मलें। फिर ईमान से की गई दुआ मरीज़ को बचाएगी और ख़ुदावंद उसे उठा खड़ा करेगा। और अगर उसने गुनाह किया हो तो उसे माफ़ किया जाएगा। चुनाँचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों का इक़रार करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफ़ा पाएँ। (याक़ूब 5:13-16)

तेल मलना जादू-मंत्र का अमल नहीं था बल्कि उस ज़माने में तेल दवाई के तौर पर इस्तेमाल होता था। याक़ूब का मतलब यह है कि जमात के राहनुमाओं को दो बल्कि तीन वसायल से फ़ायदा उठाना चाहिए। पहले तो बीमार की तेल से जिस्मानी मदद की जाए। दूसरे, उसके लिए दुआ की जाए। तीसरे, कई बार मरीज़ को अपने गुनाहों का इक़रार करने की ज़रूरत होती है। अब बात यह है कि हर बीमारी किसी गुनाह की वजह से नहीं पैदा होती। ताहम ज़ाइत्स ने दरियाफ़्त किया कि बहुत ज़्यादा मरीज़ अपने गुनाहों की वजह से बीमार हुए थे। जब उन्होंने अपने गुनाहों को तसलीम करके तौबा की तो उन्होंने मोजिज़ाना तौर पर शफ़ा पाई। नोट करें कि ज़ाइत्स आम जमात का मेम्बर था। वह जज़बाती क़िस्म का आदमी नहीं था बल्कि बहुत सादा तरीक़े से और शोर-शराबे के बग़ैर लोगों की मदद करता था। उसके नज़दीक लगातार दुआ और गुनाहों का इक़रार शफ़ा की कुंजियाँ हैं।

एक दिन एक फ़ालिज आदमी उसके पास आया। कई दिन तक उसके लिए दुआ की गई। साथ ही ज़ाइत्स उसकी सलाहकारी करता रहा। बातें करते करते पता चला कि मरीज़ की ज़िंदगी में ऐसी चीज़ें छुपी हुई थीं जिन्होंने उसे रूहानी तौर पर क़ैदी बना लिया था। जब उसने इन शैतानी चीज़ों का इक़रार किया तो आज़ाद हो गया। एक दिन जब लोग उसके लिए दुआ कर रहे थे उसने अचानक कहा, “अब मैं ईसा के नाम में उठ खड़ा होता हूँ।” वह उठा और चलने-फिरने लगा।

आज के ज़माने की तरह उस वक़्त भी ऐसे लोग थे जो ज़ाइत्स के पास आकर उसकी कामयाबी का गुर जानना चाहते थे ताकि ख़ुद इससे फ़ायदा उठा सकें। जब उसकी कामयाबी के बारे में पूछते तो वह जवाब दिया करता था कि “हर एक जो हमारे पास आता है अपनी मरज़ी से शफ़ा नहीं पाता। लेकिन इस में कोई शक नहीं कि जो भी

अल्लाह के रूह के लिए खुला ज़हन रखता है वह यहाँ से तबदील होकर जाता है।" एक बार उसने इसके लिए एक मिसाल भी पेश की,

> एक जाननेवाली को शफ़ा न मिली, लेकिन जब वह अपने घर वापस चली गई तो उसके बिस्तर के इर्दगिर्द ईमानदारों की नई जमात क़ायम हुई। फिर उसे अपना घर छोड़कर कहीं और शिफ़्ट होना पड़ा। उस जगह पर भी लोग उसके ज़रीए ईमान लाए और बेदारी पैदा हुई।

कमज़ोरों का ख़याल रखना जदीद ज़माने में जमातों के लिए एक बहुत बड़ा चैलेंज है।

तादाद बढ़ाने का ख़याल

जमात का गल्लाबान जमात की मौजूदा हालत से मुतमइन नहीं रहता बल्कि वह हमेशा आगे सोचता है कि ईमानदारों की तादाद को किस तरह बढ़ाया जाए। यह भी गल्लाबानी का एक अहम उनसुर है। गल्लाबान जानता है कि जिस गल्ले की तादाद नहीं बढ़ती वहाँ भेड़ों की तादाद ख़ुद बख़ुद कम होती जाएगी।

इस नाते से तौरेत में इसहाक़ का बेटा याक़ूब एक अच्छा नमूना है। जब वह लाबन के पास गया तो उसके मामूँ ने अपनी भेड़ों को उसके सपुर्द किया। उसकी निगरानी के तहत लाबन का गल्ला बहुत बढ़ गया। एक दिन याक़ूब ने उससे कहा,

> जो थोड़ा-बहुत मेरे आने से पहले आपके पास था वह अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। रब ने मेरे काम से आपको बहुत बरकत दी है। अब वह वक़्त आ गया है कि मैं अपने घर के लिए कुछ करूँ। (पैदाइश 30:30)

लाबन जानता था कि याक़ूब की यह बात दुरुस्त है, लिहाज़ा उसने उसे कहीं और नौकरी ढूँडने से रोकने की कोशिश की (पैदाइश 30:27)। बाद में जब याक़ूब को अज्र के तौर पर लाबन से गल्ले का एक हिस्सा मिला तो उसके मवेशियों में इतना इज़ाफ़ा हुआ कि लाबन का ख़ानदान उस पर रश्क करने लगा (पैदाइश 30:31–31:2)।

जमात के गल्लाबान का भी फ़र्ज़ है कि उसकी जमात के मेंबरान की तादाद बढ़े बल्कि उसे पौलुस रसूल की तरह अपनी जमात से हटकर भी तादाद बढ़ाने के बारे में दुआ करनी चाहिए। हर जमात का फ़र्ज़ है कि वह इर्दगिर्द के इलाक़ों में नई जमातें क़ायम करने के लिए कोशाँ रहे।

लेकिन इस सिलसिले में जमात के राहनुमाओं को अपने तरीक़े पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। हम देख चुके हैं कि हमें जमात की ख़िदमत टीम की सूरत में सरंजाम देनी चाहिए। कोई भी नया काम शुरू किया जाए तो पूरी टीम का तावुन बहुत ज़रूरी है। क्योंकि अब जमात की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ जाएँगी। अपने ख़िदमतगुज़ारों को नए काम पर लगाने से जमात को मज़ीद मददगारों को तलाश करने की ज़रूरत होगी। जहाँ जमातें कामयाबी से नई जमातें क़ायम करने में मसरूफ़ हैं, वहाँ उनकी ख़िदमतगुज़ारों की तादाद बढ़ती है। यों इस पर यह बात सादिक़ आती है कि "देना लेने से मुबारक है" (आमाल 20:35)। जब ईमानदार ख़ुदा के नाम में और टीम की सूरत में नया काम शुरू करते हैं तो अल्लाह उन्हें बरकत देता है। न सिर्फ़ यह कि ख़िदमतगुज़ार तरक़्क़ी करते हैं बल्कि अकसर औक़ात वह तादाद में बढ़ भी जाते हैं।

जो तादाद बढ़ाने के ख़्याल से कोई नया काम शुरू करता है, उसकी पूरी कोशिश यह होती है कि नई जमात जितनी जल्दी हो सके अपने पाँव पर खड़ी हो जाए। वह चाहता है कि मक़ामी ईमानदार जल्द अज़ जल्द ख़िदमत में हिस्सा लें बल्कि जमात की राहनुमाई करें। इसलिए कि सिर्फ़ इसी तरीक़े से मक़ामी ईमानदार ख़िदमत के लिए तैयार हो जाते हैं, सिर्फ़ इसी तरीक़े से मादर जमात के ख़िदमतगुज़ार आगे किसी नई जगह के लिए फ़ारिग़ हो सकते हैं।

जमात के राहनुमाओं को इस पर बहुत ध्यान रखने की ज़रूरत है। कई बार आगे निकलना बहुत मुश्किल है, क्योंकि उनका नई जमात के साथ गहरा ताल्लुक़ क़ायम हो गया है। वहाँ उन्होंने बहुत मेहनत की है, उनके लिए बहुत दुआएँ की हैं, उनके दरमियान पौलुस की तरह आँसू बहाकर ख़िदमत सरंजाम दी है। लेकिन लाज़िम है कि वह हर क़दम नई जमात की खुदमुख़तारी की तरफ़ उठाएँ।

पौलुस रसूल की कामयाबी की क्या कुंजी थी? यह कि वह अपनी मेहनत से पैदा होनेवाली जमातों को "अल्लाह और उसके फ़ज़ल के कलाम के सपुर्द" (आमाल 20:32) करके उन्हें पूरी आज़ादी के साथ छोड़कर आगे नई नई जगहों पर जा सकता था। इसका मतलब यह नहीं कि उसने उनसे राबता तोड़ लिया, बल्कि उसके ख़तों से यह बात नज़र आती है कि यह राबता ज़िंदगी के आख़िर तक क़ायम रहा। ज़िंदगी के आख़िर तक वह उनका बुज़ुर्ग बाप रहा जो गाहे बगाहे उनका हाल का पता करता और उन्हें नसीहतें देता रहा।

यह माँ-बाप का अपने बच्चों के साथ ताल्लुक़ से मुताबिक़त रखता है। शुरू शुरू में बच्चे हर पहलू से अपने माँ-बाप पर इंहिसार करते हैं। फिर वह रेंगने लगते हैं, माँ का दूध छोड़कर खाना खाना शुरू करते हैं, फिर चलने-फिरने और बोलने लगते हैं। यों वह रफ़्ता रफ़्ता ख़ुदमुख़तार हो जाते हैं। अब फ़र्ज़ करें कि जब बच्चा चलने लगा तो माँ-बाप ने उसे चलने से मना कर दिया। क्या यह ज़ुल्म न होता? बल्कि अच्छे माँ-बाप अपने बच्चों की क़दम बक़दम हौसलाअफ़्ज़ाई करते हैं और शाबाश कहते हैं जब कोई तरक़्क़ी नज़र आए। इसी तरह अकसर माँ-बाप ख़ुश होते हैं जब उनके बच्चे बालिग़ होकर पूरे तौर पर ख़ुदमुख़तार हो जाते हैं। शायद यह मरहला माँ-बाप के लिए तकलीफ़देह भी हो जब बच्चे घर से निकलकर कहीं और रहने लगें। लेकिन अगर इनसान अपने पाँव पर खड़ा होना चाहे तो लाज़िम है कि ख़ुदमुख़तार हो जाए। जो माँ-बाप इससे कतराते हुए अपने बालिग़ बच्चों को ख़ुदमुख़तार होने नहीं देते न उनके बच्चे तरक़्क़ी करेंगे, न माँ-बाप के बच्चों के साथ ताल्लुक़ात सेहतमंद होंगे।

इस तरह हर नई जमात को खुदमुख़तारी की तरफ़ बढ़ना चाहिए। मादर जमात को मक़ामी ईमानदारों की हौसलाअफ़्ज़ाई करनी है ताकि वह जल्द अज़ जल्द ख़ुदमुख़तार होकर अपने पाँव पर खड़े हो जाएँ। पूरी खुदमुख़तारी उस वक़्त होगी जब नई जमात के राहनुमा अपने फ़ैसले ख़ुद करेंगे। और जो मादर जमात इसके बाद नई जमात को हमेशा के लिए अपनी गिरिफ़्त में रखने की कोशिश करे उसके इस जमात के साथ ताल्लुक़ात ग़ैरसेहतमंद होंगे।

5

जज

> क्या आप में एक भी सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? (1 कुरिंथियों 6:5)

इनसाफ़ करने की अशद्द ज़रूरत

मुंसिफ़ या जज जैसे अलफ़ाज़ जमातों के राहनुमाओं के लिए निहायत ही कम इस्तेमाल होते हैं। इसकी कई एक वुजूहात हैं। पहले तो यह कि मुंसिफ़ या जज के बारे में लोग मनफ़ी सोच रखते हैं। हम सब कचहरी से गुरेज़ करते हैं, क्योंकि कोई नहीं उसके चंगुल में फँसना चाहता है। जब हम कहते हैं, “वह अपने आपको जज समझता है” या “वह वकील-सा है” तो मतलब है मज़कूरा आदमी दूसरों पर रोब डालना चाहता है, उन पर हुकूमत जताना चाहता है, वह सख़्त फ़ैसले करता है, उसका सियासी किरदार है, वह चालाक बंदा है, वह दूसरों को अपने हीलों में फँसाना चाहता है, वह फ़राडिया है वग़ैरा। आम सोच यही है।

दूसरे, हमारे ज़हन में ईसा अल-मसीह की बात नक़्श है कि

> दूसरों की अदालत मत करना, वरना तुम्हारी अदालत भी की जाएगी। क्योंकि जितनी सख़्ती से तुम दूसरों का फ़ैसला करते हो उतनी सख़्ती से

> तुम्हारा भी फ़ैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम भी नापे जाओगे। तू क्यों ग़ौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी आँख में शहतीर है। रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ़ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा। (मत्ती 7:1-5)

लेकिन हमारा आक़ा जमात के राहनुमाओं को इनसाफ़ करने से नहीं रोकना चाहता बल्कि हमें मुनाफ़क़त से आगाह करता है। जो मुंसिफ़ बनकर दूसरों पर ऐसा क़ानून लागू करे जिसके मुताबिक़ वह ख़ुद नहीं चलता वह मुनाफ़िक़ है। मुनाफ़िक़ दूसरों से बहुत ऊँची तवक़्क़ोआत रखता है लेकिन अगर उसकी अपनी ज़िंदगी पर ग़ौर किया जाए तो वह ख़ुद इन तवक़्क़ोआत पर पूरा नहीं उतरता।

शायद क़ारी ने इसका मुशाहदा भी किया हो कि अकसर औक़ात जो दूसरों की कंजूसी का गिला-शिकवा करें वह ख़ुद कंजूस हैं। जो दूसरों के लालच पर इलज़ाम लगाते हों वह ख़ुद लालची हैं। जो दूसरों की बेराहरवी पर ग़ुस्से हों वह कई बार ख़ुद बेराहरवी का शिकार हुए हैं। यह इनसान का रुझान है कि वह दूसरों के तिनके तो बड़े ग़ौर से देखे लेकिन अपने शहतीर के लिए अंधा रहे। यों दानिशमंद ख़ादिम उन लोगों पर ध्यान देता है जो गिले-शिकवे करते हैं, क्योंकि बहुत बार उनकी अपनी ज़िंदगी में बड़े मसायल छुपे होते हैं।

ग़रज़ हमारा आक़ा इससे इनकार नहीं करता कि जमात के राहनुमा इनसाफ़ करें बल्कि वह दीगर मक़ामात पर भी इनसाफ़ करने पर ज़ोर देता है (मत्ती 18:15 ओ-माबाद)। पौलुस रसूल इस बात की तसदीक़ करता है,

> आप में यह जुरअत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाज़ा हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? क्या आप नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस क़ाबिल नहीं कि छोटे-मोटे झगड़ों का फ़ैसला कर सकें? क्या आपको मालूम नहीं कि हम फ़रिश्तों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम

> रोज़मर्रा के मामलात को नहीं निपटा सकते? और इस क़िस्म के मामलात को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यों मुक़र्रर करते हैं जो जमात की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आप में एक भी सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के क़ाबिल हो? लेकिन नहीं। भाई अपने ही भाई पर मुक़दमा चलाता है और वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।
> (1 कुरिंथियों 6:1-8)

पौलुस तवक़्क़ो करता है कि जमात ख़ुद इनसाफ़ क़ायम रखे। अगर भाइयों के दरमियान कोई झगड़ा या ना-इत्तफ़ाक़ी हो या जमात में कोई किसी दूसरे को नुक़सान पहुँचाए तो जमात के राहनुमा इस मामले को हल करें ताकि जमात दुबारा सुलह-सलामती का नमूना बन जाए। चूँकि जमात अल्लाह की बादशाहत की ज़ाहिरी शक्ल है इसलिए उस में ना-इत्तफ़ाक़ी नहीं होनी चाहिए बल्कि उसे आसमानी बादशाहत की सुलह-सलामती, रिफ़ाक़त और आपस में मुहब्बत-भरे ताल्लुक़ात मुनअकिस करने चाहिएँ।

यहाँ "फ़ैसला / फ़ैसल करने" के पीछे यूनानी लफ़्ज़ का बुनियादी मतलब इम्तियाज़ करना है। जो इनसाफ़ क़ायम करना और क़ायम रखना चाहे लाज़िम है कि उसे इम्तियाज़ करने की नेमत हासिल हो। उसे दोनों पार्टियों के झूट और सच्चाई में इम्तियाज़ करने की ज़रूरत है ताकि वह सहीह फ़ैसला कर सके।

चुनाँचे पौलुस रसूल के लिए दो बातें बहुत अहम हैं। पहले यह कि जमात इनसाफ़ क़ायम रखने के लिए ख़ुद इनसाफ़ करे। यह उसके नज़दीक बड़ी शर्म की बात होगी अगर वह ग़ैरईमानदार जजों को फ़ैसला करने के लिए बुलाएँ। दूसरे, लड़नेवाली पार्टियों की रूह मसीहाना होनी चाहिए यानी वह दोनों तरफ़ से नुक़सान उठाने के लिए तैयार हों वरना वह मसीह की पैरवी नहीं कर रहे जिसने दूसरों के लिए अपनी जान दी।

क्या यह बात हमारी जमातों के लिए ख़ास अहमियत नहीं रखती? अगर जमात के राहनुमा सहीह फ़ैसले करते तो बहुत-से पैसे बचते, लड़नेवालों के लिए तकलीफ़ निसबतन कम होती और जमात में रूहुल-क़ुद्स का ख़ास इज़हार होता। अफ़सोस कि अकसर जमातों की हालत देखकर हमें पौलुस के साथ यह कहना पड़ता है, "क्या आप में एक भी सयाना शख़्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के क़ाबिल हो?"

दूसरी तरफ़ जमातों की बेशुमार ना-इत्तफ़ाक़ियाँ अदालत तक नहीं पहुँचतीं बल्कि जमात के अंदर छुपी रहती हैं। वह दबे हुए आतिशफ़िशाँ की मानिंद हैं जो अभी तो बुझा लगता है, लेकिन किसी भी वक़्त भड़ककर दूर-दराज़ इलाक़ों तक नुक़सान पहुँचा

सकता है। क्या जमात के राहनुमा ऐसी छुपी हुई ना-इत्तफ़ाक़ियों और झगड़ों से भी निपट सकते हैं? यह जमात के लिए एक बहुत बड़ा चैलेंज है जिससे उसकी बलूग़त और अहलियत ज़ाहिर होती है। मसला यह है कि अगर कोई अलानिया झगड़ा हो तो कुछ न कुछ तो करना ही होता है जबकि छुपे हुए झगड़े राहनुमाओं को फ़ौरन फ़ैसला करने के लिए मजबूर नहीं करते। यों अकसर उन्हें हल करने में देर हो जाती है। लेकिन अगर उनसे परदा न उठाया जाए तो उन पर क़ाबू नहीं पाया जा सकता, वह किसी भी वक़्त भड़ककर हद से ज़्यादा नुक़सान पहुँचा सकते हैं।

झगड़ों का हल

इनसाफ़ करने की एक अच्छी मिसाल पैदाइश की किताब में मिलती है। इसहाक़ का बेटा याक़ूब यह महसूस करके कि उसके मामूँ लाबन का ख़ानदान उससे तंग आ चुका है चुपके से फ़रार हो गया। लेकिन जब लाबन को मालूम हुआ तो उसका ताक़्क़ुब किया और दरयाए-यरदन को पार करने से पहले उसे जा पकड़ा। वह ख़ासकर इसके बारे में मुश्तइल था कि उसके घर के बुतों की चोरी हुई थी। लेकिन जब वह याक़ूब के सामान में न मिले तो याक़ूब ग़ुस्से होकर फ़रमाता है,

> मझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है? मैंने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी तुंदी से मेरे ताक़्क़ुब के लिए निकले हैं? आपने टटोल टटोलकर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है। तो आपका क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फ़ैसला करें कि हम में से कौन हक़ पर है। (पैदाइश 31:36-37)

याक़ूब यह ख़याल पेश करता है कि तनाज़े को हल करने के लिए दोनों तरफ़ के भाइयों को बुलाया जाए ताकि वह फ़ैसला करें। यह पौलुस रसूल और इब्तिदाई जमात के ख़याल से बहुत मुताबिक़त रखता है। अगर जमात में कोई झगड़ा या ना-इत्तफ़ाक़ी हो तो फ़ैसला भाइयों यानी जमात के राहनुमाओं से करवाया जाना चाहिए।

लेकिन हमें यह ख़याल उस वक़्त भी मिलता है जब इसराईल क़ौम बन गया था। आख़िर शरीअत का बुनियादी मक़सद यह था कि ख़ुदा और इनसानों के साथ ताल्लुक़ात सेहतमंद रहें और इनसाफ़ क़ायम रहे। मसलन

> लाज़िम है कि जमात इन हिदायात के मुताबिक़ उसके और इंतक़ाम लेनेवाले के दरमियान फ़ैसला करे। (गिनती 35:24)

ग़रज़ जमात के राहनुमाओं को अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़ फ़ैसला करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है।

फ़ैसला करना और यों सुलह-सलामती की हालत को क़ायम रखने का अमल इसराईलियों की राहनुमाई करने का मरकज़ी हिस्सा था। तौरेत के नविश्तों में बार बार इनसाफ़ और अदालत की अहमियत का ज़िक्र है। मूसा की ख़िदमत का एक बड़ा हिस्सा अदालत करना था। अपने सुसर यितरो के मशवरे पर उसने अदालत का सिलसिला मज़ीद मुअस्सर बनाने के लिए क़ाज़ी यानी अदालत करनेवाले मुक़र्रर किए (ख़ुरूज 18:13 ओ-माबाद)।

यशुअ और क़ुज़ात के ज़माने में भी अदालत करने और ख़ुदा का इनसाफ़ क़ायम रखने की ज़रूरत बहुत बार नज़र आती है। क़ुज़ात की किताब का एक दिलचस्प पहलू यह है कि उस ज़माने के क़ाज़ी क़ौम की न सिर्फ़ अंदरूनी सुलह-सलामती के लिए ज़िम्मेदार ठहरते थे बल्कि बैरूनी तौर पर भी। मिसाल के तौर पर जिदाऊन न सिर्फ़ इसराईल में अदालत करता था बल्कि मिदियानियों के ख़िलाफ़ जंग भी लड़ा (क़ुज़ात 8:10 ओ-बाद)। ग़रज़ क़ाज़ी का बुनियादी मक़सद यहाँ भी दिखाई देता है यानी यह कि क़ौम में सुलह-सलामती की हालत क़ायम रहे चाहे वह आपस में झगड़ों के हल की सूरत में हो, चाहे किसी दुश्मन के हमले के दिफ़ा में। समुएल भी इमाम और नबी होने के अलावा क़ाज़ी था (1 समुएल 7:15-17)।

यह भी इत्तफ़ाक़ की बात नहीं है कि सुलेमान बादशाह अल्लाह से सहीह इनसाफ़ करने की अहलियत माँगता है,

> मुझे सुननेवाला दिल अता फ़रमा ताकि मैं तेरी क़ौम का इनसाफ़ करूँ और सहीह और ग़लत बातों में इम्तियाज़ कर सकूँ। (1 सलातीन 3:9)

अकसर औक़ात सुलेमान की हिकमत का यह मक़सद नज़रंदाज़ किया जाता है, लेकिन यह हिकमत महज़ इल्म का हुसूल नहीं है। इस हिकमत का मक़सद इनसाफ़ करना ही था। सुलेमान जानता था कि मेरी राहनुमाई उस वक़्त कामयाब होगी जब मैं सहीह इनसाफ़ कर सकूँगा यानी क़ौम में सुलह-सलामती पैदा कर सकूँगा, वरना फ़ेल हो जाऊँगा।

आख़िर हम यह न भूलें कि इसराईल के नबियों का बुनियादी पैग़ाम इनसाफ़ और क़ौम की सुलह-सलामती था (मसलन 1 समुएल 12)। यानी वह ख़ुदा की मरज़ी पेश करते थे कि क़ौम के उसके साथ और एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात बहाल हों।

ग़रज़, पूरे कलाम में इनसाफ़ करने का अहम और मुसबत किरदार नज़र आता है। हमारे हाँ जहाँ दुनियावी अदालतों में फँसने से बहुत तकलीफ़ और दुख पैदा हो सकता है, क्या लाज़िम नहीं कि जमात इनसाफ़ करने की ज़िम्मेदारी से न कतराए?

हर ना-इत्तफ़ाक़ी का हल नामुमकिन

जदीद दौर का इनसान तवक़्क़ो करता है कि हर मसले का हल निकल आए। लेकिन लोगों के आपस में ताल्लुक़ात मशीन की तरह नहीं होते कि हम कोई पुरज़ा बदलकर उनकी मरम्मत कर सकें। दूसरे, ईमान की बहुत-सी बुनियादी बातें हैं जिनके सिलसिले में हम समझौता नहीं कर सकते। जब मूसा ने कोहे-सीना से उतरकर देखा कि इसराईली सोने का बछड़ा बनाकर उसकी पूजा कर रहे हैं तो उसने समझौता न किया बल्कि उन्हें सख़्त तंबीह की। लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि जमातों में बहुत-सी ऐसी ना-इत्तफ़ाक़ियाँ और झगड़े होते हैं जिनका ईमान से कोई ताल्लुक़ नहीं, अगरचे बहुत बार झगड़ा करनेवाले झगड़े को मज़हबी रंग देने की कोशिश करते हैं ताकि उनका नुक़ताए-नज़र ज़्यादा पुख़्ता लगे।

तीसरे, कभी कभी जमात के बिगड़े हुए ताल्लुक़ात या ना-इत्तफ़ाक़ियों का हल नामुमकिन है। उन्हें बरदाश्त करने के सिवा और कुछ नहीं किया जा सकता। इस नाते से यह याद रखना फ़ायदामंद है कि हमारे आक़ा ने यहूदाह इस्करियोती को बरदाश्त किया यह जानते हुए कि वह बेईमानी कर रहा है और आख़िरकार मुझे दुश्मन के हवाले करा देगा।

ताहम इस में कोई शक नहीं कि बहुत-से तनाज़े ख़त्म किए जा सकते हैं, ख़ासकर इस सूरत में कि जमात के राहनुमा शुरू में मुअस्सर क़दम उठाएँ। इस सिलसिले में पाँच उसूल पेश किए जा सकते हैं।

तनाज़े को कंट्रोल करना

जब मुख़्तलिफ़ पार्टियों के दरमियान तनाज़ा पैदा होता है तो सुलह करानेवाले का फ़ितरी रुझान यह है कि जल्द अज़ जल्द हल ढूँड निकाले। लेकिन अकसर औक़ात यह नाकाफ़ी

है, क्योंकि तनाज़े के पसे-परदा ताल्लुक़ात बिगड़ चुके हैं, और अगर यह ताल्लुक़ात बहाल न हो जाएँ तो कुछ देर के बाद लड़ाई दुबारा शुरू हो जाएगी। इसलिए सुलह करानेवाले का अव्वल ध्यान इस पर होगा कि लड़नेवाली पार्टियों का एक दूसरे के साथ रवैया अच्छा हो। हर झगड़े के हक़ीक़ी हल के लिए लाज़िम है कि झगड़नेवाले आज़ादी के साथ अपना नुक़ता बयान कर सकें यह यक़ीन रखते हुए कि दूसरे उन की बेइज़्ज़ती नहीं करेंगे। अकसर औक़ात यह तनाज़े के हल का सबसे मुश्किल मरहला होता है, क्योंकि अपनी बात मनवाने का एक आम तरीक़ा यह है कि दूसरे की बात और किरदार पर शक डाला जाए। ज़ाहिरी बात है कि जब किसी की बात और उसका किरदार मशकूक होगा तो लोग शक करनेवाले की बात की तरफ़ रुजू करेंगे। लेकिन यह एक शैतानी हीला है जो ख़ुदा के फ़रज़ंद के लिए नामुनासिब है।

मसीह ने ख़ुद फ़रमाया कि ईमानदार के लिए दो हुक्म मरकज़ी हैसियत रखते हैं,

> 'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।' (मत्ती 22:36-40)

यह हमारी एक दूसरे के साथ रिफ़ाक़त की बुनियाद है, और हर तनाज़े का हल उस वक़्त क़ायमो-दायम रहेगा जब एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात बहाल हो जाएँगे। इस नौबत तक पहुँचने के लिए लाज़िम है कि हम इब्तिदा ही में मुख़ालिफ़ पार्टियों के एक दूसरे के साथ अच्छे सुलूक पर ज़ोर दें। अगर वह शुरू शुरू में एक दूसरे को गालियाँ दें और मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से एक दूसरे की बेइज़्ज़ती करें तो इसका अच्छा नतीजा नहीं निकल सकता।

सुलह करानेवाला किस तरह ऐसा माहौल पैदा कर सकता है जिस में तमाम मुतअस्सिर पार्टियाँ आज़ादी और बा-इज़्ज़त तरीक़े से एक दूसरे से बात कर सकें? पहला क़दम यह है कि इब्तिदा ही में तमाम पार्टियाँ कुछ उसूलों पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ। मसलन

- हम एक दूसरे की बेइज़्ज़ती नहीं करेंगे।
- हम एक दूसरे की बात या किरदार पर शक नहीं डालेंगे।
- बात करते वक़्त हम अपने ख़यालात और एहसासात पेश करेंगे।

तीसरे उसूल का मतलब यह है कि हम यह न कहें कि "लोग कहते हैं" या "आप कहते हैं" या "दूसरे कहते हैं" बल्कि "मेरा ख़याल है," या "मैं समझता हूँ," या "मैं महसूस करता हूँ।" लोगों का फ़ितरी रुझान यह है कि वह अपने एहसासात को बयान करने से कतराएँ और अपनी बातें दूसरों के मुँह में डालने की कोशिश करें, क्योंकि वह दूसरों के हमलों से डरते हैं और मौरिदे-इलज़ाम नहीं ठहरना चाहते। लेकिन ऐसे तरीक़े से माहौल सिर्फ़ ख़राब हो जाता है और बात नहीं बनती। तनाज़े के हल के लिए बहुत ज़रूरी है कि लोग जुरअत के साथ अपने दिल की बात पेश करें और गोल-मोल बातें न करें, न अपनी बातें दूसरों के मुँह में डालें।

जो भी उसूल क़ायम किए जाएँ लाज़िम है कि तमाम लोग उन पर मुत्तफ़िक़ हों। तब एक को मुक़र्रर करें जो माडरेटर (सालिस) के तौर पर ध्यान रखे कि लोग इन उसूलों पर अमल करें। उसे यह ज़िम्मेदारी दी जाए कि वह फ़ौरन लोगों को ख़बरदार करे जब वह इन उसूलों से तजावुज़ करें। वह बार बार लोगों को याद दिलाए कि हम सब मसीह में बराबर हैं, इसलिए लाज़िम है कि हम एक दूसरे की इज़्ज़त करें।

हलीमी की ज़रूरत

झगड़नेवालों के लिए निहायत अच्छा नमूना मूसा है। एक मौक़े पर मूसा के भाई और बहन हारून और मरियम उसके ख़िलाफ़ बातें करने लगे। इसकी वजह तो उसका कूश की एक औरत के साथ ब्याह था, लेकिन पसे-परदा दोनों ने मूसा के इख़्तियार पर शक डाला,

> क्या रब सिर्फ़ मूसा की मारिफ़त बात करता है? क्या उसने हमसे भी बात नहीं की? (गिनती 12:2)

मूसा का रद्दे-अमल क़ाबिले-ग़ौर है। इतना ही लिखा है कि

> लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था। (गिनती 12:3)

इसके अलावा और कुछ नहीं। मतलब है कि उसने अपना दिफ़ा न किया बल्कि ख़ामोश रहा। हलीमी का उस पर यह असर था कि उसने अपने आपका दिफ़ा करने की ज़रूरत महसूस न की बल्कि अल्लाह पर भरोसा रखा कि वह मेरा दिफ़ा करेगा।

मूसा का यह रवैया जमात के हर एक राहनुमा के लिए नमूना होना चाहिए। अगर हम वाक़ई बेगुनाह हों तो हम तसल्ली के साथ अपना दिफ़ा ख़ुदा पर छोड़ सकते हैं। लाज़िम है कि हम हमेशा इस बात को याद रखें। हम हक़ीक़ी हलीमी की बिना पर आगे बढ़ेंगे और एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात में तरक़्क़ी करेंगे, चाहे लोग हमारी बेइज़्ज़ती क्यों न करें।

जब एक जमात के मशहूर राहनुमा से पूछा गया कि आप क्या करते हैं जब लोग आपके ख़िलाफ़ बातें करते हैं? तो उन्होंने जवाब में कहा, "मैंने एक राज़ सीख लिया है, यह कि मैं कभी अपना दिफ़ा नहीं करता।"

तनाज़े पर क़ाबू न पाने के बुरे असरात

अबीसलूम की सरकशी एक इबरतनाक मिसाल है (2 समुएल अबवाब 13-18)। अगर दाऊद शुरू ही में अबीसलूम की ग़लत हरकतों पर क़ाबू पाता और बार बार उस पर पाबंदियाँ लगाता तो उसके और पूरे मुल्क के लिए इतना नुक़सान न होता।

पहले यह हुआ कि दाऊद के पहलौठे बेटे अमनोन ने अबीसलूम की बहन तमर की इसमतदरी की। चाहिए था कि दाऊद अमनोन को मुनासिब सज़ा देता, लेकिन अगरचे वह ग़ुस्से हुआ तो भी उसने इससे ज़्यादा कुछ न किया। नतीजे में तमर के सगे भाई अबीसलूम ने ख़ुद बदला लेकर अमनोन को क़तल किया। अब चाहिए था कि दाऊद अबीसलूम को मुनासिब सज़ा देता, लेकिन यह भी न हुआ बल्कि अबीसलूम फ़रार होकर अपनी माँ के वतन चला गया जहाँ से उसे तीन साल के बाद वापस बुला लिया गया। असल में दाऊद ने अपने बेटों की ग़लत हरकतों से आँखें बंद रखीं। जब कुछ देर के बाद अबीसलूम खुले तौर पर बादशाह के ख़िलाफ़ बग़ावत की तैयारियाँ करने लगा तो दाऊद ने कोई क़दम न उठाया। तनाज़े का यह सिलसिला पढ़ते हुए हम बार बार पुकारना चाहते हैं, "ऐ दाऊद, अपनी आँखों को खोल! देख, तेरा सख़्त नुक़सान हो रहा है।" आख़िरकार हालात इतने ख़राब हुए कि दाऊद जिलावतन हुआ और बड़ी मुश्किल से दुबारा तख़्त पर बैठ गया।

ग़रज़, हमें तनाज़े के सिलसिले को कंट्रोल करने की अशद्द ज़रूरत है। यहाँ तनाज़े के तसलसुल को कंट्रोल करने का एक बहुत अहम उसूल भी नज़र आता है :

शुरू ही में तनाज़े से निपटना

अगर दाऊद बादशाह शुरू ही में सहीह क़दम उठाता और अमनोन को सज़ा देता तो पूरे मुल्क पर इसका अच्छा असर पड़ता। अकसर औक़ात जमात के तनाज़े इसलिए पेचीदा होते हैं कि वह बड़ी देर तक चलते आए हैं। बहुत बार झगड़े बीस-तीस साल या इससे ज़्यादा अरसे तक चलते रहते हैं। नतीजे में उनको ख़त्म करना इनसानी नज़र से नामुमकिन लगता है। मुख़ालिफ़ पार्टियों के दरमियान झगड़े इतने सख़्त और लोग इतने मजरूह हुए हैं कि उनके ताल्लुक़ात को बहाल करने के लिए अल्लाह के ख़ास फ़ज़ल की ज़रूरत होती है। चुनाँचे हमें इस पर ख़ास ध्यान रखने की ज़रूरत है कि तनाज़े को इब्तिदा ही में ख़त्म करें।

तनाज़े के हल का रास्ता तैयार करना

बचपन में याक़ूब के अपने भाई एसौ के साथ ताल्लुक़ात अच्छे नहीं थे। पहले उसने एसौ से पहलौठे का हक़ दाल के सालन के एवज़ हासिल किया और बाद में पहलौठे की बरकत भी उससे छीन ली। लिहाज़ा एसौ को याक़ूब से बड़ी नफ़रत थी। याक़ूब फ़रार होकर अपने मामूँ लाबन के घर चला गया। वहाँ वह बहुत सालों तक रहा, लेकिन आख़िरकार वह अपने वतन वापस आ गया। लेकिन उसे मालूम था कि वहाँ एसौ मेरे इंतज़ार में होगा। इस मौक़े पर हम देखते हैं कि याक़ूब की तनाज़े से निपटने की महारत बहुत बढ़ चुकी है।

पहले वह एसौ के साथ मुलाक़ात की तैयारियाँ करता है (पैदाइश 32)। वह अपने आगे आगे एसौ को बहुत-से जानवर भेजता है ताकि उसका दिल नरम हो जाए। साथ साथ वह इन तोह्फ़ों से इसका इज़हार करता है कि अब पुराने दिनों के झगड़े ख़त्म हैं। जो बरकत ख़ुदा ने मुझे दी है वह तेरी भी है। आओ, हम भाई की हैसियत से सुलह-सलामती के साथ इस मुल्क में रहें। और वाक़ई एसौ की नफ़रत दूर हो जाती है और दोनों के आपस में ताल्लुक़ात बहाल हो जाते हैं।

क्या हम पुराने झगड़ों को ख़त्म करने की जुरअत कर सकते हैं? या हम यह क़दम उठाने से कतराते कतराते बूढ़े हो जाएँगे? मुबारक है वह जो झगड़े का तसलसुल कंट्रोल करके इसे ख़त्म कर पाए। याक़ूब ने पुराने झगड़े का सामना किया, क्योंकि वह जानता

था कि किसी भी वक़्त हमारी मुलाक़ात होगी, लिहाज़ा बेहतर है कि उसके मुझ पर अचानक हमला करने से पहले मैं ख़ुद ही उसका सामना करूँ। और फिर उसने पूरी कोशिश की कि भाई का दिल मुलाक़ात से पहले मेरी तरफ़ मायल हो जाए, कि भाई पहले महसूस करे कि याक़ूब असल में मेरे लिए ख़तरे का बाइस नहीं है बल्कि मेरे साथ सुलह-सलामती के साथ रहना चाहता है। वह मेरे बारे में मनफ़ी बातें नहीं सोचता बल्कि मेरे हक़ में है। उस में मझसे चीज़ें छीनने की रूह नहीं रही बल्कि वह मेरे साथ अपनी मिलकियत तक़सीम करने तक तैयार है।

जमात के झगड़ों में याक़ूब का-सा रवैया शाज़ो-नादिर ही नज़र आता है। लेकिन यक़ीन करें कि जहाँ दो पार्टियों के ताल्लुक़ात कशीदा और बिगड़े हुए हों वहाँ याक़ूब के-से रवैये का इज़हार बहुत कुछ बहाल कर सकता है। इसलिए कि इससे मुख़ालिफ़ पार्टी महसूस करती है कि यह लोग असल में हमारे साथ अच्छे ताल्लुक़ात चाहते हैं, उनके लिए हमारे साथ अच्छे ताल्लुक़ात निहायत अहम हैं। वह हक़ीक़त में हमारी क़दर करते हैं और हमारे लिए ख़तरा नहीं बनना चाहते। अगर कम से कम एक पार्टी यों सोचने लगे तो अकसर औक़ात झगड़ा एक दूसरे का सामना करने से पहले ही इख़्तिताम की तरफ़ बढ़ने लगेगा।

मुख़ालिफ़ों को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाना

जब लोगों के आपस में ताल्लुक़ात बिगड़ने लगते हैं तो मामूल के मुताबिक़ वह दूसरे लोगों को भी शामिल करते हैं ताकि उनकी बात पुख़्ता हो जाए और मानी जाए। वह सुलह करानेवाले को झगड़े के हल की ज़िम्मेदारी भी देना चाहेंगे। इसकी कई वुजूहात हैं। एक तो वह अपने आपको महफ़ूज़ रखना चाहते हैं। दूसरे, अगर झगड़ा ख़त्म न हो सके तो उनका अपना क़ुसूर नहीं होगा बल्कि सुलह करानेवाले का।

इसका सहीह जवाब सुलह करानेवाले के लिए निहायत अहम है। अगर वह यह ज़िम्मेदारी क़बूल कर ले तो जितने ताल्लुक़ात बिगड़ चुके होंगे उतना ही सुलह करानेवाला पिसता रहेगा। जितना वह कोशाँ रहेगा उतना ही तनाज़े का मनफ़ी असर उस पर आन पड़ेगा। इसका क्या हल है? सलाहकारी के बारे में तहक़ीक़ात और कलाम की गवाहियाँ यह ज़ाहिर करती हैं कि इस नाज़ुक मोड़ पर लाज़िम है कि सुलह करानेवाला मुख़ालिफ़ों

को झगड़े के हल के लिए उनकी अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाए। मुख़ालिफ़ पार्टियाँ पूरी कोशिश करेंगी कि सुलह करानेवाले को अपनी तरफ़ मायल करें। वह चाहेंगी कि वह उनके हक़ में फ़ैसला करे और यों फ़ैसला करने की ज़िम्मेदारी ख़ुद उठाए। अगर वह फ़ैसला करे तो अकसर इसका नतीजा क्या होगा? जिस पार्टी के हक़ में वह फ़ैसला करेगा वह ख़ुश होगी, जबकि दूसरी पार्टी ग़मगीन हो जाएगी, क्योंकि वह समझेगी कि हम हार गए हैं, हमारी बेइज़्ज़ती हुई है। कभी कभी झगड़ा यों ख़त्म हो जाएगा, लेकिन अकसर औक़ात हारनेवाले यह फ़ैसला नहीं मानेंगे बल्कि किसी और तरीक़े से अपनी बात मनवाने की कोशिश करेंगे। जो भी नतीजा निकले एक बात यक़ीनी है, यह कि सुलह करानेवाला पिसता रहेगा। क्योंकि वह क़ुसूरवार ठहरेगा, इसलिए कि उसने फ़ैसला करने की ज़िम्मेदारी ख़ुद उठाई है। यों झगड़े का असल हल नहीं होता।

इसका क्या हल है? यह कि सुलह करानेवाला मुख़ालिफ़ पार्टियों को बार बार उनके झगड़े से निपटने की अपनी ज़िम्मेदारी की याद दिलाए। अगर कोई पार्टी उसे अपनी तरफ़ मायल करने की कोशिश करके उसे फ़ैसला करने की ज़िम्मेदारी देने की कोशिश करे तो वह यह ज़िम्मेदारी उनको वापस देकर यह कहे कि यह आपकी ज़िम्मेदारी है। आप मसीह में भाई भाई हैं। मसीह चाहता है कि आप ख़ुद सुलह करें वरना कोई हक़ीक़ी हल नहीं निकल सकेगा।

बेशक ऐसे सख़्त झगड़े भी होते हैं जिन में मुख़ालिफ़ों से अलग फ़ैसले करनेवालों की ज़रूरत होती है। ताहम ख़ादिम को जल्दी से फ़ैसले की ज़िम्मेदारी क़बूल करने से कतराने की ज़रूरत है। कलाम में इसकी बहुत-सी मिसालें मिलती हैं।

नातन की तमसील

जब दाऊद ने बत-सबा के साथ ज़िनाकारी की और उसके ख़ावंद ऊरियाह को क़तल करवाया तो अल्लाह ने नातन को भेजकर यह पैग़ाम दिया,

> किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, लेकिन ग़रीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची जो उसने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उसकी परवरिश करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उसकी प्लेट से खाती, उसके प्याले से पीती और रात को उसके

> बाज़ुओं में सो जाती। ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की-सी हैसियत रखती थी। एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने ग़रीब आदमी से उसकी नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे मेहमान के लिए तैयार किया। (2 समुएल 12:1-4)

दाऊद का रद्दे-अमल किया था? वह ग़ुस्से में आकर कहने लगा,

> रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक़ है। (2 समुएल 12:5)

ग़रज़ नातन फ़ैसले की ज़िम्मेदारी दाऊद पर छोड़ता है। उसकी ख़ूबसूरत तमसील का यही मक़सद था कि दाऊद को अपने गुनाह की सख़्ती का एहसास दिलाया जाए और वह ख़ुद अपने बारे में फ़ैसला करे (1 सलातीन 20:38-43 से मुक़ाबला करें जहाँ अख़ियब बादशाह भी नबी के हाथ अपने बारे में फ़ैसला करता है)।

सुलेमान बादशाह का नमूना

एक बार दो कसबियाँ बादशाह के सामने खड़ी होकर उसे अपना झगड़ा पेश करने लगीं। दोनों का अपना अपना बच्चा था, और वह एक ही घर में रहती थीं। अब यों हुआ था कि रात के वक़्त एक औरत का बच्चा मर गया तो उसने अपने बच्चे को दूसरी ख़ातून के पास लिटाकर उसके बच्चे को ले लिया।

सुलेमान का जवाब मशहूर है। उसने हुक्म दिया कि ज़िंदा बच्चे को तलवार से तक़सीम करके हर एक को आधा हिस्सा दे दो। जवाब में ग़लत माँ मुत्तफ़िक़ हो गई जबकि असल माँ मिन्नत करने लगी, "नहीं मेरे आक़ा, उसे मत मारें! बराहे-करम उसे इसी को दे दीजिए" (1 सलातीन 3:26)। यों मुख़ालिफ़ पार्टियों ने ख़ुद फ़ैसला मुक़र्रर कर दिया, क्योंकि सहीह माँ ने अपने बच्चे के लिए ज़िम्मेदारी का इज़हार किया।

अल-मसीह का फ़रमान

हमारे आक़ा ईसा अल-मसीह ने भी मुख़ालिफ़ों की तनाज़े को हल करने की अपनी ज़िम्मेदारी पर ज़ोर दिया,

> अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह ज़ाहिर कर। अगर वह तेरी बात माने तो तूने अपने भाई को जीत लिया। लेकिन अगर वह न माने तो एक या दो और लोगों को अपने साथ ले जा ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से तसदीक़ हो जाए। अगर वह उनकी बात भी न माने तो जमात को बता देना। और अगर वह जमात की भी न माने तो उसके साथ ग़ैरईमानदार या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर। (मत्ती 18:15-17)

ईसा हमें तनाज़े के हल के लिए तीन मरहले पेश करता है। अव्वल, अगर आप महसूस करते हैं कि आपका किसी के साथ ताल्लुक़ बिगड़ रहा है तो उससे बात करनी है। अगर वह न माने तो एक-दो और लोगों को साथ लेकर बात करनी है। और अगर इससे मसला हल न हो तो जमात की मदद लेना लाज़िमी है। इन अक़दाम का क्या मक़सद है? यह कि आपकी बात की तसदीक़ हो जाए। और अगर आपकी बात दुरुस्त न निकले तो आपके साथी आपको भी तंबीह कर सकते हैं। इसका दूसरा मक़सद यह है कि भाई की मदद की जाए और आपस के ताल्लुक़ात बहाल हो जाएँ। अगर मक़सद पूरा हुआ "तो तूने अपने भाई को जीत लिया।"

सोम, जमात के हर एक फ़रद को अपने बहन-भाइयों के साथ ताल्लुक़ात की बहाली की ज़िम्मेदारी दी गई है। अगर कोई झगड़ा या ना-इत्तफ़ाक़ी हो तो बेशक दूसरे भाई-बहनों की मदद से फ़ायदा उठाएँ। लेकिन याद रखें कि आपकी अव्वल कोशिश यह होनी चाहिए कि आपके अपने ईमानदार भाई और बहन के साथ ताल्लुक़ात बहाल हों। हम उस वक़्त ईमान के लिहाज़ से बालिग़ हैं जब हम अपने आपको दूसरे ईमानदारों के साथ ताल्लुक़ात की सेहत के लिए ज़िम्मेदार समझते हैं।

ज़्यादातर तलख़ियाँ इस वजह से पैदा होती हैं कि लोग अपनी यह ज़िम्मेदारी क़बूल नहीं करते। वह दूसरों पर इंहिसार करते हैं कि वह उनके मसायल हल करें। वह ख़ुद इस में अपना किरदार अदा करने के लिए तैयार नहीं हैं, क्योंकि दूसरों को अपने मसायल और झगड़ों के लिए क़ुसूरवार ठहराना आसान है। यों बेशुमार ईमानदार अपनी जमात के राहनुमाओं को जमात के हर मसले के लिए मौरिदे-इलज़ाम ठहराते हैं जबकि वह ख़ुद इस में अपना हिस्सा तसलीम करने के लिए तैयार नहीं होते, न वह हक़ीक़त में मसले के हल के लिए कोई क़दम उठाना चाहते हैं।

यगांगत का रूहानी नतीजा : इख़्तियार

हमने देख लिया है कि यहाँ मसीह का ज़ोर ताल्लुक़ात की सेहत पर है। सहीह ताल्लुक़ात क्यों ज़रूरी हैं? मत्ती की किताब में लिखा है,

> मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम ज़मीन पर बाँधोगे आसमान पर भी बँधेगा, और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा। मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुम में से दो शख़्स किसी बात को माँगने पर मुत्तफ़िक़ हो जाएँ तो मेरा आसमानी बाप तुमको बख़्शेगा। क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा। (मत्ती 18:18-20)

अकसर औक़ात यह आख़िरी जुमला दुआइया मीटिंग के मौक़े पर कहा जाता है, लेकिन इसका सहीह मज़मून ताल्लुक़ात की बहाली है। जब हमारे ताल्लुक़ सेहतमंद हैं तब ही ख़ुदावंद मसीह हाज़िर होकर हमें रूहानी इख़्तियार देता है। जब हमारे ताल्लुक़ात ख़राब हों तो हमारा इख़्तियार भी जाता रहेगा।

क्या अजब कि बहुत-सी जमातें कमज़ोर हैं और उनका इख़्तियार जाता रहा है।

ग़ैरजानिबदार तरीक़े से लड़ना

शायद क़ारी एतराज़ करे कि ईमानदार को लड़ना नहीं चाहिए। एक लिहाज़ से यह दुरुस्त है, लेकिन दूसरे लिहाज़ से लड़ना मुनासिब और ज़रूरी है अगर मसीह की रूह में लड़ा जाए तो। हम देख चुके हैं कि हमारा अव्वल मक़सद दूसरे ईमानदारों के साथ सेहतमंद ताल्लुक़ात है। इसी लिए लड़ाई की ज़रूरत है। लेकिन ईमानदार की लड़ाई का निशाना दूसरा ईमानदार नहीं है बल्कि बिगड़े हुए ताल्लुक़ात। लिहाज़ा सुलह करानेवाले का ध्यान इस पर हो कि मुख़ालिफ़ पार्टियाँ अपने बाहमी ताल्लुक़ात पर ग़ौर करें और इसी पहलू से अपने झगड़े के हल के बारे में बात करें। वह तू-तू मैं-मैंवाली बातें छोड़ दें। वह ठंडे दिल से बात करें। दोनों पार्टियाँ कोई ऐसा हल ढूँड निकालें जो दोनों के लिए फ़ायदामंद हो।

यहूदी और ग़ैरयहूदी ईमानदारों का झगड़ा

आमाल 15 में रसूलों का रवैया हमें मसीह की रूह में लड़ने के बारे में बहुत कुछ सिखा सकता है। एक पार्टी इसका तक़ाज़ा करती थी कि जो ग़ैरयहूदी ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए हैं उन्हें भी ख़तने और तौरेत के तमाम अहकाम पर अमल करने की ज़रूरत है। पतरस और पौलुस रसूल इस बात पर एतराज़ करते हैं :

> बहुत बहस मुबाहसा के बाद पतरस खड़ा हुआ और कहा, “भाइयो, आप जानते हैं कि अल्लाह ने बहुत देर हुई आप में से मुझे चुन लिया कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ ताकि वह ईमान लाएँ। और अल्लाह ने जो दिलों को जानता है इस बात की तसदीक़ की है, क्योंकि उसने उन्हें वही रूहुल-क़ुद्स बख़्शा है जो उसने हमें भी दिया था। उसने हम में और उन में कोई भी फ़रक़ न रखा बल्कि ईमान से उनके दिलों को भी पाक कर दिया। चुनाँचे आप अल्लाह को इस में क्यों आज़मा रहे हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गरदन पर एक ऐसा जुआ रखना चाहते हैं जो न हम और न हमारे बापदादा उठा सकते थे? देखें, हम तो ईमान रखते हैं कि हम सब एक ही तरीक़े यानी ख़ुदावंद ईसा के फ़ज़ल ही से नजात पाते हैं।”
>
> तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बरनबास उन्हें उन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे में बताने लगे जो अल्लाह ने उनकी मारिफ़त ग़ैरयहूदियों के दरमियान किए थे। (आमाल 15:7-12)

दिलचस्प बात यह है कि अगरचे एक फ़िरक़ा तौरेत पर अमल करने का तक़ाज़ा करता है, तो भी सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हम सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह के सलीबी फ़िदिये से नजात पा सकते हैं। यह इससे ज़ाहिर होता है कि कोई एतराज़ नहीं करता जब पतरस इस हक़ीक़त का ज़िक्र करता है (आमाल 15:11)। यों लगता है कि सबको यह फ़िकर है कि अगर नए ग़ैरयहूदी ईमानदार तौरेत पर अमल न करें तो यहूदियों के साथ उनके ताल्लुक़ात बिगड़ जाएँगे। चुनाँचे आख़िरकार याक़ूब खड़ा होकर एक ऐसा समझौता पेश करता है जिसे दोनों पार्टियाँ क़बूल कर सकते हैं यानी दो-चार ऐसी पाबंदियाँ जिन पर अमल करने से यहूदी उन पर और नतीजे में मसीह पर ईमान लानेवाले यहूदियों पर इलज़ाम न लगा सकें,

> बुतों को पेश किया गया खाना मत खाना, ख़ून मत खाना, ऐसे जानवरों का गोश्त मत खाना जो गला घूँटकर मार दिए गए हों। इसके अलावा ज़िनाकारी न करें। (आमाल 15:29)

ग़रज़ यह इजतमा मसीह की रूह में लड़ने का अच्छा नमूना है। मुख़ालिफ़ पार्टियों को आपस में ताल्लुक़ात की सेहत की फ़िकर है, और वह पूरे दिल से अल्लाह की मरज़ी जानना चाहते हैं। इस सिलसिले में वह तनाज़े से गुरेज़ नहीं करते बल्कि खुले तौर पर उसका सामना करके बहस-मुबाहसा करने लगते हैं। और बहस करते करते वह एक दूसरे की बेइज़्ज़ती नहीं करते बल्कि मिलकर मसले का हल ढूँड निकालते हैं। आख़िरकार वह मुत्तफ़िक़ होकर अपना फ़ैसला ख़त की सूरत में दूसरी जमातों को भेजते हैं। क्या हम भी इसी तरह मसीह की रूह में लड़ सकते हैं?

पौलुस और बरनबास का झगड़ा

> कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, “आओ, हम मुड़कर उन तमाम शहरों में जाएँ जहाँ हमने ख़ुदावंद के कलाम की मुनादी की है और वहाँ के भाइयों से मुलाक़ात करके उनका हाल मालूम करें।”
>
> बरनबास मुत्तफ़िक़ होकर यूहन्ना मरक़ुस को साथ ले जाना चाहता था, लेकिन पौलुस ने इसरार किया कि वह साथ न जाए, क्योंकि यूहन्ना मरक़ुस पहले दौरे के दौरान ही पंफ़ीलिया में उन्हें छोड़कर उनके साथ ख़िदमत करने से बाज़ आया था। इससे उन में इतना सख़्त इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ कि वह एक दूसरे से जुदा हो गए। बरनबास यूहन्ना मरक़ुस को साथ लेकर जहाज़ में बैठ गया और क़ुबरुस चला गया, जबकि पौलुस ने सीलास को ख़िदमत के लिए चुन लिया। मक़ामी भाइयों ने उन्हें ख़ुदावंद के फ़ज़ल के सपुर्द किया और वह रवाना हुए। यों पौलुस जमातों को मज़बूत करते करते शाम और किलिकिया में से गुज़रा। (आमाल 15:36-41)

यह वाक़िया अकसर औक़ात ग़लत समझा जाता है। कहा जाता है कि पौलुस ने बड़ी ग़लती की थी, उनको समझौता करना चाहिए था। जुदा होना ईमानदारों के लिए मुनासिब नहीं है। लेकिन लाज़िम नहीं कि पौलुस का क़दम ग़लत था।

लड़ाई क्यों छिड़ गई? बरनबास इस पर बज़िद था कि मरक़ुस उनके साथ चले जब वह आज के तुरकी की तरफ़ रवाना हुए। इसके बरअक्स पौलुस इसरार करता रहा कि चूँकि मरक़ुस ने पहले दौरे के दौरान हमें छोड़ दिया इसलिए उसे साथ नहीं ले जाना चाहिए।

कहा जाता है कि पौलुस यहाँ बड़ा सख़्त नज़र आता है, कि उसे मरक़ुस को एक और मौक़ा देना चाहिए था। लेकिन इस हवाले से यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि पौलुस ने मरक़ुस को शख़्सी तौर पर रद्द किया था। यह भी नहीं लिखा है कि उसने मरक़ुस की ख़िदमत को हतमी तौर पर रद्द कर दिया था। वह सिर्फ़ यह कहना चाहता था कि मरक़ुस के साबितक़दम न होने से हमें बहुत तकलीफ़ पहुँची, इसलिए मैं उसे इस दौरे पर साथ नहीं लेना चाहता।

लड़ाई के सिलसिले में हम पौलुस और बरनबास की तकरार से क्या सीख सकते हैं? पहली बात, उन्होंने खुले तौर पर मसले का सामना किया। हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि ना-इत्तफ़ाक़ी ईमानदार के लिए मुनासिब नहीं। इसी वजह से बहुत बार लड़ाई पसे-परदा होती है। शायद जमातों में वह झगड़े ज़्यादा नुक़सानदेह हैं जो पसे-परदा लड़े जाते हैं। अगर मुख़ालिफ़ खुले तौर पर एक दूसरे के साथ बात न करें तो तनाज़े का हल किस तरह हो सकता है?

अगरचे वह मरक़ुस को साथ ले जाने में मुत्तफ़िक़ न हुए तो भी वह बाक़ी बातों और मिशन के लिहाज़ से मुत्तफ़िक़ रहे। इस ना-इत्तफ़ाक़ी ने उनका मिशन और ताल्लुक़ात न तोड़े। बरनबास ने वह नहीं किया जो बेशुमार ख़ादिम आजकल करते हैं। न वह अकेले मरक़ुस के साथ तुरकी के इलाक़े के लिए रवाना हुआ, न उसने अलग होकर अपनी अपनी जमातें क़ायम कीं। हर गज़ नहीं, बल्कि वह पौलुस के साथ इस में मुत्तफ़िक़ हुआ कि फ़िलहाल शायद मरक़ुस के लिए उस इलाक़े में जाना जहाँ वह पहले फ़ेल हो गया था फ़ायदामंद न हो। चुनाँचे वह दोनों क़ुबरुस को रवाना हुए जहाँ मरक़ुस पहले दौरे में उनके साथ गया था और जहाँ उसकी ख़िदमत कामयाब रही थी।

मसीह की रूह में अच्छी लड़ाई लड़ना एक ऐसा अमल है जिसे आसानी से नहीं सीखा जा सकता। लेकिन जो ख़ादिम इस में माहिर हो जाए वह जमात के लिए बरकत का बाइस है।

6

फ़ौजी अफ़सर

पिछले बाब में लड़ाई का ज़िक्र हुआ है। कलाम में रूहानी जंग का ज़िक्र भी हुआ है।[1] पौलुस रसूल फ़रमाता है,

> क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और आसमानी दुनिया की शैतानी क़ुव्वतों के साथ है। चुनाँचे अल्लाह का पूरा ज़िराबकतर पहन लें ताकि आप मुसीबत के दिन इबलीस के हमलों का सामना कर सकें बल्कि सब कुछ सरंजाम देने के बाद क़ायम रह सकें। (इफ़िसियों 6:12-13)

हम न भूलें कि एक रूहानी जंग हो रही है और हम भी इस में हिस्सा ले रहे हैं। लिहाज़ा रूहानी हथियारों की ज़रूरत है। लेकिन यहाँ हम जमात के राहनुमा के किरदार पर ग़ौर कर रहे हैं यानी रूहानी फ़ौजी अफ़सर पर।

फ़ौजी अफ़सर का क्या किरदार है? हमारी जंग उन जंगों से ज़्यादा मुताबिक़त रखती है जो इसराईलियों ने यशुअ की राहनुमाई में लड़ीं। यह जंगें बाद की जंगों से फ़रक़ थीं, और फ़ौजी अफ़सरान को कई उसूलों पर ध्यान रखने की ज़रूरत थी।

---

[1]मिसाल के तौर देखिए रोमियों 15:30-32; 1 कुरिंथियों 9:24–10:1; 2 कुरिंथियों 10:3-5; 1 तीमुथियुस 6:12; 2 तीमुथियुस 2:5)

नापाक चीज़ें ख़त्म करना

यशुअ के ज़माने में नापाक चीज़ों से दूर रहना इतना आसान नहीं था, क्योंकि फ़लस्तीन में बुतपरस्त अक़वाम बस्ती थीं जो नापाक ज़िंदगी गुज़ारती थीं। अल्लाह का हुक्म था कि उनको रूए-ज़मीन से मिटा कर पूरे मुल्क पर क़ब्ज़ा पाओ। यह भी रूहानी पेशवाओं के लिए एक अहम उसूल है। हमारा मुल्क पूरी दुनिया है और ख़ुदा का हुक्म है कि "जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाओ" (मत्ती 28:19)। हमारा मिशन सिर्फ़ इस में बदल गया है कि हम ईमान न लानेवालों को क़तल नहीं करते बल्कि उनसे मुहब्बत रखते हैं। बाक़ी चीज़ें वैसी की वैसी रही हैं। हमें फ़रमाया गया है कि इलाक़ों को मसीह के लिए जीतकर नापाक चीज़ें ख़त्म करो। बुतपरस्ती और तवह्हुमपरस्ती की बेशुमार शक्लें सख़्त मना हैं।

लड़नेवालों की पाकीज़गी

> मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा क़ुद्दूस हूँ। (अहबार 19:2)

जो मसीह पर ईमान लाया है उसे दुनिया से अलग किया गया है। ख़ुदा तक़ाज़ा करता है कि वह पाक हो और पाक ज़िंदगी यानी ख़ुदा की मरज़ी के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारे। जब अल्लाह के फ़ौजी जंग के लिए निकलते हैं तो उन्हें पहले अपने आपको मख़सूस करना चाहिए, अपने आपको परखना चाहिए, वरना वह जंग में फ़ेल हो जाएँगे।

एक ही बादशाह

यशुअ के ज़माने में अगरचे फ़ौजी अफ़सर थे, लेकिन तमाम फ़ौजी बराबर थे। वह क़बायल की सूरत में लड़ते थे और यह अल्लाह की मरज़ी थी। इस वजह से ख़ुदा को बड़ा दुख हुआ जब इसराईलियों ने बाद में बादशाह का तक़ाज़ा किया,

> रब ने जवाब दिया, जो कुछ भी वह तुझसे माँगते हैं उन्हें दे दे। इससे वह तुझे रद्द नहीं कर रहे बल्कि मुझे, क्योंकि वह नहीं चाहते कि मैं उनका बादशाह रहूँ। (1 समुएल 8:7)

जमात के फ़ौजियों का बादशाह अल्लाह है। अगरचे ज़रूरी है कि जमात के राहनुमा हों तो भी यह याद रखना लाज़िम है कि वह दूसरों से बरतर नहीं हैं बल्कि हम सब बराबर हैं, हम सब ख़ुदा के फ़रज़ंद और उसकी ममलकत के शहरी हैं।

जब हम जमात के राहनुमाओं का मुक़ाबला फ़ौजी अफ़सरान से करते हैं तो नोट करें कि जमात की बिरादरी में सब बराबर हैं। जमात के राहनुमाओं को हुक्म देने का हक़ नहीं है, और इस वजह से जमात की राहनुमाई करना एक बहुत बड़ा चैलेंज है। हम कफ़र्नहूम के फ़ौजी अफ़सर की तरह नहीं कह सकते कि "एक को कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता है" (लूक़ा 7:8)। नहीं, ख़िदमतगुज़ार अपनी मरज़ी से ख़िदमत करते हैं और यह अल्लाह की मरज़ी भी है। इस नाते से जमात का फ़ौजी अफ़सर जदीद ज़माने के फ़ौजी अफ़सरान से मुताबिक़त नहीं रखता बल्कि यशुअ और उसकी क़बायली जुमहूरियत से। उसकी राहनुमाई इस पर मुनहसिर है कि दूसरों ने उसे क़बूल किया है और अपनी मरज़ी से यह जंग लड़ते हैं। यह पेशे-नज़र रखते हुए जमात का फ़ौजी अफ़सर किन बातों पर ज़ोर देता है?

फ़ौज का इत्तफ़ाक़

ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया,

> जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी हालत हो वह भी क़ायम नहीं रह सकता। (मत्ती 12:25)

जब लोग फ़ौज में भरती होते हैं तो अफ़सरान की पहली कोशिश यह है कि वह पूछे बग़ैर और मिलकर हर हुक्म पर चलें। ड्रिल का मक़सद यही है। फ़ौज की कामयाबी की कुंजी इस में है कि तमाम सिपाही एक ही मक़सद के तहत चलें। फ़र्ज़ करें कि दस सिपाहियों को हुक्म दिया जाए कि वह रुककर फ़ाइरिंग करें और नौ सिपाही तो यों ही करें जबकि एक न रुके। या फ़र्ज़ करें कि सिपाही गुरोह की सूरत में हमला न करें बल्कि एक एक करके दुश्मन पर टूट पड़ें। तब उनका हमला मुअस्सर नहीं होगा बल्कि ऐन मुमकिन है कि वह एक दूसरे के हाथों ज़ख़मी या हलाक हो जाएँ।

चुनाँचे हर दुनियावी फ़ौज इसका ध्यान रखती है कि तमाम सिपाही हर हुक्म की इताअत करें। जो सिपाही हुक्म न माने उसे निकाल दिया जाता है। इस तरह की डिक्टेटरशिप जदीद फ़ौज में बहुत ज़रूरी है जबकि जमात की फ़ौज में हम किसी

की हुकूमत नहीं मानते और न मानना चाहिए। तो भी जमात की फ़ौज की कामयाबी इस पर मुनहसिर होगी कि सब मुत्तफ़िक़ हों। अगर जमात का एक हिस्सा एक बुज़ुर्ग के हक़ में हो और दूसरा हिस्सा उसके ख़िलाफ़ बातें करे तो यह जमात रूहानी जंग में किस तरह कामयाब हो सकेगी? जब इसराईली यरीहू के सामने खड़े थे तो फ़र्ज़ करें कि एक गुरोह कहता, "हम यशुअ का हुक्म नहीं समझते, हम क्यों उसके चौगिर्द गश्त करें?" यक़ीन जानें कि अल्लाह उन्हें फ़तह न बख़्शता, चाहे दीगर लोग कितनी ही बार गश्त क्यों न करते।

फ़ौजी अफ़सरान ऐसी ना-इत्तफ़ाक़ियाँ जल्दी से दूर कर देते हैं। जो मुत्तफ़िक़ नहीं उन्हें फ़ौरन निकाला जाता है। जमात के राहनुमा इस तरह के क़दम नहीं उठा सकते, न उन्हें ऐसा करना चाहिए। लेकिन उनकी ज़िम्मेदारी यह ज़रूर है कि वह लोगों को समझाएँ और इत्तफ़ाक़ पैदा करें। इस में उनकी तवज्जुह ख़ुदा और उन लोगों पर मरकूज़ हो जो ख़िदमतगुज़ार हैं। वह फ़ौज का पेशदस्ता हैं, जमात का ज़्यादातर काम उन्हीं के कंधों पर है। अगर वह मुत्तफ़िक़ न हों तो उनकी ख़िदमत का असर कम होगा, बल्कि ऐन मुमकिन है कि उनकी ख़िदमत से पूरी जमात का सत्यानास हो जाए।

जमात के मेंबरान की ना-इत्तफ़ाक़ियाँ कई बार नज़र नहीं आतीं। शायद सब लोग बैरूनी तौर पर इत्तफ़ाक़ का इज़हार करें जबकि अंदरूनी तौर पर वह मुत्तफ़िक़ न हों। बेदार जमात के राहनुमाओं को यह बात पेशे-नज़र रखना है और पसे-परदा की ना-इत्तफ़ाक़ियों को ख़त्म करने की कोशिश करनी चाहिए।

फ़ौजियों की ट्रेनिंग

फ़ौज में भरती होते ही सिपाहियों को सख़्त ट्रेनिंग दी जाती है। उन्हें वरज़िश करनी पड़ती है। ड्रिल्ज़ और मार्च करना इतना सख़्त होता है कि जवान ख़ूब थक जाते हैं। इतनी सख़्त ट्रेनिंग क्यों? अफ़सरान को मालूम है कि अगर जवान यह सख़्तियाँ बरदाश्त न कर सकें तो वह सिपाही होने के लायक़ नहीं हैं बल्कि जंग लड़ते वक़्त बाक़ी फ़ौज के लिए मसला बन जाएँगे। यों शुरू शुरू में कई बातों पर ज़ोर दिया जाता है।

फ़ौज की सेहत

सिपाही का सेहतमंद होना बहुत ज़रूरी है। उसके लिए ताक़त बख़्शनेवाली ख़ुराक ज़रूरी है, लेकिन वरज़िश और नींद भी ताकि सिपाही हर वक़्त बेदार और तैयार रह सके। जमात के राहनुमा भी इस पर ग़ौर करें कि वह ख़ुद और जमात के ख़िदमतगुज़ार फ़िट हों। वह उनकी रूहानी और जिस्मानी सेहत की फ़िकर करें। ख़ास सेमिनार ख़िदमतगुज़ारों के लिए रखे जाएँ जिनसे रूहानी तरक़्क़ी हो। नज़मो-ज़ब्त सीखने में उनकी मदद करें। हमारे मुआशरे में यह ख़ासकर नौजवानों को सिखाने की ज़रूरत है जिन में से चंद एक गलियों में आवारा फिरते रहते हैं। जो नज़मो-ज़ब्त उन्होंने अपने घरों में नहीं सीखा उसे जमात की ख़िदमत में सीखना बहुत ज़रूरी है वरना वह नाकाम हो जाएँगे। उनकी क़ुव्वते-बरदाश्त को बढ़ाने की ज़रूरत है वरना वह जमात की ख़िदमत की सख़्तियाँ बरदाश्त नहीं कर सकेंगे।

ग़रज़, जमात के राहनुमा को ख़िदमतगुज़ारों की ट्रेनिंग के सिलसिले में यह बात पेशे-नज़र रखनी चाहिए कि उनकी पूरी ज़िंदगी अल्लाह की मरज़ी के मातहत आ जाए, कि उनकी ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ शोबे उसके कंट्रोल में आ जाएँ और कि उनका किरदार पुख़्ता और मज़बूत हो जाए। शागिरदियत का यही मतलब है। ख़ुदा का कलाम न सिर्फ़ ख़ूबसूरत ख़यालात पेश करता है बल्कि वह पूरे इनसान को बदलना चाहता है।

हथियारों का सहीह इस्तेमाल

जो जवान नज़मो-ज़ब्त में कामयाब है उसे हथियारों का सहीह इस्तेमाल सिखाया जाता है। बंदूक़ चलाने के लिए उसके हर पुरज़े के बारे में सिखाया जाता है, और वह घंटों तक प्रैक्टिस करता रहता है। क्योंकि जब तक वह सहीह तौर पर निशाना बाँधने में कामयाब नहीं उस वक़्त तक हथियार का कोई फ़ायदा नहीं।

रूहानी जंग में भी हथियारों का सहीह इस्तेमाल बहुत ज़रूरी है। जमात के फ़ौजी अफ़सर इस पर ग़ौर करें कि फ़ौजी रूहानी जंग के लिए हथियारों का सहीह इस्तेमाल सीख लें और मश्क़ करते रहें। इन्हें इस्तेमाल न करने से हम दुश्मन के हमलों पर फ़तह नहीं पा सकेंगे। इन हथियारों के दो मक़ासिद हैं। इनसे सिपाही अपना दिफ़ा और दुश्मन पर हमला करता है।

यह हथियार क्या हैं? अव्वल, कमर में सच्चाई का पटका और सीने पर रास्तबाज़ी का सीनाबंद है (इफ़िसियों 6:14)। कितने ईमानदार झूट बोलने और बेईमानी करने से मैदाने-जंग में उतरने से पहले ही शिकस्त खा जाते हैं? दूसरे, पाँव के जूते सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए तैयार हैं। कितने ईमानदार सुलह-सलामती के साथ एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारते हैं? और कितने ईमानदार अल्लाह के कलाम के वादे और नसीहतें अपनाकर यों अपना दिफ़ा करते और इबलीस पर फ़तह पाते हैं? इसके लिए मश्क़ की ज़रूरत है यानी ख़ुदा के कलाम का मुतालआ करके इसका बार बार अपनी ज़िंदगी पर इतलाक़। इस नाते से जमात के राहनुमा की ज़िम्मेदारी यह नहीं कि वह उनकी ख़ातिर यह हथियार इस्तेमाल करे बल्कि यह कि वह उन्हें इन हथियारों को इस्तेमाल करने का फ़न सिखाए। किस तरह? अपने नमूने और अल्लाह के कलाम से।

जमात का सच्चा राहनुमा बार बार ख़िदमतगुज़ारों की इन हथियारों को इस्तेमाल करने की अहलियत परखेगा और उनकी हौसलाअफ़ज़ाई करता रहेगा ताकि वह "ख़ुदावंद और उसकी ज़बरदस्त क़ुव्वत में ताक़तवर बन जाएँ" (6:10)।

जंग लड़ने के तौर-तरीक़े

फ़ौजी अफ़सर फ़ौजियों को जंग लड़ने के तौर-तरीक़े सिखाता है। वह मशहूर फ़ुतूहात की वुजूहात ज़ाहिर करता और जंग लड़ने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों की तालीम देता है। यह भी जमात के फ़ौजी अफ़सर की एक ज़िम्मेदारी है। उसे ख़िदमतगुज़ारों के सामने जमात की फ़ुतूहात की वुजूहात बयान करनी चाहिएँ। उस पर भी ग़ौर करने की ज़रूरत है कि जमात ने किन किन बातों में शिकस्त खाई है। अपनी ज़ाती और जमात की तरक़्क़ी हासिल करने के मुफ़ीद तरीक़े सिखाने की ज़रूरत है।

राहनुमा को चाहिए कि वह उन्हें नई जमातें क़ायम करने और क़ायम रखने के तरीक़े और तकनीकें सिखाए। लेकिन यह भी ज़रूरी है कि जमात के राहनुमा तमाम ख़िदमतगुज़ारों के साथ मिलकर अपनी जमात के बारे में यह सवाल पूछें कि हमारी जमात ने कहाँ तरक़्क़ी की है? इसकी क्या क्या वुजूहात थीं? क्या हम इन तरीक़ों से मौजूदा ख़िदमत के लिए फ़ायदा उठा सकते हैं? नीज़, जमात के फ़ौजी अफ़सर को ख़िदमतगुज़ारों की इस में राहनुमाई करने की ज़रूरत है कि वह शैतान के क़ब्ज़े में पड़े हुए इलाक़ों पर ध्यान दें, उनके लिए दुआ करें और उन्हें मसीह के लिए जीतने के तरीक़े के बारे में सोचें। यह अगले क़दम के लिए लाज़िमी है।

क़ाबिल फ़ौजियों को अफ़सरी की ट्रेनिंग देना

फ़ौजी अफ़सर हमेशा इस पर भी तवज्जुह देता है कि कौन-से फ़ौजी क़ाबिल हैं। ऐसे लोगों को चुनकर अफ़सरी की ट्रेनिंग दी जाती है।

जमात के राहनुमाओं को भी बड़े ग़ौर से देखना चाहिए कि जमात के कौन-से मेंबरान ज़्यादा लायक़ हैं। शुरू में वह ऐसे लोगों को छोटी छोटी ज़िम्मेदारियाँ दें। अगर उन में क़ाबिलियत नज़र आए तो उन्हें मज़ीद ज़िम्मेदारियाँ दें। यों राहनुमाओं को आहिस्ता आहिस्ता उनकी ख़िदमत पर एतबार होने लगेगा। साथ साथ वह उन्हें तालीम भी दें।

ऐ बुज़ुर्ग! क्या आप ऐसे लोगों को सामने आने का मौक़ा देने के लिए तैयार हैं? अगर आप यह उज़्र पेश करते हैं कि जमात में मेरे अलावा कोई लायक़ नहीं है तो दाल में कुछ काला है। ऐसा हो ही नहीं सकता। यह अल्लाह की मरज़ी नहीं हो सकती कि जमात की राहनुमाई और ख़िदमत सिर्फ़ एक या दो अफ़राद की गिरिफ़्त में रहे। आजकल हमें ऐसे ख़ादिमों की ज़रूरत है जो नरमी से नए ख़िदमतगुज़ारों को पाल-पोस सकते हैं। इस तरह हम आइंदा भी कामयाब रहेंगे।

शैतानी इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करना

कुछ ख़िदमतगुज़ारों में यह रिवाज है कि वह कभी कभी तबलीग़ी दौरे पर जाते हैं। लेकिन गो ऐसे दौरे ग़लत नहीं हैं तो भी इनकी एक बड़ी कमज़ोरी है। इनका असर सिर्फ़ चंद दिनों तक रहता है जैसे कोई फ़ौज अचानक दुश्मन पर हमला करके फ़ौरन वापस चली जाए। बेशक वह इस तरह दुश्मन को बहुत नुक़सान पहुँचा सकती और उसे लूट भी सकती है। लेकिन इस हरकत से दुश्मन के मुल्क और रिआया पर क़ब्ज़ा नहीं किया जा सकता। इसके बरअक्स जो जमात मनसूबाबंदी के तहत लगातार एक ही इलाक़े में ख़िदमत करे वह ज़्यादा कामयाब होगी।

एक शहर में दो ख़ादिमों को गिर्दो-नवाह के इलाक़े के लिए बोझ महसूस हुआ। पहले उन्होंने पूरे इलाक़े का सर्वे किया। मालूम हुआ कि अकसर गाँव में बिरादरी के ख़ानदान जहालत में रह रहे हैं। उन्हें ईसा के नजातबख़्श काम के बारे में इल्म तक नहीं। दुआ करते करते वह सोचने लगे कि काम कहाँ से और किस तरह शुरू करें, क्योंकि सिर्फ़ दौरा करना ही काफ़ी नहीं। आख़िरकार उन्होंने एक जगह मुक़र्रर की जो उनकी जमातों से ज़्यादा दूर नहीं थी और एक निहायत अहम फ़ैसला किया। यह कि हम टीम की

सूरत में उस जगह पर ख़िदमत करेंगे। पहले हम बच्चों में ख़िदमत करेंगे। यों बच्चों में रूहानी तरबियत शुरू हुई। उनके कुछ दोस्त भी उनके साथ ख़िदमत करने लगे। होते होते बच्चों में से बहुत-से ईमान लाकर ख़िदमत में हिस्सा लेने लगे। इस वक़्त 50 से ज़ायद ख़िदमतगुज़ार इस ख़िदमत से पैदा हुए हैं। कई जगहों पर बड़ों के लिए इबादत भी शुरू हुई है।

मगर याद रखना कि यह एक रूहानी जंग है।

> हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इख़्तियारवालों के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और आसमानी दुनिया की शैतानी क़ुव्वतों के साथ है। (इफ़िसियों 6:12)

ईसा मसीह ने फ़रमाया कि हम सुलह की ख़ुशख़बरी सुनाएँ न कि तलवार का पैग़ाम दें। और यक़ीन करें कि यह जंग हर दुनियावी जंग से ज़्यादा मुश्किल है, क्योंकि शैतानी इलाक़े न सिर्फ़ हमारे इर्दगिर्द बल्कि हमारे अंदर भी हैं। हमारी पुरानी इनसानियत बार बार अपना मकरूह सर उठाती है, लिहाज़ा इस पर बार बार फ़तह पाने की ज़रूरत है।

7

ख़ुलासा

हमने जमात के राहनुमा की ख़ूबियाँ समझने के लिए छः नमूनों का मुतालआ किया है—किसान, ठेकेदार, मैनेजर, चरवाहा, जज और फ़ौजी अफ़सर का। हर एक नमूने से जमात के राहनुमा की ख़िदमत के मुख़्तलिफ़ पहलू उभरते हैं। कुच्छ बातें तो हर नमूने में पाइ जाती हैं। आख़िर में हम इन मजमुई अनासिर पर ग़ौर करेंगे।

हुकूमत करने का फ़ुक़दान

सब बहन-भाई बराबर हैं इसलिए लाज़िम है कि हम किसी को भी अपना राज जताने का मौक़ा न दें। जब जमात में कोई बड़ा बने तो यह बात मसीह की ख़ुशख़बरी से मुतसादम है और इसका पूरी जमात पर बुरा असर पड़ेगा।

टीम की सूरत में ख़िदमत

हर नमूने के मुताबिक़ ख़िदमतगुज़ार टीम की सूरत में काम करते हैं।

इंतज़ाम चलाने की महारत

कामयाब राहनुमा जमात का बंदोबस्त महारत से चला सकते हैं। वह पैसे सँभाल सकते और लोगों को चला सकते हैं। चलाने का मतलब लोगों पर हुकूमत करना नहीं बल्कि उन्हें हलीमी से ख़िदमत के लिए उभारना है।

ख़िदमतगुज़ारों को चुनकर उन्हें ट्रेनिंग देना

राहनुमाओं के अंदर यह सवाल रहता है कि मेंबरान में से कौन-से अफ़राद ख़िदमत करने के लायक़ हैं? ऐसे लोगों को वह चुनकर तरबियत देते हैं। वह उन्हें न सिर्फ़ तालीम देते बल्कि ख़िदमत करने के मौक़े फ़राहम करते हैं।

मनसूबाबंदी के तहत काम करना

कामयाब राहनुमा अंधा-धुंद ख़िदमत नहीं करते बल्कि लगातार हालात को परखते और मनसूबाबंदी करते रहते हैं। अगर कोई मनसूबा कामयाब हो ताहम वह मुतमइन नहीं रहते बल्कि आगे सोचते और मज़ीद मनसूबे बनाते रहते हैं।

जमात में सेहतमंद ताल्लुक़ात पर ज़ोर

जमात के राहनुमा इस फ़िकर में रहते हैं कि मेंबरान के आपस में ताल्लुक़ात बहाल रहें।

अपनी ख़िदमत का फल देखने की आरज़ू

वह पैसे कमाने के ख़याल में नहीं रहते बल्कि यह आरज़ू रखते हैं कि उनकी ख़िदमत से जमात में फल नज़र आए, कि लोग रूहानी तौर पर तरक़्क़ी करें और नई जमातें क़ायम हों।